हिन्दी मासिक ओ३म्

जनज्ञान

एक प्रति मूल्य 12/-

मार्च २०१० वर्ष:४५ अंक:११ फाल्गुन–चैत्र २०६७

महात्मा वेदभिक्षुः

जन्मदिवस 14 मार्च

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान!

कम से कम एक और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान मासिक' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमे से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से संबद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियां जनज्ञान की विशेषता है।

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के तर्कसंगत पृष्ठपोषण का।
- यह अभियान है सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का।
- यह अभियान है अपने बिछुड़े बंधुओं को पुनः साथ लाने का।
- यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- यह अभियान है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्घोष को गुंजाने का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्वबंधुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाइये।
- अपने मित्रों, परिजनों मे कम से कम एक और जनज्ञान का सदस्य बनाइए।
- यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुंचे जनज्ञान।
- सामग्री प्रकाशन मे आपके सुझाव का होगा स्वागत। क्योंकि आप हमारे परिजन है, नहीं है अभ्यागत।

वार्षिक शुल्क ११०/- रुपये है।

–सम्पादक

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

1. जनज्ञान के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें (सदस्य संख्या : जनज्ञान के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।)
2. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भी भेज दिया जाता है।
4. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य बारह रुपये, वार्षिक शुल्क 110 रुपये है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना जवाबी पोस्टकार्ड द्वारा दी जाती है। कृपया पोस्टकार्ड पर उत्तर अवश्य दें।
6. आगामी वर्ष के लिए शुल्क मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा दिल्ली के किसी भी बैंक के चैक द्वारा भेज सकते हैं। शुल्क प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी.पी. द्वारा भेजा जाता है।
7. **वी.पी. में पच्चीस रुपये डाक व्यय अतिरिक्त लगता है जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्था को होता है।** अतः कृपया सूचना मिलते ही धन तुरन्त मनीआर्डर द्वारा भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।

–सम्पादक

डॉ० राजकुमार जी 418/7 जा०ग० मेरठ
60/=

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद
ऋक् यजु साम अथर्व

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

जनज्ञान प्रकाशन
नई दिल्ली - 5

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

सम्पर्क-स्थल :
२२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग,
नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ४१००४७४१, ९९६८५२३५२०

मुख्यालय :
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
निकट केशवनगर बसस्टैन्ड
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-११००३६
मोबाइल : ९८१०२५७२५४

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक : **पंडिता राकेश रानी**
सह-सम्पादकः **दिव्या आर्य**

वार्षिक शुल्क -११० रु०
एक प्रति - १२ रुपये
विदेश में **वार्षिक शुल्क**-1100 रु.
(हवाई जहाज से) **वार्षिक शुल्क**-2100 रु.

मार्च २०१० वर्ष ४५ अंक ११

सम्पादकीय

दयानन्द के अनुयायी उस महान मनीषी को प्रणाम

यह मार्च मास अनेक प्रेरक स्मृतियों को जगा रहा है। एक मार्च को रंग स्नेह के रंगो का होली त्यौहार है। पाखन्ड खन्डिनी पताका फहाराने वाले देव दयानन्द का पावन जन्म दिवस आर्य जगत मना चुका है तो 24 मार्च को राम नवमी का पुनीत पर्व आ रहा है।

देव दयानन्द ने दासता की ऋन्खलाओं में आबद्ध राष्ट्र में स्वराज्य की स्थापनार्थ सक्रिय होने के स्वातन्त्र भाव को अपनी महान रचना सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से जन-जन में जगाने का महान् अभियान प्रारम्भ किया था तो साथ ही इस महान सत्य का भी सागौरव उच्चारा था कि वेद ही सब सत्य विद्याओं का भन्डार है। विश्व में व्याप्त अज्ञान के अन्धकार को मिटाने और सत्य के अर्थ का पावन प्रकाश फैलाने के लिए उन्होंने वेद के ज्ञान को सकल जगत में प्रचारित-प्रसारित करने का आह्वान् भी किया है।

यह भी एक अद्भुत संयोग है कि देव दयानन्द के उस कर्त्तव्य परायण मनीषी की जन्मतिथि चौदह मार्च है जो सशरीर तो अब हमारे मध्य नहीं है, किन्तु 'दयानन्द संस्थान' और 'जनज्ञान' के रूप में वह जो पादप रोप गया है, वे उसके सत् स्वप्न को पूर्ण करने को संघर्षरत हैं। वह मनीषी आर्य जगत् में महात्मा वेदभिक्षुः (पं० भारतेन्द्र नाथ) के रूप में एक सुपरिचित नाम है। वह उस क्रान्तिकारी पिता (पं० गयाप्रसाद शुक्ल) के कुलदीपक थे, जिसने भारतमाता की पराधीनता की श्रंखलाओं को भस्मीभूत करने के लिए देश में छिड़े क्रान्ति महायज्ञ में एक उद्भट क्रान्तिका की भूमिका निभाते हुए अपनी जीवन समिधा समर्पित की थी। वे एक माता (विद्यावती शारदा) के लाल थे, जिसने देव दयानन्द के आह्वान को हदयंगम कर हिन्दू समाज में सामाजिक क्रान्ति का आह्वान

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी २२८६ आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५ से प्रकाशित एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

कर उसे कुरीतियों के विरुद्ध जागृत किया था। वन्दनीय माता-पिता की सन्तान भारतेन्द्र नाथ ने राष्ट्र जागरण के इस महान अनुष्ठान में योगदान को ही अपनी जीवन विधा बनाया था।

उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से देव दयानन्द के प्रेरक दर्शन के पावन प्रकाश में स्वदेश की समस्याओं को निखारा और परखा तथा इस तथ्य को पहचाना कि सांस्कृतिक चैतन्य हीनता, अपनी संस्कृति के प्रति अनुराग का अभाव ही इस महान राष्ट्र को धुन बनकर ग्रसता जा रहा है। उसी ने इस राष्ट्र के मानस को इतना आक्रान्त किया है कि **'अन्यों का जो कुछ जैसा भी आँख मूंद कर लें अभिनन्दन अपना जो कुछ त्याज्य सभी है, चाहे जितना भव्य पुरातन'** की प्रवृत्ति का स्वर प्रखर होता जा रहा है। यही प्रवृत्ति राष्ट्र जीवन को राज्यक्षमा (तपेदिक) के तुल्य निर्बल और अशक्त बनी रही है कि देव दयानन्द और उनके प्रेरक जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर कर्त्तव्य के समराप्रण में उतरे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, देवता स्वरूप भाई परमानन्द और स्वतन्त्र्य वीर सावरकर का चिन्तर-दर्शन और डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का हिन्दू संगठन सूत्र ही राष्ट्र को व्याधियों से मुक्त करने हेतु अमोघ औषधि है।

अतएव जब महात्मा वेदभिक्षु: पत्रकार के रूप में कर्मक्षेत्र में उतरे तो "आर्य", "आर्य-मित्र", "आर्योदय" आदि दैनिक-साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठों पर उन्होंने बेबाक लेखनी से राष्ट्र-रक्षण के महान सूत्र अंकित किए। विदेशी धन और बल तथा छल का उपयोग जन का धर्म खरीदने के लिए सक्रिय विदेशी प्रचारकों के विरुद्ध उन्होंने अपनी लेखनी और वाणी गुंजाई। साथ ही उन्होंने अरब देशों से प्राप्त धन का उपयोग कर लोगों का ईमान खरीदने की दुरभिसन्धि रचने वालों को भी सीना तानकर चुनौती दी। अन्ततोगत्वा अपने जीवन के अनुभवों से संचित पूंजी का उपयोग उन्होंने 'वेदों का डंका आलम में बजाने' के महर्षि दयानन्द के सुस्वप्न को साकार करने हेतु घर-घर में वेद के पावन ज्ञान, का प्रकाश फैलाने का संकल्प ग्रहण कर 'दयानन्द संस्थान' की स्थापना की और 'जनज्ञान' का प्रारम्भ अपने इस अभियान को गतिमान बनाने हेतु किया। उन्होंने राजनीति को अपनी दिनचर्या नहीं बनाया, किन्तु उसे दिशा प्रदान करने का दायित्व अवश्य ही निभाया। उन्होंने अपने इस विचार का निर्भीकता सहित विभिन्न मंचों से प्रतिपादन किया कि सुदृढ़ और समृद्ध हिन्दू राष्ट्र की सबलता ही मानव हित साधक और जन कल्याण का अमोघ उपाय है तथा वैदिक धर्म ही मानवता का पर्याय है। उनकी मान्यता रही कि सशक्त हिन्दू राष्ट्र ही साम्प्रदायिकता और जातिवाद तथा वर्गवाद के अभिशाप से इस महान देश को तो मुक्त कराएगा ही साथ ही विश्व बंधुत्व और 'वसुधैव कुटुम्बकम' के महान लक्ष्य की सिद्धि का पथ भी प्रशस्त करेगा।

पं० भारतेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षु:) ने अपने जीवन के तृतीय चरण में स्वयं को समग्रमना राष्ट्रदेवता के श्री चरणों में समर्पित करने हेतु स्वामी सर्वानन्द जी से वानप्रस्थ की दीक्षा ली थी और तभी वह महात्मा वेदभिक्षु: कहलाए थे। वह जहाँ एक सिद्धहस्त लेखक और वाणीसिद्ध वक्ता थे, वहीं एक मनीषी-चिन्तक और प्रखर राष्ट्रभक्त भी। ये सभी विशेषताएं उनके व्यक्तित्व में एकाएक हो गयी थीं। उनकी प्रतिभा प्रकारों, बिन्दुओं और किरणों के तुल्य विविध रूपों में प्रकटित हुई थी। सागर के तुल्य गम्भीरता उनका बाह्य रंग-ढंग रही जबकि सुकुमार-सरलता अन्तरंग।

उस साहित्य साधक ने विभिन्न सामाजिक आन्दोलनों में व्यस्त रहते हुए भी अपनी साहित्य साधना को अबोध गति से जारी रखा। इतिहास, दर्शन और वैदिक संस्कृति तथा हिन्दू संगठन पर उन्होंने अपने विचारों से 'जनज्ञान' में सतत लिखा। स्वास्थ्य के गिरते जाने पर भी वह अपने इस साधनापथ पर अविचल रहे। सरस्वती आराधना में सतत तल्लीन रहे। जिस कार्य को हाथ में लिया उसके प्रति पूर्ण एकाग्रता भी उनके जीवन की एक ऐसी अनुकरणीय विशेषता थी, जिसे देखकर लोग आश्चर्य चकित रह जाते थे। किसी भी कार्य में असावधानी और अधूरापन उन्हें स्वीकार्य नहीं था। सिद्धान्तवादिता उनका चारित्रिक आभूषण थी। पद, धन, सम्पदा और प्रतिष्ठा नहीं अपितु सिद्धान्तनिष्ठा को ही वे अपने जीवन की पूंजी बनाए रहे। प्रभु हमें उनके द्वारा प्रदर्शित पथ पर यावत् जीवन चलने की शक्ति प्रदान करें। उनकी पावन स्मृति में शत-शत नमन। □□□

इस अंक में पढ़े

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो)

सम्पादकीय- दयानन्द के अनुयायी.....	१
सामायिक विचार-कामचलाऊ बजट	६
महात्मा वेदभिक्षुः भूली बिसरी यादें	७
आपके-पत्र	१५
विक्रम संवत्सर २००७ का अभिनन्दन-श्री सत्यपाल निश्चिन्त	१७
भाई परमानन्द की १३५वीं जयन्ती-इन्द्रदेव गुलाटी	१८
महात्मा वेदभिक्षुः एक प्रेरणा-प्रद जीवन-डॉ० ज्ञानचन्द्र	१९
अथक साधक वेदभिक्षुः-महंत अवेद्यनाथ	२०
मनुष्य बनने की राह-प्रकाश आर्य	२१
पर्यावरण सन्तुलन : वैदिक अवधारणा....प्रो० आर.एस. मंत्री	२३
वेद की आर्थिक मन्त्रणा.....-देवनारायण भारद्वाज	२५
आओ गले मिलें-नरेश हमिलपुरकर	२९
शत्रुओं पर विजय-महात्मा प्रभुआश्रित	३०
कहां से चले थे-कहां आ गये -आचार्य योगेश शास्त्री	३२
कहां है वे निष्पक्ष, निर्भीक विचारक? -हरिकृष्ण निगम	३३
कुरुराज धृतराष्ट्र (इतिहास पृष्ठ)	३५
शाकाहार अधिक पौष्टिक व गुणकारी	३६
शहद खाओ सेहत बनाओ	३६
अपसंस्कृति का प्रसारक हैं क्रिकेट का खेल-अशोक कौशिक	३८
गोघृत के उपयोग से रोग निवारण-बलिराज सिंह	४०
करूँ मैं दुश्मनी किससे (बाल जगत्)	४१
अद्वैतवाद पर स्वामी रामदेव का कथन...-आनन्द पुरुषार्थी	४२
समाचार-दर्शन	४४

प्रकाशनादि का विवरण फार्म-४

१.	प्रकाशन स्थान	२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५
२.	प्रकाशन अवधि	मासिक
३.	मुद्रक का नाम	राकेशरानी
	क्या भारत का नागरिक है?	हां
	पता	२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५
४.	प्रकाशक का नाम	राकेशरानी
	क्या भारत का नागरिक है?	हां
	पता	२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५
५.	सम्पादक का नाम	राकेशरानी
	क्या भारत का नागरिक है?	हां
	पता	२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार हों।

मैं राकेशनरानी एतद् द्वारा घोषणा करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक-१.३.२०१०

– राकेशरानी, प्रकाशक

मान्यवर बंधु/भगिनी,

देव दयानन्द द्वारा जिस वेद प्रचार अभियान का श्री गणेश किया गया था, उसी को अपने जीवन का लक्ष्य मान कर दयानन्द संस्थान एवं जनज्ञान मासिका के माध्यम से अपने संकल्पवद्ध जीवन की अन्तिम श्वास तक सक्रिय महानमनीषी, चिन्तक, लेखक एवं निर्भीक पत्रकार तथा ओजस्वी वक्ता महात्मा वेदभिक्षुः जी की ८२वीं जयंती (१२ से १४ मार्च तक) वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशव नगर (इब्राहीमपुर) दिल्ली-११००३६ में आयोजित सभी कार्यक्रमों में आप सपरिवार आमंत्रित है।

श्री कृष्ण त्यागी (विधायक) राकेशरानी (अध्यक्ष) मुंशीराम सेठी (स्वागताध्यक्ष)

डॉ० श्याम सिंह शशि (पद्मश्री) डॉ० धर्मवीर (मंत्री) डॉ० सारस्वतमोहन मनीषी (स्वागत मंत्री)

संरक्षक दयानन्द संस्थान सहयोग मण्डल, मन्त्री :–डॉ० गोविन्द वल्लभ जोशी, श्री बलजीत सिंह मान, श्री ब्रह्मपाल सिंह राणा, श्री विजयगुप्त, श्री विजेन्द्र राणा

शुक्रवार (१२ मार्च, २०१०)

यज्ञ : प्रातः ८.०० बजे

उपदेश : ब्र० सुमेधा दर्शनाचार्य

दिनांक १४ मार्च तक प्रतिदिन

यज्ञ – उपदेश की यही व्यवस्था होगी

शनिवार १३ मार्च, २०१०

प्रातः ८ बजे से यज्ञ एवं

११.०० बजे युवा कार्यकर्ता गोष्ठी

अपरान्ह ०२.०० बजे महिला सम्मेलन

रविवार १४ मार्च, २०१०

यज्ञ का समापन : प्रातः ०८.०० बजे

वेद गोष्ठी ९.०० बजे से ११.०० बजे

११.३० बजे से ०२.०० बजे तक जयन्ती समारोह

राष्ट्र धर्म रक्षा संकल्प सम्मेलन

उपरोक्त कार्यक्रमों में आमन्त्रित अतिथि एवं वक्ता

–: सन्यासी वृन्द :–

स्वामी विवेकानन्द (गुरुकुल भोलाझाल), योगी आदित्य नाथ सदस्य लोकसभा, स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी दिव्यानन्द (तपोवन), स्वामी सम्पूर्णानन्द, स्वामी दुग्धाधारी जी

–: आर्य मनीषी :–

डॉ० धर्मपाल (पूर्व कुलपति) डॉ० महेश वेदालंकार, प्रकाश आर्य, डॉ० कृष्णलाल शर्मा, डॉ० कर्णदेव शास्त्री, डॉ० ज्ञान चन्द्र, डॉ० देवशर्मा वेदालंकार, श्री विनय आर्य

–: प्रमुख आर्य नेता :–

महाशय धर्मपाल (एम०डी०एच०), श्री सोमपाल शास्त्री (पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री), रामनाथ सहगल, योगानन्द शास्त्री (अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा) आनन्द चौहान, श्रीमती शकुन्तला आर्य (पूर्व महापौर) प्रो० रासा सिंह रावत (पूर्व सांसद), डॉ० पूर्णसिंह डबास, श्री नरेन्द्रसिंह हुड्डा, श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्त

–: प्रमुख राजनीतिक एवम् सामाजिक नेता :–

रमण जोशी (सांसद), श्री केदारनाथ साहनी (पूर्व राज्यपाल), मा० जी.वी. जी कृष्णामूर्ति (पूर्व निर्वाचन आयुक्त), श्री हरदयाल देवगुण (पूर्व सांसद), वैकुण्ठ लाल शर्मा प्रेम (पूर्व सांसद), मा० श्री कृष्ण त्यागी (विधायक), श्री गौरव खारी (निगम पार्षद)

मान्यवर बंधु/भगिनी,

''दयानन्द संस्थान'' एवं **''जनज्ञान''** परमपिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद और वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लगभग 55 वर्षों से अनुरक्त है। संस्थान और जनज्ञान के साधन सीमित हैं। आप सभी सहयोगियों और शुभेच्छुकों के दर्शन कर अपनी बात सबके समक्ष प्रस्तुत करने हेतु संस्थान अपने संस्थापक और प्रेरणा पुरुष महात्मा वेदभिक्षु: की पावन जयन्ती के अवसर पर महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, वेद-मन्दिर, केशवनगर (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 में त्रिदिवसीय कार्यक्रम 12 से 14 मार्च तक आयोजित कर रहा है।

वेदों को जन-साधारण को सुलभ कराने हेतु हमारे प्रेरणाश्रोत महात्मा वेदभिक्षु: ने **चारों वेदों का हिन्दी भाष्य** प्रकाशित किया था, जिसे संस्थान अब तक लगभग ढाई लाख परिवारों में लागत से भी कम श्रद्धानिधि पर वेदभाष्य तथा अन्य वैदिक साहित्य और धर्मरक्षक साहित्य जन-साधारण को सुलभ करा रहा है। संस्थान द्वारा महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम और वेद मन्दिर गौशाला (दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित) तथा एक धर्मार्थ चिकित्सालय का भी संचालन किया जा रहा है। जिससे समीपस्थ ग्रामों के ग्रामीणजन लाभान्वित हो रहे हैं।

दयानन्द संस्थान द्वारा विभिन्न पर्वों पर यज्ञादि का आयोजन किया जाता है तथा राष्ट्र के समक्ष उपस्थित ज्वलन्त मुद्दों पर भी समय-समय पर समाजों और गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त समीपस्थ ग्रामों में वैदिकधर्म यज्ञ हवन आदि के प्रचार-प्रसार में भी संस्थान संलग्न है।

दयानन्द संस्थान के वार्षिकोत्सव तथा महात्मा वेदभिक्षु: जयन्ती के अवसर पर आयोजित विभिन्न गोष्ठियों और सम्मेलनों में भाग लेने हेतु प्रमुख संन्यासियों, विद्वानों एवं प्रमुख जन नेताओं को आमन्त्रित किया गया है। जयन्ती समारोह में तीन प्रमुख आर्यजनों को **'कर्तव्यनिष्ठ आर्य'** सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। **इन समस्त कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति और श्रद्धानिधि में आपका आर्थिक सहयोग अपेक्षित है।** विश्वास है आप यथाशक्ति आर्थिक सहयोग प्रदान कर हमारे अनुरोध का मान रखेंगे और कार्यक्रमों की सफलता में सहयोगी बन हमें कर्तव्य पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा देंगे तथा वेदप्रचार अभियान को गतिमान करेंगे।

सहयोग राशि **मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट ''दयानन्द संस्थान''** के नाम प्रेषित करें। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक **''दयानन्द संस्थान''** के नाम भेज सकते हैं।

समस्त परविार पर प्रभु कृपा तथा आशीर्वाद सदैव बना रहे।

–राकेशरानी

अध्यक्ष दयानन्द संस्थान

वेद-मन्दिर पहुंचने का मार्ग:–अपने वाहन से, किंग्सवे कैम्प, निरंकारी कॉलोनी, बुराड़ी ग्राम से होते हुए सीधा मार्ग है। **बस से:**–किंग्सवे कैम्प से केशवनगर बस नं०–192, 162, 143, 105 (मुखमेल पुर वाली) से वेद-मन्दिर पहुंचे।

कामचलाऊ बजट

आर्थिक चुनौतियों के इस दौर में किसी भी वित्तमन्त्री के लिए यह मुश्किल है कि यह सभी की उम्मीदों पर खरा उतर सके, लेकिन लगता है कि प्रणब मुखर्जी ने ऐसी ही कोशिश की और उसका ही परिणाम यह रहा कि वह एक कामचलाऊ बजट पेश करने तक सीमित रहे। इस बजट के जरिये भारतीय अर्थव्यवस्था को कोई उल्लेखनीय गति नहीं मिलने जा रही है, क्योंकि इसमें किसी भी क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव के संकेत तक नहीं दिए गए–यहां तक कि अपेक्षित आर्थिक सुधारों की दिशा में भी कदम नहीं बढ़ाए गए। आखिर कब तक बजट के जरिये इस हाथ ले उस हाथ दे वाली कहावत चरितार्थ की जाती रहेगी? अब यह भी स्पष्ट हो रहा है कि यदि किसी बजट के जरिये बुनियादी बदलाव की पहल की जाती है तो अगले बजट में उसकी उपेक्षा कर दी जाती है–ठीक वैसे ही जैसे कभी कुछ मदों में आंवटन बढ़ा दिया जाता है और कुछ में घटा दिया जाता है। कभी इस वर्ग को खुश करने की कोशिश की जाती है और कभी उस वर्ग को। यही कवायद इस बार भी की गई है, लेकिन शायद आधे-अधूरे मन से। यदि ऐसा नहीं होता तो हरि क्रांति के नाम पर महज चार सौ करोड़ रुपये नहीं आवंटित किए जाते। यह समझना मुश्किल है कि हरित क्रांति केवल देश के पूर्वी क्षेत्रों तक ही क्यों सीमित रखी गई? क्या बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा के अलावा देश के अन्य इलाके धन-धान्य से भरपूर हैं? सवाल यह भी है कि चार सौ करोड़ रुपये से क्या होगा? इतनी राशि तो एक राज्य के लिए भी पर्याप्त नहीं है। एक ऐसे समय जब देश खाद्यान्न में कमी के कारण जबरदस्त महगाई से जूझ रहा है तब हरित क्रांति के लिए प्रतीकात्मक और सीमित प्रयास करना चिन्ता का विषय है। इसी तरह रक्षा बजट में मामूली वृद्धि भी समझ से परे है। आम बजट की रूप-रेखा यह बता रही है कि महंगाई पर लगाम लगाने के लिए जैसे प्रयास किए जाने चाहिए थे वैसे नहीं किए गए। नि:सन्देह वर्तमान की चिन्ता की ही जानी चाहिए, लेकिन भविष्य पर ध्यान न देना घातक हो सकता है। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं कि मुद्रास्फीति पर लगाम लगाने के ठोस प्रयास तब भी नहीं किए गए जब उसमें वृद्धि के अच्छे-खासे आसार नजर आ रहे हैं? वित्तमंत्री ने राजकोषीय घाटे पर काबू पाने के प्रयास किए हैं और उम्मीद जताई है कि उसमें कमी आएगी, लेकिन अर्थव्यवस्था शासकों के नेक इरादों की मोहताज नहीं होती। यह आवश्यक नहीं कि स्थितियां वैसा ही आकार लें जैसा सोचा जा रहा है, खासकर यह देखते हुए कि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि है और कृषि अभी भी वर्षा पर निर्भर है। इस पर आश्चर्य नहीं कि वित्तमंत्री ने इन्द्र देवता के मेहरबान रहने की कामना की। इससे खुश नहीं हुआ जा सकता कि कुछ नई-पुरानी योजनाओं में धनराशि बढ़ाई गई है, क्योंकि उस व्यवस्था का निर्माण अभी भी नहीं किया जा सका है जिससे सरकार जो कहे उस पर सही ढंग से अमल भी हो सके। यह बजट राहत देने वाला कम चिन्ता पैदा करने वाला अधिक है, क्योंकि कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जो पहले की ही तरह उपेक्षित नजर आते हैं।

पकड़ से बाहर तस्कर

सीमा पार से पंजाब में हो रही मादक पदार्थों की तस्करी को पूरी तरह रोक पाने में न तो पंजाब सरकार की खुफिया एजेंसियां सफल हो पा रही हैं और न ही केन्द्रीय एजेंसियां। सीमा सुरक्षा बल अक्सर सीमा पार से आने वाली खेप को पकड़ लेता है, किन्तु तस्करों को दबोचने में वह भी प्राय: विफल ही रहता है। गत दिवस भी सीमा सुरक्षा बल ने सीमा पार से फेंकी गई 75 करोड़ रुपये की हेरोइन बरामद की, किन्तु किसी भी तस्कर को पकड़ा नहीं जा सका। इसे तस्करों का दुस्साहस ही कहा जाएगा कि उन्होंने सीमा सुरक्षा बल के जवानों के साथ मुठभेड़ भी की और उन पर फायरिंग की। यह तथ्य पहले भी सामने आ चुका है कि सीमा पार से होने वाली तस्करी का माल भले ही देश के अन्य किसी क्षेत्र में पहुंचाया जाता हो पर उसका माध्यम स्थानीय लोग ही होते हैं। इसका अर्थ यह है कि पड़ोसी देश पाकिस्तान में बैठे अन्तराष्ट्रीय स्तर के तस्करों से यहां के तस्करों के सीधे तार जुड़े हुए हैं। यह हैरानी वाली बात है कि इतना सब कुछ स्पष्ट हो जाने के बाद भी खुफिया एजेंसियां इन लोगों तक नहीं पहुंच पाती हैं। पंजाब कुछ वर्षों से मादक पदार्थों की तस्करी के बड़े केन्द्र के रूप में उभर रहा है। यहां से देश के अन्य भागों विदेश में भी मादक द्रव्यों की तस्करी हो रही है। कई विदेशी भी तस्करी के आरोप में पंजाब में पकड़े जा चुके हैं। गत वर्ष भी कई अरब रुपये की हेरोइन पंजाब में पकड़ी गई थी। गत दिवस पकड़ी गई हेरोइन की खेप इस वर्ष की पहली बड़ी खेप है। जब हेराइन जैसे घातक मादक पदार्थ प्रदेश में पहुंच रहे हैं तो उनका कुछ न कुछ प्रयोग भी यहां हो ही रहा है। यही कारण है कि पंजाब के गांवों तक में हेरोइन के नशेड़ी मौजूद हैं। यह पंजाब और देश के लिए अत्यन्त घातक स्थिति है। यह एक प्रकार का आतंकवाद है जो देश की अर्थव्यवस्था से लेकर युवा पीढ़ी तक को बर्बाद कर रहा है। सरकार और खुफिया एजेंसियों को इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए तथा इसके विरुद्ध सघन अभियान चला कर राज्य में मोजूद अंतराष्ट्रीय स्तर के तस्करों पर शिंकजा कसना चाहिए। □□□

(२७ फरवरी, २०१० जागरण से साभार)

महात्मा वेदभिक्षु की अमर वाणी

—: भूली बिसरी यादें :—

वह जीवन का आरम्भ था। 23 जुलाई 1950 को विवाह हुआ। अपने ग्रामीण अंचल उन्नाव जिले के बीघापुर ग्राम में कार्यक्षेत्र बनाया, किन्तु दिसम्बर 1950 में ही देवीजी (राकेशरानी) के रुग्ण हो जाने से उस क्षेत्र से बाहर ही कार्य करना सोचना पड़ा। हमारी समस्या का ज्ञान जब बम्बई के हमारे एक हितैषी को हुआ तो उन्होंने गुजरात शासन के प्रचार विभाग में सह सम्पादक के रूप में 250/- रुपये मासिक पर नियुक्ति का पत्र भिजवाया, किन्तु मेरी माता जी (विद्यावती शारदा) के आदेशानुसार मेरा संकल्प था धर्म की सेवा का, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेदप्रचार अधिष्ठाता उस समय पं0 यशपाल जी सिद्धान्तालंकार थे। वे गुरुकुल केसमय से ही मेरी भावनाओं से परिचित थे, जब मैंने उन्हें पत्र लिखा तो उन्होंने मुझे प्रेमपूर्वक बहुत समझाया और उपदेशक बनने के स्थान पर बम्बई जाकर ही कार्य करने का परामर्श दिया। किन्तु मेरे आग्रह पर उन्होंने 60/-रुपये मासिक की नियुक्ति उपदेशक के रूप में कर दी और मैं 250/- रुपये छोड़ केवल 60/- रुपये पर आर्यसमाज की सेवा में जुट पड़ा।

मेरा पहली कथा का कार्यक्रम आर्यसमाज कच्चा बाजार अम्बाला का बना। मैं वहां पहुंचा तो रात्रि को समाज में केवल 4 श्रोता थे। मुझे मानसिक क्लेश हुआ.....क्योंकि इससे पहले राजनैतिक जीवन में छोटे-से-छोटे ग्राम में भी 400-500 की उपस्थिति साधारण बात थी। मेरे मन पर पहला प्रभाव यह पड़ा कि मैं नया हूं इसलिए मेरी कथा में कोई उपस्थिति नहीं हो रही। एक अन्य आर्यसमाज में पंडित शान्तिप्रकाश जी का कथा चल रही थी। वह बड़ा समाज समझा जाता था। मैंने पांचवें दिन अपना कार्यक्रम जल्दी स्थगित कर सभी श्रोताओं से क्षमा मांगी और पंडित शान्तिप्रकाश जी के कार्यक्रम में चल पड़ा। उस दिन मेरी कथा में 23 की उपस्थिति हो चुकी थी। मेरा विश्वास था कि पंडित जी तो बहुत प्रसिद्ध पुराने

—: चिन्तन-मनन की झांकी :—

महात्मा वेदभिक्षु : वाणी के धनी थे, धन की दृष्टि से तो उनके जीवन में यह पौराणिक मान्यता ही साकार हुई थी कि "सरस्वती (विद्या) के साथ लक्ष्मी (धन) का सहवास नहीं होता।" धनवर्षण की स्थिति के दर्शन तो उनके जीवन में नहीं हो पाए, किन्तु चिन्तन-मनन-वेदाध्ययन की पूंजी से वह समृद्ध रहे। वेद के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने हिन्दू जन के समक्ष झोली निश्चय पसारी-किन्तु जो कुछ आया उसे अपने व्यक्तित्व सुख हेतु उपयोग में नहीं लगाया अपितु उस राशि को वेद-प्रचार की पावन गंगा में ही प्रसार कर आत्मिक सुख पाया।

वेद का निर्देश "दो हाथों से अर्जित कर, सहस्र हाथों से समर्पित कर" इसी को अपनी व्यवहार-विधा बनाकर उन्होंने अपनी चिन्तन-मनन अर्जित पूंजी को "जनज्ञान" के माध्यम से सहस्र हाथ कोटि-कोटि जन तक पहुंचाया। उनकीं चिन्तन-पूंजी के कण-"मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ" के माध्यम से देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु, जिज्ञासु और समालोचक व आलोचक जन को भी मिले। प्रस्तुत हैं उनके गहन मनन के परिचायक उनके कुछ विचार-सुमन!

महारथी हैं, वहां तो हजारों व्यक्ति होंगे किन्तु,जब हम वहां पहुंचे तो केवल 6 श्रोता थे। आश्चर्य भी हुआ और खेद भी कि यह क्या हो गया। अम्बाला आर्यसमाज का गढ़ और उपसिति 6-7-101 है किसी तरह 8 दिन बीते, मन को एक धक्का अवश्य लगा, किन्तु मन निराश न होकर स्थिति बदलने पर विचार करता रहा।

अगला कार्यक्रम हमें रामांमंडी का मिला। श्री बलराज जी भजनोपदेशक मेरे साथ थे। वहां पहुंचने पर समाज ने प्रचार कराने से ही इन्कार कर दिया। हमने पं0 यशपाल जी को तार द्वारा स्थिति बतायी तो उन्होंने प्रचार अपने बल पर ही करने का आग्रह किया। हमने वहां रुककर स्वयं मनादी करा कर 8 दिन प्रचार किया। बाद में समाज के प्रधान महाशय निहालचन्द्र जी व श्री ओमप्रकाश जी के साथ हमारे अच्छे सम्बन्ध बन गए और आज तक 28 वर्ष बीतने पर भी बने हुए हैं।

वहां से भटिण्डा-भटिण्डा से संगरूर का कार्यक्रम बना। एक माह से मस्तिष्क उलझ रहा था, कुछ करने को मन मचल रहा था। उस समय मेरी आयु लगभग 22 वर्ष ही थी। संगरूर पहुंचने पर ताला मिला। तोड़कर अन्दर गये। प्रात: यज्ञ हुआ तो वही 3-4 व्यक्ति। रात्रि को कथा में वही हाल। मैंने उस दिन कथा नहीं की अपितु समाज के अधिकारियों से वार्ता की, वे बहुत ही सज्जन थे। उन्होंने कहा कि आप जैसा कहेंगे वैसा करेंगे, प्रचार के लिए पूरा सहयोग देंगे। प्रात: यज्ञ, दिन में पारिवारिक सत्संग और रात्रि को 200-300 की उपस्थिति थी। धीरे-धीरे तीनों कार्यक्रमों में उपस्थिति बढ़ती गयी और अन्तिम दिन तो पूरे मैदान में बैठने को भी स्थान नहीं था। प्रथम बार मुझे लगा कि दोष जनता का नहीं हमारा है। जनता चाहती है पर हम किसी को कुछ बताना ही नहीं चाहते। मुझे स्मरण है कि उस समय श्री निरंजननाथ जी वहां के अधिकारी थे।

इस तरह संगरूर के बाद नाभा-पटियाला के कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली रहे। 2-3माह बीतने के बाद ही मुझे पं0 यशपाल जी ने ''आर्य साप्ताहिक'' का सह संपादक बना दिया और मैं 4-5 माह उपदेशक रहकर अपने मनोवांछित कार्य को करने लगा। स्थाई रूप से निवास का प्रबन्ध भी अम्बाला छावनी में हो गया और जिस आर्यसमाज कच्चा बाजार में मैं पहली बार कथा करने आया था, उसी में मेरी अनुपस्थिति में सर्वसम्मति से आर्य बन्धुओं ने मुझे समाज का प्रधान बना दिया।

''आर्य'' का सम्पादन करते हुए मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री और हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक पं0 भीमसेन विद्यालंकार के अत्यन्त निकट रहने-बैठने का अवसर मिला। वे सभा के मंत्री भी थे और ''आर्य'' भी उन्हीं के प्रेस में छपता था। ऐसा सत्यप्रिय, उदार और छल-कपट से दूर, सिद्धान्तों पर अडिग व्यक्ति मैंने आर्यसमाज में दूसरा नहीं देखा। अपने 30 वर्ष के कार्यकाल में जिन 4 महानुभावों का मैं हृदय से प्रशंसक रहा उनमें पहला नाम पं0 भीमसेन जी का ही है। वे क्या थे, यह लिखना स्वयं एक निबन्ध का विषय है, पर उन जैसा दूसरा कोई और नहीं देखा, इतना ही कहकर मैं उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

एक सुखद अनुभव:-अगले वर्ष का वेद प्रचार सप्ताह आ गया। सौभाग्य से एक समाज का प्रधान मैं था और दूसरी समाज के मंत्री थे डॉ0 हरिप्रकाश जी। हम दोनों एक ही मकान में किराएदार थे। सम्बन्ध घर जैसे बन गए थे। एक दिन दोनों ने निश्चय कर लिया कि इस बार वेद प्रचार सप्ताह अनाज मंडी में मनाएंगे। अनाज मंडी वह स्थान था जहां बड़ी राजनैतिक सभाएं होती थीं।

हमारे इस निश्चय की सूचना जब पुराने आर्यों को लगी तो वे घबरा गये। घर पर आकर हमें समझाया, पागल बताया, जो भी विरोध वे कर सकते थे किया। उनका कहना था कि आर्यसमाज के कार्यक्रम में उपस्थिति नहीं होगी। पर हम अपनी जगह दृढ़ थे। प्रबल विरोध के बाद भी हम आर्यसमाज को अग्निपरीक्षा में डालने का निश्चय कर चुके थे। सूचना प्रसारित हुई और नगर में शोर मच गया। अनाज मंडी में आर्यसमाज की कथा। आश्चर्य! श्रावणी का दिन आया, हमने उस दिन पूज्यपाद श्रद्धेय स्वामी आत्मानन्द जी (जगाधरी) का भाषण ''ईश्वर से कैसे मिलें'' विषय पर रखा था। सुबह ही हमने तांगे पर लाउडस्पीकर बंधवाया। नगर के 4-5 प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बिठाया। उनसे कहा कि बोलूंगा मैं पर मनादी में आप साथ बैठें। 2-3 के नाम तो मुझे अब भी स्मरण हैं। पं0 भीमसेन जी, डॉ0 डी0 एम0

चौधरी, डॉ0 हरिप्रकाश। हमने शाम के 7 बजे तक पूरे 12 घंटे नगर में गली-गली घूमकर मनादी की। मनादी में ईश्वर कैसा है, कैसे मिलेगा की विशेष चर्चा की और अधिक जानने के लिए अनाज मंडी पहुंचने का निमंत्रण दिया। 8 बजे वेदी पर हम अपना परिणाम जानने के लिए बैठे थे। इस पार या उस पार का निर्णय होना था। आर्यसमाज के सिद्धान्तों की और तात्कालिक कार्य प्रणाली में से किसकी जीत होती है.....इसका भाग्य आज लिखा जाना था। 8-9 बजे तक भजन होती रही। ठीक 9 बजे जब स्वामी आत्मानन्दजी के उपदेश की घोषणा की गयी तो उस समय इतनी भीड़ थी जितनी आज तक किसी राजैनैतिक सभा में भी न हुई थी। (नेहरू जी की सभा अपवाद थी)। सभी आर्य बन्धु प्रसन्न थे। श्रोता अमृत वाणी सुनकर मुग्ध और हम अपनी सफलता पर आश्चर्य करते हुए सोच रहे थे कि यह विजय वस्तुत: दयानन्द की विजय है।

हमारी निष्क्रियता ने दयानन्द को पीछे डाल दिया अन्यथा सारी धरती उसके चरणों की पुजारी होती। न गुरुडम होते, न पाकिस्तान बनता, यदि हमने जागरण का शंखनाद समवेत स्वरों में किया होता। फिर तो 8 दिन तक जो धर्म प्रचार वहां हुआ, उसकी कल्पना भी बिना देखे करनी सम्भव नहीं। इस प्रकार अम्बाला छावनी में हमने एक वेद प्रचार सप्ताह वह देखा जिसमें 20-25 से अधिक व्यक्ति नहीं आए और अगले ही वर्ष एक वेद प्रचार सप्ताह ऐसा देखा जिसमें उपस्थिति हजारों में थी। इस तरह जीवन के प्रथम चरण में वैदिक सिद्धान्त और मान्यताओं पर मेरा विश्वास और भी गहरा हो गया।

आत्म निवेदन

तूफान, बाधाएं, संकट और अपमानों के मैंने सदा पुष्पहार समझकर स्वागत किया है। यश की इच्छा मैंने स्वप्न में भी नहीं की। समय के साथ बहना भी मुझे नहीं भाया। मैंने जो कुछ सच समझा है उसे अपनाया है और सदा साथ रही है मेरे अपने मान्य श्री भगवत्प्रसाद शुक्ल 'सनातन' की यह पंक्तियां-

बाधाएं आएं आने दो, दानवीय होने दो वार!
छाती खोल बढ़ो तुम आगे, सहने को ये सभी प्रहार।

जब से होश संभाला, तभी से संकटों के साए में झूले झूलना मुझे अच्छा लगा। मृत्यु का स्वाग तो अनेक बार इस उल्लास से किया है कि वह शरमा कर दूर भाग गयी। मेरे पास भौतिक दृष्टि से कोई सम्पदा आज नहीं है। पर अपने माता-पिता की स्मृति और विरासत मेरी वह पूंजी है जिसके सम्बल से मैंने अपने को कभी निर्बल नहीं समझा। मेरे पिता स्व0 पं0 गयाप्रसाद शुक्ल सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। उनकी गाथा तो फिर कभी उनके कागजों के साथ लिखूंगा। उनका स्मरण तो मुझे नहीं किन्तु जो कुछ सुना, समझा और जाना है उसके आधार पर कह सकता हूं कि शक्तिशालिनी ब्रिटिश सरकार उनके नाम से कांपती थी। उनकी शवयात्रा आरम्भ होने तक भी चार सी0आई0डी0 इन्स्पेक्टर उनकी सेवा में रहते थे। जिस दिन विवाह हुआ था उसी दिन रात्रि में वे गिरफ्तार हो गए थे और 36 घंटे तक पुलिस के निर्मम प्रहारों के बाद भी चार वर्ष वे जीवित रहे।

मुझे अपनी स्वर्गीय माता का आशीर्वाद भी 17 वर्ष की आयु तक ही प्राप्त हो सका। किन्तु इन 18 वर्षों में उनके जीवन की प्रेरणा से मैं इतनी शक्ति प्राप्त कर सकता हूँ कि जन्म-जनमान्तरों में भी वह क्षीण होने वाली नहीं। घर में मैं और मेरी बहन वसुन्धरा ही थे। मैं घर का इकलौता लड़का था। मेरी मां, जो विवाह के चार वर्ष बाद ही विधवा हो गई हो उसने तनिक भी मोह में न पड़ मुझे 4 वर्ष की आयु में ही गुरुकुल भेजने का मन बना लिया था। सन् 1942 में जब वे किसी तरह बम्बई से घर लौटीं तब उनके पहले शब्द थे कि तू अभी तक जिन्दा क्यों है? क्यों नहीं कुछ करता या मरता। और जब 1946 में मैं गुरुकुल में समावर्तन संस्कार में भाग ले रहा था तब सहस्रों जनसमुदाय के समक्ष उन्होंने मुझसे भिक्षा मांगी थी कि **"बेटा जीवन में कभी कोई काम धनोपार्जन की दृष्टि से न करना। अपना सारा जीवन देश-धर्म को भेंट चढ़ाना।" उनके ये शब्द थे और मैं था, आज तक मैंने कुछ भी किया हो पर इन शब्दों का उल्लंघन नहीं किया।** 1950 में विवाह के पश्चात् राज्य के 250/-रुपये मासिक के नियुक्ति पत्र को छोड़कर मैंने 60/-रुपये में सभा का उपदेशक बनना स्वीकार किया था। 1952 से आज 1974 तक की कहानी मेरे जीवन के अनवरत संघर्षों की कहानी है। इसमें मैंने जो कुछ देखा है, समझा है जाना है वह तो

बृहद् ग्रन्थ का विषय है। हां, अभी इतना ही कह सकता हूं, कि इस लम्बे काल में मुझे आर्य जनता का अपार स्नेह प्राप्त हुआ है। जिस कार्य में भी मैंने हाथ डाला, आशातीत सफलता मिली। ऋषि दयानन्द के प्रति आर्य जनता की श्रद्धा, आस्था अपूर्व है। यही आर्यसमाज की शक्ति है।

गत 24 वर्ष के गृहस्थ जीवन में मैंने अपने या अपने परिवार के लिए कुछ भी नहीं किया। इसे आप कुछ भी समझ सकते हैं किन्तु यह सच है कि मेरे पास अपना कहने के लिए न एक मकान है, न जमीन का कोई टुकड़ा है। न किसी भी बैंक में 100/- रुपये हैं, न घर में कोई पूंजी, न जेवर। मैं त्यागी, तपस्वी होने का ढोंग नहीं करता, न दिखावे के लिए कभी कोई काम किया है। बस जो कुछ भी है सब कुछ स्पष्ट है। आपके सामने है। आर्यसमाज के बड़े संगठनों में 20 वर्ष लगाए। पार्टीबाजी, फूट और झगड़ों की राजनीति ने हमारे कार्य की सफलता को असफलता में वदला और जो कार्य किए वे भी धूमिल होते गए। परिणामस्वरूप श्रद्धेय महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद और उन्हीं के दिए 100/- रुपये की पूंजी से ''जनज्ञान'' का जन्म हुआ जो बाद में 'दयानन्द संसीान' के उदय का कारण बना। 1967 के मई मास में जनज्ञान और 1971 की दीपावली पर दयानन्द संस्थान का उदय हुआ। पिछले ढाई वर्ष में संस्थान ने जो कुछ किया उसे वताने की आवश्यकता नहीं। वह अपनी कहानी आप कह रहा है। मेरा सब कुछ संस्थान को अर्पित है। संस्थान को विधिवत् रजिस्टर्ड ट्रस्ट का रूप दे दिया गया है। ट्रस्ट को देश के चुने हुए आर्य विद्वानों का संरक्षण प्राप्त है। संस्थान के कार्यों पर सम्पूर्ण ऋषिभक्त गौरव कर सकते हैं। मेरी कोई महत्वाकांक्षा नहीं है। किसी भी पद के प्रति मुझे कोई आकर्षण नहीं है। मेरी केवल एक इच्छा है कि–''संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक वेद की विचारधारा पहुंचा सकूं और दुनिया के हर आदमी कासिर ऋषि दयानन्द के चरणों में झुका सकूं।'' मेरे जीवन में मेरी इच्छा पूर्ण हो या न हो पर मुझे विश्वास है कि दयानन्द संस्थान के रूप में जो पौधा मैंने लगाया है उसके द्वारा सही दिशा में कार्य होता रहेगा और आज या कल, शीघ्र ही वह समय आएगा जब धरती के सारे लोग वैदिक धर्म की राह पर चलेंगे। दयानंद संस्थान के कामों की सराहना देश-विदेश की जनता कर रही है। किन्तु कुछ शीर्षस्थ तथाकथित नेतागण हमसे नाराज हैं–इसलिए कि 1. हमने वेद भाष्य क्यों छापा और वेदका इतना प्रचार क्यों किया? 2. कर्णधार नेताओं के कामों और उनकी नीतियों की आलोचना हम क्यों करते हैं? 3. सारा वैदिक साहित्य संस्थान इतना सस्ता क्यों दे रहा है?

मैं नहीं जानता कि उनकी यह नाराजगी क्यों है क्योंकि मैं किसी को भी नाराज नहीं करना चाहता। किसी भी पार्टीबाजी और झगड़े में पड़ना नहीं चाहता इसलिए मैंने 11.2.1974 आर्यसमाज की आरम्भिक सदस्यता से भी त्यागपत्र दे दिया है। मैं यह स्पष्ट कर दूं कि जिस ढंग से आज का आर्यसमाज चल रहा है, उसे मैं ठीक नहीं समझता। मेरी भक्ति ऋषि दयानन्द के प्रति है, वैदिक सिद्धान्तों के प्रति है किन्तु उन व्यक्तियों को नेता मानने को मैं तैयार नहीं हूं जो ऋषि का नाम लेते हैं पर ऋषि का काम करने को तैयार नहीं, ये लोग षड्यन्त्र में लगे हैं कि–

1. मुझे पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए। 2. मेरी आवाज को दबा दिया जाए। 3. दयानन्द संस्थान को समाप्त कर दिया जाए। उनका द्वेषभाव मेरे प्राण तक लेने के उपाय सोच रहा है और अपनी बुद्धि के अनुसार वे कुछ भी कर सकते हैं। पर मेरे मन में उनके प्रति भी कोई द्वेष नहीं है। परमात्मा से मैं सभी की सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना करता हूँ और करता रहूँगा। मैं जिस राह पर चल रहा हूँ, उस पर अडिग चलता रहूँगा। प्राण दे दूँगा पर हटूँगा नहीं। मेरे सामने गुरुदेव दयानन्द का आदर्श है, कौन सा आरोप था जो ऋषि पर नहीं लगाया गया, कौन सा प्रहार था जो गुरुदेव पर नहीं हुआ। सत्य कहने के लिए अपने या पराए जो भी जो प्रहार करेंगे, मैं मुस्कराकर उसे सहूँगा। हमारा काम आपके सामने है। उसमें त्रुटियां बताइये, सिर झुकाकर स्वीकार करूंगा। हमारी नीतियाँ आपके सामने हैं, उनमें सुधार के लिए सदा तत्पर हूँ। पर यदि कोई देश-विदेश में वेद प्रचार से रोकना चाहेगा, इसके लिए ध मकियाँ देगा तो मरना स्वीकार, राह नहीं बदलूँगा।

जो ऋषि दयानन्द के भक्त हैं, वे मेरे लिए सदा सम्मान के पात्र हैं, जो ऋषि का काम कर रहे हैं, उनके लिए मस्तक सदा झुका है। पर जो धन-शक्ति के

अभिमान में मुझे मेरी राह से हटाना चाहते हैं, वे यह भली-भाँति समझ लें कि अभी धरती पर वह शक्ति उत्पन्न नहीं हुई जो मुझे भयभीत कर सके, डिगा सके।

–ईश्वर-विश्वास मेरी शक्ति है।

–आत्मविश्वास मेरी पूंजी है।

–मां की आज्ञा मेरी प्रेरणा है।

–जनता का प्यार मेरा सहारा है।

आशीर्वाद सभी से मांगता हूँ कि राह भटकूँ नहीं। दयानन्द के गीत गाता रहूँ, वेद-वाणी गुंजाता रहूँ और बढ़ता रहूँ **ओ३म्** पताका लेकर। जीवन की इच्छा भी नहीं, मरने से भी डर नहीं, चलने के लिए प्रति क्षण तैयार हूँ जब तक जीवित हूँ यही करता रहूँगा, आशीर्वाद दीजिए कि कभी राह बदलूँ नहीं।

ऋषि भक्तों की शुभकामनाओं का इच्छुक!

जन्मदिवस पर : आत्म निरीक्षण

संघर्ष और कार्य के चक्कर में एक वर्ष कितना शीघ्र बीत जाता है, पता भी नहीं चलता।

एक-एक दिन जीवन की अवधि में कटौती कर रहा है। मृत्यु की मंजिल समीप आती जाती है और हम एक और जन्म दिन मनाकर प्रसन्न हो लेते हैं।

पता नहीं किस घड़ी जन्म हुआ था कि.....जीवन एक समस्या ही बना रहा है। एक ओर सफलता मिली है कि भाग्य पर गर्व होता है। दूसरी ओर एक विडम्बना यह रही है कि जिनके लिए दिन-रात संघर्ष करता रहा उन्होंने कभी प्यार नहीं दिया। कभी एकान्त के क्षणों में सोचता हूँ कि क्या मिल रहा है इस जीवन में! गालियां, अपमान, दुत्कार और फटकार अपनों की। कभी स्पप्न में भी किसी का अहित नहीं सोचा! कभी बड़े से बड़े प्रलोभन में भी पथ से नहीं भटका, फिर भी क्यों सब कुछ उलटा ही समझा गया। प्रश्न का उत्तर मन दे देता है और गालियों की बौछार में भी आशा के गीत मन में निर्झर की तरह फूट पड़ते हैं। साधन है नहीं और काम हो जाते हैं। जो सोचता हूँ पूरा हो जाता है। परमात्मा का आशीर्वाद सदा सिर पर अनुभव करता हूँ। लगता है कि वह स्वयं सारे मनोवांछित कार्य पूर्ण कर देता है।

10 अगस्त, 1975 को मुझ पर लकवे का आक्रमण हुआ पर कार्य के बोझ ने एक पल विश्राम न करने दिया। प्रभु कृपा हुई और गाड़ी चलती रही, चल रही है।

शताब्दी वर्ष आगे बढ़ने के लिए निमंत्रण दे रहा था और परिस्थितियाँ कुछ न करने की सलाह दे रही थीं। फिर भी मन प्रबल हुआ और 15 फरवरी 1976 से **जनज्ञान का साप्ताहिक संस्करण** भी आरम्भ कर दिया।

जिस काम के लिए लाखों रुपये चाहियें थे वह काम आज की दृष्टि में बिना पूंजी के आरम्भ करना सबसे बड़ी मूर्खता थी। पर जो करना था कर दिया और परिणाम सौंप दिया प्रभु के हाथ में।

इस वर्ष चारों वेदों का प्रकाशन भी पूर्ण हुआ। एक यह संकल्प भी अधूरा नहीं रहा। जो कुछ भी हमारा काम है एक खुली पुस्तक की तरह सबके सामने है। आंधी तूफान और झंझा में मजबूती से बढ़ते रहने की इच्छा और परमात्मा का आशीर्वाद ही हमारी पूंजी है। और आज भी इस विशाल धरती पर एकाकी चलते हुए जो कुछ भी हो रहा है उसका आधार है–

1. परमात्मा का आशीर्वाद 2. जनता का प्यार।

मुझे केवल एक ही पीड़ा है जो विशाल कार्य फैला दिया है, इसे कौन सम्भालेगा? और आज मेरी आँखें उस व्यक्ति की खोज में भटक रही हैं जो आए और कहे कि मेरा सिर उपस्थित है,इसे काट कर दयानन्द के कार्य हेतु चढ़ा दो, मैं तैयार हूं। पता नहीं जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति आयेगा या नहीं पर यदि मिल जाएगा तो मैं समझूंगा कि मेरी साधना पूर्ण हुई, न मिला तो जैसी प्रभु इच्छा।

बढ़ते जाना ही जीवन है! इसलिय बढ़ना तो होगा ही, साथ देने के लिए कोई आए या न आए.....अब चिन्ता छोड़ रहा हूँ। जो कुछ किया है या कर रहा हूँ किसी पर भी एहसान नहीं है। यह मेरे जीवन का नशा है। यह मेरे रक्त की प्रत्येक बूँद में है। आर्यसमाज के मन्तव्यों का प्रचार और प्रसार करते हुए ही जीवन समाप्त हो जाये, यह मेरी एकमात्र इच्छा है।

दोष मुझ में भी हैं। मैं भी एक साधारण व्यक्ति हूँ। फिर भी अपने दोषों को देख कर उन्हें दूर करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता हूँ। यत्न होता है कि मन निर्मल रहे। द्वेष-वैर-पद-मोह से दूर रहकर गुरुदेव दयानन्द के साधारण शिष्य की तरह यत्न करता हूँ कि मार्ग से भटकूँ नहीं। जनता का प्यार मिलता रहे, प्रभु का वरदहस्त बना रहे।

पथ कभी भूलूं नहीं, माया में उलझूं नहीं।

इसी प्रार्थना के साथ सभी का आशीर्वाद चाहता हूँ। मेरी त्रूटियां बताते रहिए, कार्य जो अच्छे लगें उन्हें बढ़ाते रहिए और.....प्रभु! बस इतना ही मांगूगा कि अपने से कभी दूर न करना।।

तुम क्या सोचते हो?

तुम कौन हो? जो करते हो उससे तुम्हें क्या मिलता है? कितना आनन्द और शान्ति तुम्हें मिली? सोचो और अपना रास्ता बदलो। जिस रास्ते पर चलने से दु:ख न मिले, वह धर्म है। धर्म एक ही हो सकता है और वह न बदलता है, न मिटता है। धर्म में देश, काल, व्यक्ति की सीमाएं नहीं आतीं। धर्म का रास्ता, परमात्मा का बताया रास्ता है, जो उस पर चलता है, परमात्मा का प्यार उसे मिलता है। दुनिया के बनाने के साथ ही परमात्मा ने मनुष्य को धर्म का रास्ता भी बताया, वह रास्ता भूलने से दु:ख पैदा हुए। हमारा आग्रह है कि भूले हुए उस रास्ते को फिर खोजो। खोजने और परखने पर, सच्चाई तुम्हें मिल जाएगी। देखो.....परमात्मा का रास्ता वेद की ऋचाओं में आज भी प्रकाश की किरणें फैलाता, हमें बुला रहा है। उसे देखो.....तुम्हारे सारे दु:ख मिट जाएंगे।

हमारे साथ आओ–समय, काल और देशों की सीमाओं के पार जाकर हम अपने को देखें तो सम्पूर्ण ध रती हमें एक परिवार दिखायी देगी। ऐसा परिवार, जिसमें 300-400 करोड़ मनुष्य रहते हैं। सबकी समस्याएं, आवश्यकताएं और लक्ष्य एक हैं। किन्तु मत-वाद-देश की दीवारों ने हमारे चिन्तन में बाधा उपस्थित कर दी है। हम परिवार की दृष्टि से सोचना भूलकर बंटे हुए ढंग से, छोटे दायरों के ढंग से सोचने लग गए हैं। हमारा जीवन सत्य को भूल चुका है। असत्य को ही सत्य समझ हमें एक ऐसे चक्कर में फंस गए हैं कि दु:ख और कष्ट हमें जीवन के आनन्द से दूर ले जा रहें हैं। हम उस सत्य के प्रसारक हैं जो सभी को मनुष्य बनाता है। जो अपने मन के लिए हमें संसार के सभी मनुष्यों को प्रकाश का सच्चा रास्ता बता रहे हैं। हमारे सबसे कह दो–

जो भी इन पंक्तियों को पढ़ें वह दुनिया के हर आदमी तक यह सन्देश पहुंचा दें कि भारत में फिर एक बार सच्चे ज्ञान की ज्योति उभरी है। ईश्वर का संगीत फिर से एक बार गूंज उठा है। जीवन का अन्धेरा अब दूर होने वाला है। स्वर्ग की कहानियाँ आपने सुनी थीं। अब हम इसी धरा को स्वर्ग बनाएँगे। पाप को मिटाएँगे और ऐसे गीत गाएँगे कि सभी अपने दु:ख भूल जाएँ। एक महापुरुष ऋषि दयानन्द ने हमें परमात्मा की वाणी 'वेद' के ज्ञान से परिचित करा दिया है। वह ज्ञान का समुद्र, धरती को पवित्र कर देगा। हम सब एक सच्चाई के रास्ते पर चलने का सन्देश लेकर निकले हैं। हम इस दुनिया कोनयी दुनिया बनाने चले हैं। आओ! सबसे कह दो, हम अब कहीं अज्ञान का अन्धेरा नहीं रहने देंगे।

हम कौन है? आप पूछ सकते हैं कि हम कौन हैं? हमरा उत्तर होगा कि हम हैं परमात्मा के पुत्र, जो संसार से शैतान की हस्ती मिटाना चाहते हैं। हम दुनिया के प्रत्येक मनुष्य से प्यार करते हैं। हम हर मनुष्य का भला चाहते हैं। कोई हमारा दुश्मन नहीं है। हम सभी को अपना भाई मानते हैं। परमात्मा के सच्चे ज्ञान का प्रकाश धरती पर फैलाना हमारा लक्ष्य है। मनुष्यों को ईश्वर का पुत्र बनाना हमारी इच्छा है। हम वह ज्ञान दे रहे हैं जिसकी छाया में हिंसा, द्वेष, झूठ और युद्ध का जहर सदा के लिए मिट जाएगा। भारत के एक महान् पुरुष स्वामी दयानन्द के हम शिष्य हैं। जिन्होंने मनुष्य मात्र को प्यार करने का, सभी की भलाई में अपनी भलाई समझने का उपदेश दिया है। उसी के शिष्य हम सारी दुनिया में प्यार बांटने निकले हैं। दु:ख मिटाना और आनन्द फैलाना हमारा लक्ष्य है

दिव्य स्वप्नों की खोज:–हमारे पथप्रदर्शक विश्व-वंद्य महर्षि दयानन्द ने कुछ स्वप्न देखे थे, कुछ रेखाचित उनके मस्तिष्क में उभरे थे, उन रेखाचित्र का मूल्यांकन जिस दिन ऋषि के अनुयायी कर लेंगे, उस दिन उनकी पूर्ति होने में भी देर नहीं लगेगी। ऋषि के स्वप्नों का संसार दु:ख-कष्ट, क्लेश आदि से मुक्त संसार है। उसमें जातिगत, वर्गवाद और नीच-ऊंच की विवादास्पद द्वेष लहरों के लिए कोई स्थान नहीं। मनुष्य ईश्वर का पुत्र है। पिता के आदशों का पालन पुत्र का कर्तव्य है। पुत्र पिता का आज्ञाकारी ही होता है और प्रभु ऐसा पिता है जिसका पुत्र अपराध या पाप कर ही नहीं सकता। किन्तु हम ऋषि के अनुयायी पिता परमात्मा से अभी

बहुत दूर हैं। प्रभु से दूर हैं तो सत्य से भी दूर हैं और सत्य से दूर रहने वाला और कुछ भी हो महर्षि दयानन्द का अनुयायी नहीं हो सकता। महात्मा गाँधी के उत्तराधिकारियों ने जैसे गाँधीवाद को समाप्त किया वैसे ही ऋषि के अनुयायियों ने दयानन्द के स्वप्नों को समाप्त कर डाला है। ऋषि दयानन्द की जय का नारा लगाते हुए हमने कभी यह नहीं सोचा कि इसका अर्थ क्या है? ऋषि दयानन्द के शब्दों को प्रमाण-रूप में स्वीकार करते हुए भी हमने सदा उनके आदेशों को ठुकराकर हमने क्या ऋषि के स्वप्नों को ही नहीं ठुकराया? शक्ति पाकर निर्बल पर प्रहार करने की वृत्ति को क्या हम छोड़ सके हैं? ऋषि ने कहा था कि "जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश होकर पर-हानिमात्र करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।"

मन रोता है जब दयानन्द के शब्दों से दूर दयानन्द के अनुयायियों को देखते हैं। ऋषि का लक्ष्य अधूरा पड़ा है किन्तु हमने उनका नाम लेकर मनमानी व्याख्याएं की हैं। हम वह करते हैं जो हम चाहते हैं और वह सब कुछ भुला देते हैं जो ऋषि चाहते थे। विचारों की क्रान्ति का यज्ञ अधूरा पड़ा था। मतवादों की समाप्ति का आन्दोलन चलाने का साहस हम खो चुके हैं। पाखंडों पर प्रहार करने में हमें भय लगने लगा है। जातिवाद की दीवार गिराने के स्थान पर हम उनसे प्यार करने लग गए हैं। रास्ता हम भूल गए, सत्य पर विश्वास नहीं ईश्वर की ज्योति से प्रकाश हम ले नहीं पाए, फिर कैसे बढ़ेंगे और करेंगे दयानन्द का काम! राजनैतिक दांव-पेच धर्म पर अधिकार कर चुका हैं। धर्म पर आस्था लड़खड़ा चुकी है। चुनाव, गद्दियां, भाषण और प्रस्ताव से आगे हमारे पास कोई कार्यक्रम नहीं। काम करने के लिए कोई तैयार नहीं। मरने का साहस हम खो बैठे इसलिए जीने का ढंग भूल गए। हमें तो यह भी समझ नहीं आ रहा है कि किससे कहें कि भाई आओ ऋषि दयानन्द का काम करें। क्योंकि जो हम ठीक समझते हैं उसे ठीक समझने को कोई तैयार नहीं। और हमारा मस्तिष्क औरों के रास्ते को ठीक नहीं समझता। हमारे मन और मस्तिष्क पर ऋषि का जो प्रभाव है उसके प्रकाश से हमारा जो भी चिन्तन है उसमें कोई उलझन हमारे सामने नहीं है। हम चाहते हैं कि ऋषि के सभी अनुयायी एक साथ मिलकर करें-1. वेद का, वेद की विचारधारा का प्रचार। 2. अध्यात्मवाद का, प्रभु से मिलने का मार्ग-दर्शन 3. मतवादों पर प्रबल प्रहार। 4. जातिगत वर्ग-भेदों का समूल नाश। 5. धर्म के उदात्त स्वरूप का संरक्षण। 6. वेद-सत्यार्थप्रकाश और ऋषि जीवन का विभिन्न भाषाओं में प्रसार। 7. अज्ञान-पाखण्ड का प्रबल खण्डन। 8. संगठन, आर्यसमाजें व संस्थाएं करें कार्य संचालन। 9. उपदेशकों की सेना को तैयार करें और दिया जाए उन्हें कार्य सर्वोच्च सम्मान। 10. संसार का प्रत्येक मनुष्य ईश्वर को माने, जाने और उससे मिले। संसार एक हो,एक राह पर चले, एक ढंग से सोचे और अनेकता मिटे।

इन 10 सूत्री कार्यक्रमों को कौन चलाएगा? ऋषि के अनुयायी इस ओर कैसे, क्यों सोचे? उनके पास बहुत बड़े-बड़े काम हैं। बड़े-बड़े लक्ष्य हैं, पर हमारा प्रश्न है कि इस सबके बाद भी ऋषि का काम कौन करेगा? और सब कुछ छोड़कर कौन ऋषि के रेखाचित्रों में रंग भरेगा? पक्षपात का चश्मा आंखों से उतार कर हमारे विचार को पढ़िए और इनमें कहीं भूल हो, भ्रांति हो तो हमें बताइए। हम अपनी भूल सुधारने को तैयार हैं। किन्तु यदि आपको कुछ ठीक लगे तो फिर आइए, दयानन्द को तैयार हैं। किन्तु यदि आपको कुछ ठीक लगे तो फिर आइए, दयानन्द की सेना में भर्ती होकर अपने को ऋषि का सैनिक समझकर काम में कल से ही लग जाइए। लाखों में वार करता है सूरमा अकेला। एक दयानन्द का सैनिक एक-एक क्षेत्र का कायाकल्प कर सकता है। ऐसा सैनिक जो दयानन्द महाराज के लिए अपने जीवन की भेंट चढ़ा सकता हो.....कौन है? खोज रहा हूं।

काम या नारे-देश की उन्नति के लिए आवश्यक है कि सभी अनवरत काम करें। श्रम की साधना ही प्रत्येक क्षेत्र में लक्ष्मी का वरदान बरसा सकती है। किन्तु दुर्भाग्य! सर्वत्र काम के स्थान पर नारों की भरमार है। मजदूर काम के समय में नारे लगाते हैं, विद्यार्थी पढ़ने के स्थान पर नारे दोहराते हैं। मंत्री से प्रधानमंत्री तक नारों से देश को बहकाते हैं। धर्म के प्रतिष्ठानों में भी नारे ही नारे हैं। जो जितना बड़ा नारा जोरों से लगाता है वह उतना ही

बड़ा नेता कहलाता है। नारों की गूंज में काम सब बन्द है। ऐसा लगता है कि नारा ही आज के युग का मन्त्र है। वही जीवन-तन्त्र है। राजनैतिक दल हों या धार्मिक संगठन, मजदूर सभाएं हों या साहित्यिक संसद्, सभी नारों के बल पर चलते हैं, और जब नेतागिरी नारों से मिलती है, तो कोई क्या बेवकूफ है जो काम का सिरदर्द मोल ले। देश, धर्म, लक्ष्य रसातल में जाएं, हमें क्या? सब कुछ स्वाहा हो जाए हमें क्या? हम तो नारे लगायेंगे, लक्छेदार भाषणों से जनता को बहकायेंगे। वह हमारी जय-जयकार करेगी और मरेगी। हम जियेंगे और बढ़ेंगे। हम जिन्दाबाद। फिर और की क्या चिन्ता? काम को ठुकराकर आकाशमहल बन सकते हैं जमीन स्वर्ग नहीं हो सकती। धरती को स्वर्ग बनाने के लिए नारे बेकार हैं, यह तथ्य जिस दिन समझेंगे, जिस दिन काम की पूजा होगी और नारे ठुकराए जायेंगे, जब रचनात्मक कामों का महत्व हमारे मन पर अधिकार जमायेगा तब हमारा भाग्योदय होगा। संसार का कोई देश भाषण या नारों से आगे नहीं बढ़ा। जीवन के लिए, प्रगति के लिए एक ही मार्ग है काम आब बस काम, काम के महत्व को क्या समझेंगे? काम की महिमा को क्या हम जानेंगे? काम की गरिमा कब पहचानेंगे? या नारों की नगरी में ही खोए-खोए हम अपना सभी कुछ खो देंगे?

ईश्वर से मिलना है?

मनुष्य को भौतिक दृष्टि से यदि सब कुछ मिल जाए, तब भी वह सन्तुष्ट नहीं हो पाता। धन-सम्पत्ति और परिवार, सोना-चाँदि, हीरे-मोती का अपार भंडार पाकर भी उसे शान्ति और आनन्द नहीं मिल पाता। इसी कारण विज्ञान और भौतिक उन्नति का चरमोत्कर्ष हो जाने के बाद भी वह शान्ति की खोज में भटक रहा है।

इस भटकने का ही परिणाम है कि जिसे जिधर से तनिक भी आशा की झलक दिखाई पड़ती है, उधर ही वह पागल होकर दौड़ पड़ता है। शरीर तृप्त होकर आत्मा की भूख मिटाने के लिएआकुल है किन्तु मार्ग नहीं मिल पा रहा और अन्धविश्वास पनप रहे हैं।

ज्ञान का आरंभ 'आत्मा' से होता है'। 'मैं' शरीर नहीं हूँ, अपितु शरीर मेरा साधन है 'मैं' कुछ और हूँ। मैं क्या हूँ? इन प्रश्नों का उलझा उत्तर ज्ञान का विषय है। धर्म नाम है उस मार्ग का, जिस पर चलकर आत्मज्ञान प्राप्त होता है।

आधुनिक युग के महान ऋषि दयानन्द सरस्वती ने अपने अगाध ज्ञान भंडार से जो मोती बांटे हैं उनमें सबसे प्रमुख यही मार्गदर्शन है कि 1. मनुष्य इस संसार में रहते हुए और संसार के सभी शुभ कार्मों को करते हुए धर्म पर चल परमात्मा का प्रत्यक्ष कर सकता है।

2. परमात्मा से मिलने के लिए आवश्यक है केवल आत्मज्ञान। अपने को जान कर कोई परमात्मा से दूर नहीं रह सकता और अपने को न जानकर कोई परमात्मा को कभी नहीं जान सकता।

ईश्वर एक है। एक सर्वत्र व्यापक है। उसे खोजने की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है कि हम अपने को जानें, प्रकाशित करें। धर्म अपने को, आत्मतत्त्व को ज्योतित करता है। अधर्म आत्मतत्त्व को अन्धकार कूप में ढांकता है। अशुभ पाप कर्म आत्मा के चारों ओर अज्ञान का ताना-बाना बुनते हैं। पुण्य शुभ कर्म आत्मा के स्वरूप का दर्शन कराते हैं।

ईश्वर से मिलना इसलिए है कि आत्मा की भूख-प्यास बिना प्रभु से मिले तृप्त नहीं होती। हम भूख लगने पर रोटी और प्यास लगने पर पानी खोजते हैं। ऐसे ही आत्मा अपनी भूख और प्यास मिटाने के लिए ईश्वर से मिलना चाहती है। मनुष्य अज्ञान के कारण जब इस भूख और प्यास को अनुभव करता हुआ भी अनुभव नहीं कर पाता, तब वह अपने को भुलाता जाता है। अपने को अन्धकार में डाल संसार के भौतिक पदार्थों में वह सुख और आनन्द की खोज करता है पर सब कुछ मिलते जाने पर भी उससे प्रश्न उलझते ही जाते हैं।

इस उलझन का हल यह है कि धर्म मार्ग पर चलो। ज्ञान को ज्योतित कर अपने रूप को पहचानो, अपने को जानकर अपने प्रियतम प्रभु से मिलो। वह वह ही है। उसकी कोई उपमा नहीं। उसका सा और कोई नहीं। उससे मिलने के लिए पाखंडी गुरुओं के चक्कर में न भटककर बिना किसी सिफारिश के अपने मन मन्दिर में आप उससे मिल सकते हैं। मन का मैल मिटाओ, अपने को देखो, जानो। तुम्हारा प्रभु तुम्हारे पास होगा और तब तुम वह पा लोगे, जिसे त्रिलोकी का राज्य भी तुम्हें नहीं दे सकता।

(जनज्ञान पौष सम्वत् २०२९)

आपके-पत्र

–: शुभ कामना सन्देश :–

''यह सुन्दर बेला लाए अनन्त सुखों और शान्ति का शुभ सन्देश''

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ...

–श्यामाकांत मिश्र, अध्यक्ष स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, उतराधिकारी संगठन राबर्ट्सगंज (उ.प्र.)

राष्ट्रध्वज का यह अपमान

सम्पादक महोदय,

26 जनवरी, को सम्पूर्ण भारत ने अपना 60 वाँ गणतंत्र दिवस मनाया। लेकिन जब यह आजाद, लोकातांत्रिक, प्रभुत्वसम्पन्न देश अपना 60वाँ गणतंत्र दिवस मना रहा था, उसी दिन देश के सर्वप्रतिष्ठित दिल्ली विश्वविद्यालय में नोर्थ कैम्पस के छात्रावास में हॉस्टल प्रशासन के कुछ अधिकारियों ने गणतन्त्र दिवस के दिन छात्रों को तिरंगा झंडा फहराने से मना कर दिया। ऐसी जानकारी मिली है। कश्मीर के लाल चौक को तो छोड़िये अब देश की राजधानी में भी ऐसे लोग आ गए है लोग जो खाते तो हैं भारत का लेकिन उसी देश के राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करते हैं। जहां हम सबसे बड़े लोकतंत्र की दुहाई देते हैं वही हमारा प्यारा तिरंगा हवा में खुली सांसे भी नहीं ले पा रहा है। अधिक शर्मिंदगी की बात तो यह है कि ये सब ऐसी जगह हुआ, जहां इस देश का भविष्य निर्माता युवा वर्ग शिक्षा ग्रहण करता है। छात्रों ने यह भी बताया कि यह लोग कम्युनिष्ट मानसिकता के हैं। खैर जो भी हो ऐसा करने वाले लोग स्पष्ट तौर पर देशद्रोही हैं उन्हें उनके किये का दंड मिलना चाहिये, अन्यथा देश में बैठे अन्य विभीषण भी अपना सर उठाने लगेंगे। –रामेन्द्र मिश्र, खालसा कॉलेज, देव नगर, नई दिल्ली

सेना की जम्मू-कश्मीर से वापसी क्यों?

महोदय,

खेद का विषय है कि उमर अब्दुल्ला के जम्मू कश्मीर में मुख्यमंत्री बनते ही वहां से पुनः किसी तरह से सेना के हटाने की कोशिशें होती रहीं तथा हमारे गृहमंत्री भी गठबन्धन की राजनीति में फंस कर राष्ट्र की सुरक्षा को अनदेखा करते हुए सेनाओं की जम्मू-कश्मीर से वापसी के निर्णय में सहयोगी बने। परिणाम स्वरुप पिछले 2 वर्षों में लगभग 30 हजार सैनिक जम्मू-कश्मीर से हटा लिये गये और यह प्रक्रिया जारी है। हमारे रक्षामंत्री ने भी पिछले दिनों इस बात की पुष्टि के साथ चेतावनी देते हुए सेना को सावधान किया है कि 'मानवाधिकार' का उल्लंघन न होने पाये। क्या आतंकवादियों व देशद्रोहियों से राष्ट्र की रक्षा करना सेना का कर्त्तव्य नहीं? क्या मानवाधिकार के धोखे में केवल सेना व अन्य सुरक्षाबल आतंकवादियों द्वारा बमों व गोलियों का निशाना बनते रहें। क्या जम्मु-कश्मीर की जनता तो बम विस्फोटो से लहूलुहान होती रहे और सरकार व अर्न्तराष्ट्रीय समुदाय 'मानवाधिकार' की दुहाई देते हुए आतंकवादियों के दुस्साहस को प्रोत्साहन देते रहे? क्या गृहमंत्रीजी ने घाटी में आतंकवादियों की बड़े पैमाने पर उपस्थिति व घुसपैठ की ताक में बैठे सैकड़ों खूंखार प्रशिक्षित देशी व विदेशी आत्मघाती दस्तों की तैयारी की अनदेखी नहीं की, क्या कश्मीर में लालचौक व पुलबामा में हुए आत्माघाती हमलों के रूप में लौटाया गया रोका गया आतंकवाद सरकार को सेनाओं की वापसी के निर्णय को पुनः सोचने केलिये बाध्य करेगा? विशेषतः उस स्थिति में जबकि हमारी सेना के शीर्ष अधिकारी व रक्षा विशेषज्ञ कभी भी जम्मू-कश्मीर से सेना की वापसी के समर्थन में नहीं रहे।

–विनोद कुमार, सर्वोदय नयागंज गाजियाबाद

बहुसंख्यक वर्ग के छात्रों से अन्याय क्यों?

महोदय,

१. छात्रवृत्ति में हिन्दू विद्यार्थियों के साथ भेदभावः–

यू0पी0ए0 सरकार ने गैर हिन्दू अर्थात् अल्पसंख्यक वर्ग के स्कूली शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए 25 लाख छात्रवृत्तियों की घोषणा की है। किन्तु हिन्दू बच्चों को इस सुविधा से वंचित रखा गया है। इस प्रकार अति गरीब हिन्दुओं के बच्चे फीस न दे सकने के कारण स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। और उपरोक्त छात्रवृत्तियों का

लाभ उन्हें नहीं दिया जाता।

२. अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की फीस हिन्दू कर दाताओं के कर (टैक्स) से:

IIM, IIT जैसे देश के 50 उच्च अध्ययन केन्द्रों में जहाँ हिन्दू विद्यार्थियों को पूरी फीस भरनी पड़ती है, परन्तु अल्पसंख्यक वर्ग (ईसाई, मुसलमान आदि) के विद्यार्थियों की पूरी फीस केन्द्र सरकार द्वारा दी जाती है।

३. हिन्दू करदाताओं के धन से मुस्लिम व ईसाई विद्यार्थियों को मुक्त कोचिंग:

यदि कोई अल्पंसख्यक विद्यार्थी जैसे उच्च शिक्षण संस्थाओं की प्रवेश परीक्षा की तैयारी केलिए किसी कोंचिग सैन्टर में जाता है तो एय विद्यार्थी की पूरी फीस सरकार द्वारा दी जाती है जबकि हिन्दू विद्यार्थी इस सुविधा से वंचित रह जाता है। पुष्टि के लिए देख सकते है।

४. हिन्दू विद्यार्थी अध्ययन ऋण पर ज्यादा ब्याज चुकाते हैं:

हिन्दू विद्यार्थी अपने अध्ययन ऋण पर 12 प्रतिशत से 14 प्रतिशत ब्याज चुकाते हैं जबकि अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थी को मात्र 3 प्रतिशत ब्याज दर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास वित्त निगम जो कि भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के अधीन है के द्वारा धन उपलब्ध कराया जाता है। पुष्टि के लिए www.nmdfc.org देखें।

५. हिन्दू युवक उद्यमी भेदभाव के शिकार:

हिन्दू उद्यमियों को नया व्यवसाय शुरू करने के लिए बैंको से 15 से 18 प्रतिशत से अधिक ब्याज दर पर ऋण प्राप्त होता है किन्तु गैर हिन्दुओं को ऋण राशि का 35 प्रतिशत तो 3 प्रतिशत की ब्याज दर से और शेष राशि पर भी हिन्दुओं से 2 प्रतिशत काम पर ऋण प्राप्त होता है।

जरा सोचिए:

कहीं यह (ऊपरोक्त मतभेद) बहुसन्ख्यक युवाओं को कमजोर करके भारत के भविष्य अंधकारमय करने का षडयन्त्र तो नहीं? क्या लोकतन्त्र में इस सरकार की नीतियां बुहसंख्यकों पर इसी प्रकार कुठाराघात करके भारत को षडयन्त्रों के चक्रव्यूह में फंसाती रहेंगी? क्या आज 'आचार्य चाणक्य' के समान महान राजनीतिज्ञों व शिक्षकों की आवश्यकता तो नहीं जिन्होंने राष्ट्र पर छाये संकट को भांप कर एक सामान्य बालक चन्द्रगुप्त को 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' बनाकर राष्ट्र के दुश्मनों का समूल नाश करके ही संतोष पाया?

विनोद कुमार सर्वोदय	संजीव मित्तल	नीरज भारद्वाज
प्रान्तीय संयोजक	प्रान्तीय संयोजक	महानगर अध्यक्ष
सांस्कृतिक गौरव संस्थान	अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा	अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा

संस्कृत बनी दूसरी राजभाषा

महोदय,

उत्तराखण्ड की भाजपा सरकार बधाई की पात्र है, जिसने राज्य विधानसभा से, संस्कृत को दूसरी राजभाषा बनाने का विधेयक पारित करा दिया है। उत्तराखण्ड देश का पहला राज्य है जिसने संस्कृत को दूसरी राजभाषा का दर्जा दिया है। उत्तराखण्ड देव भूमि है क्योंकि हरिद्वार, बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश जैसे धार्मिक नगर (स्थान) इसी राज्य में हैं। अत: इस राज्य में, संस्कृत को महत्व व बढ़ावा देना उचित कार्य है। संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। इसमें दस करोड़ शब्द हैं। हिन्दू धर्म की अधिकसख्य पुस्तकें संस्कृत में ही मूल रूप से हैं। कम्प्यूटर के लिए भी संस्कृत सबसे अधिक उपयुक्त मानी गई है।

चारों वेद भी संस्कृत में हैं। संस्कृत के प्रचार प्रसार से राज्य का अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दूकरणा भी होगा जो कि (राष्ट्रवादियों) के लिए हर्ष का विषय है।

–इन्द्रदेव गुलाटी वीरेन्द्रकुमार अग्रवाल

बुलन्दशहर (उ0प्र0)

वैदिक सत्संग व यज्ञ

हमारे निवास स्थान २७०४ प्रेममणि-निवास, गली पत्तेवाली, नया बाजार, दिल्ली-६ पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक सत्संग का आयोजन १६ मार्च से २४ मार्च २०१० के मध्य किया जा रहा है। प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० देवशर्मा वेदालंकार यज्ञ के ब्रह्मा होंगे।

कार्यक्रम

प्रतिदिन यज्ञ: प्रात: 7 बजे से 10 बजे तक
सायं 4.30 बजे से 8 बजे तक

चतुर्वेद महायज्ञ पूर्णाहुति: 24 मार्च को प्रात: 10 बजे

श्रीमती गरिमा गोयल **गणेश दास गोयल**

९२१२४५८८४१

विक्रम संवत्सर २०६७ का अभिनन्दन

–श्री सत्यपाल निश्चिन्त

चैत्र शुदि प्रतिपदा का दिन भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार भारतीय नववर्ष विक्रम सम्वत् का शुभारंभ इस पवित्र दिवस से होता है। इस बार 16 मार्च 2010 को भारतीय विक्रम सम्वत 2067 का आरंभ होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन इसलिए भी गौरवशाली माना जाता है क्योंकि बंसत के आगमन से जहां एक ओर शीत से मुक्ति मिलती है वहीं दूसरी ओर नित्य नव-नव पर्वो की झड़ी सी लग जाती है। चैत्र के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को भारतीय नवसम्वत् आरम्भ हर्षोल्लास के साथ होता है। बासन्ती नवरात्र महोत्सव का श्रीगणेश चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनाए जाने वाले नवसम्वत् एवं वैशाखी पर्व की समरसता भी उजागर होती है। इस दिन प्रारम्भ होने वाला भारतीय नवसम्वत् 'चन्द्रमास' की पद्धति पर अवलम्बित है, तो इसके बाद आने वाली संक्रांति पर मनाये जाने वाला नवसम्वत् अर्थात् वैशाखी पर्व सौर मास सम्बंद्ध कालगणना पर आश्रित है।

सम्वत्सर ाक प्रवर्तन राष्ट्र के पराक्रम, पौरूष, पुरूषार्थ, विजय एवं वैभव की कसौटी है। इस कसौटी पर विक्रम सम्वतसर ही खरा उतरता है। मालवाधीश शकारि विक्रमादित्य की सत्तवन ई0 पू0 में ही शकों पर विजय को महिमामण्डित करने के लिए यह सम्वत् विक्रमादित्य के नाम के साथ जोड़ा गया। विक्रमादित्य कर्मशील, व्यवहारिक और राजनीति के क्षेत्र में कालिदास के प्रतिरूप है। प्रभावक चरित के अनुसार विक्रमादित्य ने एक परित्राता का कार्य किया। थोड़ा ही समय में शक वंश को उखाड़कर राजा विक्रमादित्य एक सार्वभौम सम्राट् की तरह सामने आये। देश को अव्यवस्था से मुक्त कर उन्होंने अपना नया युग में संस्कृत के आदि कवि वाल्मीकि और अवतारों में श्रेष्ठ राम हुए। उसके पश्चात् द्वापर में सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यास और कृष्ण हुए। उसी प्रकार कलियुग में भारतीय इतिहास में राजा विक्रमादित्य और महाकवि कालिदास को अनूठा संयोग हुआ। पूजा की दृष्टि से उनका स्थान राम और कृष्ण के बाद ही है। चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, कनिष्क, समुद्रगुप्त और द्वितीय चन्द्रगुप्त को भारतीय जनता ने पूरी तरह भुला दिया है। लेकिन राजा विक्रमादित्य की स्मृति को विक्रम सम्वत्सर के रूप में आदर के साथ सहेज कर रखा है।

भक्ति की समरसता के प्रतीक उक्त नवसम्वत का महत्त्व वैदिक काल से ही स्वीकार किया जाता है। देश के प्राय: सभी अन्य प्रान्तों में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष के रूप में ही मान्यता प्राप्त हुई है। महाराष्ट्र में यह दिवस 'गुड़ी पड़वा' कहलाता है। सिंधी समाज में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को 'चैती चांद' के रूप में मनाकर नववर्ष का स्वागत किया जाता है। सिंध प्रान्त में हिन्दू धर्म के रक्षक वरुणावतार श्री झूलेलाल का जन्म भी इसी दिन हुआ था। पंजाब में नववर्ष के रूप में चैत्र शुक्ल प्रतिपाद और मेष संक्रान्ति (वैशाखी) को समान महत्व दिये जाने पर भी उमंग वैशाखी पर ही दृष्टिगोचर होता है। सन् 1919 ई0 को वैशाखी जालियांवाला बाग में निरपराध भारतीयों का अंग्रेजों ने जो नरसंहार किया था। उसे कभी भी नहीं भुलाया जा सकता है।

आचार्य भास्कर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सिद्धान्त शिरोमणि ग्रन्थ में लिखा है कि चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ में दिन, मास, वर्ष युग एक साथ आरम्भ हुए। इसी कारण भारतवर्ष में कई सम्वत् चैत्र प्रतिपदा से आरम्भ किए गए। विक्रम सम्वत् चैत्र प्रतिपदा से पूर्व अनेक सम्वत् प्रचलन में रहे हैं, जिसमें सप्तर्षि सम्वत्, कलियुग सम्वत् बुद्ध निर्वाण सम्वत्, वीर निर्वाण सम्वत्, मौर्य निर्वाण सम्वत् आदि प्रमुख हैं। इन अनेक सम्वतों के होते हुए भी भारत में विक्रम सम्वत् ही सर्वमान्य है। यह संवत् किसी सम्प्रदाय विशेष का सम्वत् नहीं है। मातृभूमि को विदेशी शक्तियों से मुक्त कराने वाले वीर प्रतापी राजा विक्रमादित्य के नाम से प्रचलित यह सम्वत् सम्पूर्ण राष्ट्र की चेतना को अपने भीतर समेटता है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि राजा विक्रमादित्य नवसम्वत्सर

के दिन ही सिंहासनारूढ़ हुऐ थे और मातृभूमि को स्वतंत्र कराने का संकल्प लिया था, जिसे उन्होंने पूरा भी किया।

संस्कृति ही किसी देश की प्रगति का आधार होती है। जो उसमें स्वाभिमान भर देती है और राष्ट्र कर्मशीलता में प्रवर्त्त हो जाता है। काम करने की इच्छा अर्थात् संकल्पशक्ति होने के बाद सब प्रकार के कार्यों के लिए रास्ता निकल आता है। कार्य करने की इच्छा बनाने में मनुष्य स्वाभिमान अर्थात् अस्मिता ही प्रमुख होती है। हम अपनी अस्मिता को तभी पहचान सकेंगे जब हर पल चलने वाला हमारा काल-क्रम हमें हर क्षण अपनी संस्कृति की याद दिलाता रहेगा। अत: यदि संस्कृति को बचाना है तो उसके मूलभूत आधार पर हम अपनी कालगणना के आधार को समझें। हमें केवल अपने जीवन में अपनी संस्कृति के सकारात्मक पहलुओं पर दृढ़ आस्था रखनी है तथा उसके अनुकूल अपने जीवन में आचरण करना है। अत: भारतीयों को नवसम्वत्सर को ही नववर्ष के रूप में मनाना चाहिए न कि ईसाईयों के 1 जनवरी से आरम्भ होने वाले नववर्ष को।

हमारे देश की समुन्नत संस्कृति प्रकृति के साथ गहरे रूप से जुड़ी है। पृथ्वी के वातावरण में शीतोष्ण की विषमता पाई जाती है। इस विषमता के कारण शरीर में वात, पित्त और कफ की मात्रा घटती बढ़ती रहती है। आयुर्वेद इन तीन दोषों की समता को ही मानवता के स्वास्थ्य का आधारभूत सिद्धान्त मानता है। सम्वत्सर के आरम्भ की मान्यता इस दिन से हट कर भला और किस दिन मानी जा सकती है। यों तो हमारे भारतवर्ष में आज शक, गुप्त, हर्ष कलचुरी, सप्तर्षि, नेवार, बुद्ध, जैन आदि अनेक सम्वत् पद्धतियां विद्यमान हैं, तथापि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (विक्रम सम्वत् के नाम से विख्यात) सभी दृष्टि से मान्य है।

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुंजाएं।।

अन्तिम कवर पृष्ठ	६०००/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	५०००/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	४०००/-रुपए
आधा पृष्ठ	३०००/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	१५००/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" नई दिल्ली के नाम भिजवाएं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

विज्ञापन व्यवस्थापक

जनज्ञान-मासिक

२२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-५ दूरभाष:२८७५२७४१,४१००४७४१

हर्षोल्लास का पर्व होली पर पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

महात्मा वेदभिक्षुः एक प्रेरणा-प्रद जीवन

—ज्ञानचन्द्र

आदर्शों और मानवीय जीवन मूल्यों के घट रहे और विकृत हो रहे इसकाल में एक आदर्शपूर्ण व श्रेष्ठ मूल्य-परिपालक व्यक्ति का पुण्य स्मरण करना समीचीन ही है। पृथ्वी और पृथ्वी का सुप्रसिद्ध पुण्य-खण्ड भारत आज जिस दुर्दशा का प्राप्त हो रहे हैं, उस दुर्दशा से बचाने के लिए उन मनस्वी गणों, महानात्माओं और लोकोत्तर पुरुषों की स्मृति दिलाना समाज के पुनः उत्था हित आत्मवश्यक है।

निज सुख, स्वार्थ, प्रति और व्यक्तिगत लाभ आदि को तिलांजति देकर महात्मा वेदभिक्षुः ने वेद-प्रसार महर्षि दयानन्द के जीवन व दर्शन का प्रचार-विस्तार अपने जीवनका पुण्य लक्ष्य बनाया और उस पर स्त्यापित भाव से चलते रहे। उनकी अक्षय ऊर्जा, सुदृढ़ संकल्प और अस्खलित आस्था मे वेद के भास्य प्रकाशन के कठिन, दुरूह व पर्याप्त जटिल कार्य को भी अपने संकल्प वल व ईश्वर विश्वास की शक्ति से सफल करके दिखाया उनकी रोमांचकारी व अतिशय प्रेरणा दायन जीवन गाथा में आज भी इतना पुण्य-प्रभाव है कि उसमें सहस्त्रों जन प्रेरणा लेकर अपने जीवन को प्रकाशित और हृदय-मन को ऊर्जारूपी कर सकते हैं। विपथगामी होती जा रही आर्य सन्तान के लिए इस वन्दनीय महानात्मा का आत्मा दर्शन, जीवन धारा और कर्मकथा अत्यन्त ओजस्विता पूर्ण और प्ररणादायक सिद्ध होगी।

उस अद्वितीय प्रतिभा व अनथक श्रम और अपूर्व श्रद्धा के धनी महात्मा वेदभिक्षुः को शत कोटि नमन।

□□□

महात्मा वेदभिक्षु

(१)

वेद के प्रकाशन का पावन श्री कर्म किया
महर्षि दयानन्द का भक्त वह अनूप था

सीमित संसाधन ले, महत् आयोजन किए
तनसे कर्मठ मन-प्राणों से भूप था

भारतवासी जन को मूल्यों की भाषा दी
उन्नत आदर्शों का साकृति स्वरूप था

लेखक कवि व्याख्याकार वक्ता व्यवस्थापक
वेदभिक्षुः गुण-गण में बहुगुण शतरूप था

सद्धर्भ, सद विचार सदभाव सत्कार्य
वैदिक सज्जीवन का उत्तम प्रारूप था

महात्मा वेद-भिक्षुः नाम से विख्यात भद्र
अपनी विद्या का वह एकाकी प्रतिरूप था

(२)

वेदभिक्षुः के नाम से जिसका करें प्रबोध
उसी नरोत्तम भद्र का करते हैं, सम्बोध

आर्य धर्म की श्री ध्वजा कर में ले गतिमान
वेद हेतु करते रहे जन जन का आह्वान

पुण्य वेदमन्दिर उसी नर की शुभ पहचान
जन जागरण निमित्त फिर शुरू किया "जनज्ञान"

उसके पावन जन्म दिवस पर आदर के साथ
करें स्मरण हम प्रेम-पुष्प ले हाथ

—ज्ञानचन्द्र

अथक साधक वेदभिक्षुः

–महंत अवेद्यनाथ, पूर्व संसद सदस्य
(गोरक्ष पीठाधीश्वर, गोरखपुर)

वेदभिक्षुः जी की उनके जन्मदिवस पर स्मृति उन सहस्त्रों लोगों के मन में सहज ही हो उठती है, जिन्होंने 'जन-ज्ञान' के माध्यम से उनके विचारों की ओजस्विता की अनुभूति की थी। वह निस्पृह भावना से कर्त्तव्य पथ पर चलने वाले एक ऐसे राही थे, जिनके लिए अपने निर्धारित ध्येय की साधना में रत रहना ही आराधना बन जाता है।

वह आर्यसमाज से बाल्यकाल से ही जुड़े रहे थे, परन्तु उन्होंने आर्यसमाज को कोई पन्थ अथवा सम्प्रदाय मानकर उसकी अभिवृद्धि में योगदान नहीं दिया था, अपितु स्वामी दयानन्द के आर्यावर्त्त की कल्पना को साकार करने के लिए गठिन एक मंच माना था। उनके चिन्तन में एक ऐसी सर्व समावेशी धारा निहित थी कि जो भारत के राष्ट्रजीवन के मेरूदंड के रूप में हिन्दुत्व को स्वीकार करता है। इसीलिए उन्होंने हर हिन्दू-घर में वेद को पहुंचाने की एक आकांक्षा अपने मन में संजोयी थी। 'दयानन्द संस्थान' के माध्यम से वह अपनी इस आकांक्षा की पूर्ति के लिए जीवन की अन्तिम घड़ी तक सजग रहे। साधना और समर्पण की उनकी चारित्रिक विशेषता इस तथ्य को प्रकट करती है कि वह वास्तविक अर्थों में कर्मयोगी थे।

उन्होंने अपनी वाणी और लेखनी द्वारा हिन्दू को अपनी अस्मिता का बोध कराने के लिए अथक प्रयास किया था। उन्होंने अपने आपको किसी पन्थ और मत तक सीमित नहीं कर समग्र हिन्दू समाज में ही आर्यसमाज का दर्शन किया था। इसीलिए वह भी राम जन्मभूमि मुक्ति के प्रबल पक्षधर थे तो उन्होंने हिन्दू जाति के विभिन्न वर्गों में समन्वय के लिए ''हिन्दू रक्षा समिति'' के माध्यम से ठोस प्रयास किया था।

वह वाणी और लेखनी के धनी थे इसकी गवाही जहां ''जनज्ञान'' और ''दयानन्द-संस्थान'' द्वारा प्रकाशित साहित्य प्रस्तुत करता है, वहीं उनके भाषणों को विभिन्न आयोजनों में जिन्होंने सुना था वे उसकी ओजस्विता को आज भी सहर्ष स्मरण करते हैं।

हिन्दी हिन्दू, हिन्दुस्तान उनके लिए मात्र शब्द नहीं अपितु उनकी आस्था का केन्द्र थे। क्योंकि जहां वह यह मानते थे कि हिन्दी भारत की मिट्टी से जन्मी है और उसमें भारत की गन्ध है, वहीं उनकी रचनाओं से यह भी आभासित होता है कि वह किसी सम्प्रदाय अथवा मत-मतान्तर के अनुगामी मात्र को ही हिन्दू नहीं मानते थे, अपितु उन्होंने वीर सावरकर की उस व्याख्या को अंगीकार किया था, जो यह स्पष्ट करती है कि भारत को अपनी मातृभूमि, पितृभूमि और पुण्यभूमि मानने वाला हर व्यक्ति ही हिन्दू है। हिन्दुस्तान तो उनके लिए एक ऐसी पावन भूमि रहा, जिसे वेद के पावन ज्ञान को जगद् व्यापी बनाने के लिए वह आधारस्थल मानते थे।

धर्म के मर्म को समझकर उन्होंने अपनी लेखनी और वाणी से इस तथ्य को उजागर किया था कि यह राष्ट्र शस्त्र और शास्त्र दोनों में ही परम पारंगत होकर विश्व भर में शांति-स्थापना के महान् लक्ष्य को पूर्ण कर जाएगा। सबल के मुख से निकले अहिंसा के उपदेश ही प्रभावी हो जाते हैं और निर्बल के मुख से अहिंसा की स्तुति कायरता मान ली जाती है, इस तथ्य को उन्होंने भली-भांति समझ लिया था।

उन्होंने धन-सम्पदा अर्जन नहीं, अपितु इस महान् राष्ट्र को सबल, सुदृढ़ और सुरक्षित बनाने के लिए सर्वस्व समर्पण को ही अपने जीवन का महामन्त्र बना लिया था। पद-प्रतिष्ठा पाकर तो कई लोग कुछ समय के लिए मंच पर चमक जाते हैं, परन्तु साधना के धनी ही अपने पद-चिन्ह काल की राह पर अंकित कर जाते हैं। वह ऐसे ही इने-गिने कर्त्तव्यपरायण हिन्दुत्यनिष्ठ कार्यकत्ताओं में से एक थे।

उनके अधूरे कार्यों की पूर्ति के लिए ''जनज्ञान'' की सम्पादिका राकेश रानी निर्भीकता सहित अपना दायित्व निभा रही हैं। अनेक अभियोगों की आपदा को उन्होंने साहससहित झेला है, और झेल रही हैं। उनमें इस साहस के सृजन में वेदभिक्षुः जी की ध्येयनिष्ठा का योगदान है, यह मानने में कोई संकोच नहीं किया जा सकता।

मनुष्य बनने की राह

–प्रकाश आर्य

आहार निद्रा, भय, मैथुनंच,
सामान्य भेतत पशुभिनैराणाम्।

खाना-पीना, भयभीत होना, परिवार बढ़ाना, पशु व मनुष्य में समान पायी जाती है। जो केवल अपने लिए जीता है, संसार में आकर इसके भोग को ही अपना धर्म मानता है, इसी में सारा सुख व इस सुख को पाना ही अपना जीवन लक्ष्य मानता है। ज्ञान का अर्जन नहीं, जिसे दान व परमार्थ की आदत नहीं वह मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है। वह तो बिना पूंछ वाला व घास न खाने वाला पशु ही है। इसी लिए कहा गया–

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं
न शीलं न गुणों न धार्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभार
भूता मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति॥

मानव बनने के लिए हमारे ऋषियों ने चार विषय हमारे समक्ष प्रस्तुत किए हैं। जिसमें मनुष्य बनने के लिए मार्ग दिखाया है धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष। इसके अनुसार जीवन जीना मनुष्यता की पहचान है तथा यह जीवन की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। इन पर संक्षेप में विचार करते हैं।

धर्म–धर्म का अर्थ हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि नहीं है। धर्म का अर्थ मानव जीवन के वे नियम, वे गुण जो मनुष्य बनने के लिए आवश्यक हैं उन्हें ग्रहण करना, उनका जीवन में पालन करना, उनको प्राणों से अधिक महत्व देना। जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु स्थान या प्राणी की कोई न कोई विशेषता या गुण होता है। यदि उसमें से वह गुण या विशेषता को निकाल दिया जावे तो उसका कोई औचित्य नहीं रह जावेगा। जैसे सूर्य से प्रकाश और गर्मी, चाँद से व पानी से शीतलता निकल जावे, शकर से मिठास समाप्त हो जावे तो इनका कोई महत्व नहीं रह जाता है। बाहरी स्वरूप ही किसी की उपयोगिता का आधार नहीं होता उसके गुण की प्रधानता होती है। मान लीजिए आपके यहां बिजली का लट्टू जल रहा है किन्तु उसके अन्दर के तार जो लाईट का साधन हैं यदि वे गिर जाएं (बल्ब फ्यूज) तो बल्ब का कोई महत्व नहीं रह जाता। जबकि वह बाहर से तो एक जलने वाले बल्ब के समान ही दिखाई पड़ रहा है किन्तु फिर भी वह काम का नहीं है।

ठीक यही स्थिति इस मनुष्य की है। बाहरी शरीर के साथ-साथ अन्दर की आत्मिक स्थिति ठीक होनी चाहिए। सद्गुण उसके आचार-विचार-व्यवहार में हो, उसमें सबके लिए सद्भावना, सद्व्यवहार की प्रवृत्ति हो, वह स्वयं की शारीरिक व आत्मिक उन्नति के साथ परिवार, समाज तथा राष्ट्र व विश्व के लिए भी उतना ही जागरूक हो जितना वह अपने स्वयं के लिए है। दया, धैर्यता, क्षमा, चोरी न करना, सत्याचरण, शरीर और आत्मा कीशुद्धि व उन पर नियंत्रण, क्रोध व लालच के घेरे से दूर रहे, इतनी बातों का ध्यान रखकर वह धार्मिक बने। यह मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

धर्म मात्र दिखावे या अपने को धार्मिक बताने के लिए नहीं अपनी व सबकी उन्नति के लिए धारण करें। यह मनुष्य बनने की प्रथम सीढ़ी है।

अर्थ–धर्म के पश्चात् अर्थ है। अर्थ का महत्व आज संसार में सबसे ज्यादा माना जा रहा है। अर्थ अर्थात धन जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। उसके बिना व्यवहारिक जीवन में जीना सम्भव नहीं है। धन बहुत कुछ है किन्तु याद रखें सब कुछ नहीं है। धन साधन हो सकता है किन्तु साध्य या जीवन का अन्तिम लक्ष्य नहीं। धन बाहरी सुख-सुविधाओं को खड़ा कर सकता है पर सुख-शान्ति का एकमात्र कारण धन नहीं है।

धन जीवन उन्नति और पतन दोनों मार्गों पर ले जाता है। विवेकशील व्यक्ति धन का सदुपयोग परमार्थ सेवा व दान से कर जीवन में सुख-शान्ति प्राप्त करते हैं। वहीं अविवेकी धन की हवस के अन्धे इस नाशवान धन के लिए अपने को पशु समान व्यस्त रखकर जीवन के अन्य सुकर्मों से, सत्संग से, परमार्थ से अपने को काट देते हैं, सदा दु:खी रहते हैं। धन के प्रति अत्यन्त लगाव पतन के मार्ग की ओर ले जाता है जो हमे मानवता से दूर लेजाने का कारण बन जाता है। इसलिए धन की प्राप्ति और व्यय दोनों की बहुत सोच-समझकर सद्प्रयासों से करें। इसलिए यजुर्वेद के एक मन्त्र में कहा–

ईशा वास्यमिदं सर्वम् यात्किंच जगत्यां जगत् तेन त्यक्तेन भुंजिथा मा गृधः कस्य सिद्धनम्।।

यह धन किसका है? इस पर विचार करें, क्या कोई इसका पूरा-पूरा उपयोग कर सका? क्या कोई अपने साथ ले गया? यह सब जानते हैं पर मानते नहीं हैं कि आज तक साथ में इसे कोई नहीं ले गया। इसलिए त्याग भाव से उपयोग करो और बढ़ाने की प्रवृत्ति के कारण अकारण लालच में मत पड़ो। ध्यान रखो यह अर्थ ही अनर्थ भी बन जाता है। धन किसे कहें, जो धन सात्विक हो, अच्छी मेहनत व ईमानदारी के द्वारा कमाया हो वही धन है। गलत तरीके से कमाया और रखा धन काला धन कहलाता है।

इसलिए इस बात को हमेशा ध्यान रखें धन सुख-शान्ति की ओर ले जानेमें सहायक हो सकता है। किन्तु काला ध न, भय, लज्ज व अपराध बोध कराता हुआ दुःख परेशानी पथ पर ले जावेगा, उससे शांति नहीं मिलेगी जबकि कहा गया–**"मनुष्यस्य मूलं सुखं"** मनुष्य जीवन का लक्ष्य तो सुख प्राप्त करना है। इसलिए ठीक प्रकार धन कमाओ और ठीक प्रकार व्यय करो। वेद मन्त्र में कहा गया–**शत हस्त समाहरः सहस्त्र हस्तः संकिरः,** सौ हाथों से कमाओं और हजार हाथों से उसे दान करों। भगवान कृष्ण ने दान को भी पवित्र जीवन का आधार माना है और कहा–**यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानी मनीषीणाम्।**

वेद मन्त्र का भाव है कमाई से अधिक भी दान देना पड़े तो प्रसन्नता से देने की भावना रखनी चाहिए। यही मनुष्य की पहचान है। धन की अत्यन्त लालसा ही बन्धन का और अशान्ति का कारण है जो सन्तोष रूपी धन से दूर ले जाती है। काम–काम मनुष्य जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। परमात्मा ने इतनी विशाल, अद्भूत, सृष्टि का निर्माण प्राणियों के लिए किया। इस सृष्टि का प्रयोजन स्वयं परमात्मा ने अपने लिए नहीं किया। इन प्राणियों में भी केवल मनुष्य ही इस सृष्टि की अनेक विशिष्ट वस्तुओं का भोग कर लाभ प्राप्त कर सकता है। भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर सुन्दर खूबसूरत मन को मोह लेता है। परन्तु यह सब एक सीमा में व अपने अधिकार में ही होना चाहिए।

अति सर्वत्र वर्जयेत–किसी भी वस्तु की अति नहीं होनी चाहिए। किन्तु इस भोग भोगने की लालसा में पड़ा मनुष्य सारी सीमाएं तोड़कर अधिक से अधिक इनका भोग करना चाहता है। इस भोग के कारण वह शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक अवनति कर पतन के पथ पर चलने लगा है। भोगों के प्रभाव में ही वह उनकी पूर्ति के लिए अपना खाना-पीना, मर्यादा सब छोड़ देता है। इस प्रवत्ति पर नियन्त्रण करना जरूरी है। अन्यथा स्वच्छन्द दिनचर्या जो पशुओं में पायी जाती है वह यदि रखी तो मनुष्यता से बहुत दूर रह जायेंगे।

मोक्ष–मनुष्य जीवन का लक्ष्य सुख है, सुख का आधर धर्म बताया गया। धर्म जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर कदम-कदम पर हमारा मार्गदर्शन करता है।

धर्म का आचरण ही राग, द्वेष व अशुभ कर्मों से दूर करता है। मनुष्य को क्लेश के 5 कारण बताए उसके अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश है। इसमें इन पांचों से व्यक्ति हमेशा क्लेश में रहता है। राग अर्थात् लगाव बन्धनों का कारण है। बन्धनों से मुक्ति का नाम मोक्ष है। दुःख से मुक्ति का नाम मोक्ष है। स्वर्ग-नर्क या मोक्ष मृत्यु के बाद मिलेगा यह विचार भूल है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं, अति सुख का नाम स्वर्ग, अति दुःख का नाम नर्क। थोड़ा विचार करके देखें हमारे जीवन में कई बार दोनों ही प्रकार के अनुभव व समय आते हैं। इसका अर्थ है हम जीवन में स्वर्ग व नर्क की कई बार अनुभूति कर चुके हैं। आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक तीनों प्रकार के दुःखों से छुटकारा ही मोक्ष है।

वेद के अनुसार मानव जीवन में मोक्ष सर्वोत्तम उपलब्धि है। निश्चित ही इस मोक्ष तक मनुष्य बनकर ही पहुंचा जा सकता है अन्य किसी माध्यम से नहीं।

आईए परमात्मा की इस कृति को समझें, उसको जीवन में अपनाकर गरिमा प्रदान करें। पहले स्वयं मनुष्य बनें और मनुष्य बनावें। नहीं तो–नादान इसे पाकर यूं ही गंवा देते हैं, पर समझदार इस जनम और उस जनम का भी कमा लेते हैं।

उपरोक्त लक्षणों से युक्त व्यक्ति ही मनुष्य कहलाने के योग्य है। ध्यान दीजिए मानव चोले से रहते हुए इनकी उपेक्षा कर या कुछ इसके विपरीत आचरण करके स्वयं भी दुःखी रहते हैं और दूसरों को दुःखी करते हैं। किन्तु मानवता के इन सोपानों को जो धारण करता है वह स्वयं भी सुखी रहता है और औरों को भी सुखी करता है।

–आर्यसमाज मंदिर महू (मध्य प्रदेश) □□□

पर्यावरण सन्तुलन : वैदिक अवधारणा क्या थी?

–प्रो० आर० एस० मंत्री

पर्यावरण असन्तुलन से आज इस विश्व का सम्पूर्ण प्राणीजगत त्रस्त है। प्रकृति का ऋतु चक्र बदल रहा है। हवा, पानी एवं मृदा में जहर फैलता जा रहा है। हजारों प्रजातियां लुप्त हो गई हैं तथा जो बची हैं वे भी लुप्त होने के कगार पर हैं। वन सिमट रहे हैं तथा कंकरीट के मैदान फैलते जा रहे हैं। जीव क्षण का परन्तु धन संचय लिप्सा सात पीढ़ी की। इस पापी पेट के लिए आज का मानव क्या-क्या अपराध नहीं कर रहा है। अतुल भोग लिप्सा एवं अपराध वृति के कारण आज के मानव की वैचारिक शक्ति को जंग लग गया है, कहीं वह बेशुमार धन इकट्ठा करने के लिए निर्धन लोगों की किडनियां निकाल रहा है, तो कहीं अबोध पशु पक्षियों को मार-मारकर खा रहा है, जश्न मना रहा है तथा अपने पेट को कब्रिस्तान का स्वरूप प्रदान कर रहा है।

मनुष्य की इस वृत्ति ने आज के मानव को इतना क्षुब्ध एंव दुखी बना दिया है कि न तो रात्रि को वह शान्ति से सो सकता है तथा न दिन में चैन की सांस ले सकता है तथा इसी का परिणाम है कि मनुष्य का वास्तविक सुख एवं आनंद लुप्त हो गया है, जहां देखो, वहां अशांति एवं कलह, मन के साथ शरीर भी अनेक तरह की बीमारियों का घर बन गया है तथा इसीलिए वह सुख की खोज औषधियों की दुकानों एवं चिकित्सकों के घर एवं चिकित्सालयों में कराता है? परन्तु हर तरफ निराशा ही हाथ लगती है, क्योंकि आज का मानव वैदिक संस्कृति की अवधारणा एवं पर्यावरण संतुलन की महता को भूल गया है।

आइये, हम तनिक विचापर करें कि हमारे पूर्वज साधनों के अभाव में भी इतने सुखी, शांत एवं स्वस्थ जीवन बिताते हुए जीवन के परम लक्ष्य परमानन्द को प्राप्त करते थे, क्योंकि यह सिद्धि वैदिक संस्कृति की अवधारणा के अनुपालन से ही सम्भव है। आज के लोग सुख की तलाश साधनों में करते हैं परन्तु सुख साधनों में नहीं साधना में है। आइये हम विचार करें कि पर्यावरण संतुलन के सम्बंध में वैदिक अवधारणा क्या थी।

पर्यावरण सन्तुलन एवं वैदिक अवधारणा: आज से हजारों वर्ष पूर्व इस महान राष्ट्र के तपस्वियों ने पर्यावरण की महत्ता को समझकर प्रकृति के पंचतत्वीय क्रम को अपनाने की बात कही थी, ताकि हवा, पानी एवं मृदा प्रदूषण रहित रहें, जिससे प्रकृति चक्र बिना किसी अवरोध के चलता रहे, सभी जीवन प्रकृति के अनुकूल आचरण कर सुखी रह सकें। परन्तु आज के वैज्ञानिक प्राकृतिक संतुलन के विपरीत कार्य कर मनुष्य का प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का दम्भ भरे, परन्तु इनका यह दम्भ अब हवा हो गया है क्योंकि प्राकृतिक संतुलन इतना बिगड़ गया है कि वह त्राहिमांम् त्राहिमाम् कर रहा है।

वैदिक ऋषियों ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों में पर्यावरण सन्तुलन के सम्बन्ध में जो अवधारणाएं प्रस्तुत की हैं, उन्हीं से पर्यावरण सन्तुलन बना रह सकता है, तथा इस धरती पर रहने वाले सभी प्राणी प्रकृति की गोद में सुखद जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। वैदिक संस्कृति में समस्त मानव हित की कामना की गई है ताकि सभी लोग निरोग और सुखी रह सकें, जिस धरती पर हम रहते हैं, जिसका अन्न जल हम ग्रहण करते हैं, इसी माँ वसुन्धरा को हमारे इस पवित्र देश में माता के समकक्ष पूज्यनीय मानकर यह स्तुति की गई है–

पृथ्वी त्वया धृत लोका। देवीत्वं विष्णुना धृता॥
त्वं च धारय मां देवि। पवित्रं कुरु चासनम्॥

इसी तरह संस्कृति में नदियों को भी माता कहकर सम्बोधित किया गया है, उनकी पवित्रता बनाये रखने के लिए धर्मशास्त्रों में आह्वान किया गया है परन्तु हमारे अकर्मण्य साधनों ने पवित्र नदियों को गंदे नालों का रूप दे दिया है तथा यह सब पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव के कारण ही हुआ है। बृहत उद्योग धन्धों से निकलने वाले कचरे एवं शौचालयों से निकलने वाले दूषित पानी ने जो नालियों के माध्यम से पवित्र नदियों में मिल रहा है तथा परिणाम स्वरूप हमारे देश की जीवनरेखा कही जाने वाली नदियों का अमृत सलिल पानी विषैला बनाता जा रहा है।

हमारे ऋषि मुनियों ने इस पवित्र देश की सप्त नदियों को भी पवित्र एवं पूज्यनीय स्थान देते हुए कहा है:-

गंगे : यमुने चैव। गोदावरी सरस्वति।
कावेरी नर्बदा, सिन्धा। जले अस्मि सन्निधि कुरु॥

वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ हैं और धर्म संस्कृति एवं समाज के मूलाधार भी हैं। चारों ही वेदों को स्वयं ईश्वर की वाणी माना जाता है। वेदों में पर्यावरण को सन्तुलित बनाये रखने के लिए मंत्रों ऋचाओं का स्तवन किया गया। इसमें सबसे अधिक उपयोगी एवं जीवन को सही गति देने वाले छन्द का नाम गायत्री रखा गया है। हमारे देव कहते हैं कि महालक्ष्मी सरस्वती आद्य शक्ति के अंश रूप हैं। सृष्टि संचालिका विष्णु रूपा गायत्री ही ब्रह्मा का साकार स्वरूप है।

ज्ञान का ग्रहण करने एवं अज्ञान को नष्ट करने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन शुद्ध भाव से गायत्री मंत्र का जप करे। गायत्री मंत्र में सूर्य देव से प्रार्थना की गई है। सूर्य इस चराचर जगत के प्रत्यक्ष देव हैं और इनकी उपासना से प्राणिमात्र ही नहीं बल्कि समस्त धरती पुष्पित होती है। गायत्री मन्त्र के जाप से जहां हमारे अन्त:करण की शुद्धि होती है, वहाँ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी सात्त्विक परमाणुओं से आच्छादित हो जाता है। पर्यावरण असन्तुलन की जो विकट समस्या आज सम्पूर्ण प्राणी जगत के लिये एक गम्भीर खतरे का संकेत दे रही है, इससे बचने का एक ही उपाय है कि हम प्राचीन भारतीय संस्कृति में तथा ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदत्त इस सुन्दर सृष्टि को दूषित पर्यावरण के कुप्रभाव से बचाने का यही एकमात्र श्रेष्ठतम् मार्ग है। हम प्रकृति के आराधक बनें : आज हमने भौतिक प्रगति अवश्य कर ली है परन्तु वास्तविक शांति एवं आनन्द से दूर हो गये हैं। हमारा व्यवहार रोबोट की तरह हो गया है।

आज के मनुष्य को न खाने की सुध है तथा न आराम करने की। जीवन सत्य को समझने एवं साधना करने का उसके पास समय नहीं है। उसको सुध है तो सिर्फ एक ही बात की कि कैसे अधिक से अधिक धन बटोरा जाये तथा इसी सुध में आदमी बेसुध है कि जीवन का और भी लक्ष्य है।

वैदिक काल में मनुष्य प्रकृति का आराधक था, जीओ और जीने दो के सिद्धान्त पर चलता था, मर्यादा का पालन करता था, संयमित था तथा प्रतिदिन घर-घर में हवन किया जाता था। सभी प्राणियों के कल्याण के लिए प्रार्थना की जाती थी। वृक्षों की पूजा देवताओं की तरह की जाती थी, किसी भी प्राणी को नहीं सताया जाता था परन्तु आज मनुष्य के हृदय में दया नाम की चीज नहीं है, खान-पान हिंसा से परिपूर्ण है, मांसाहार के बढ़ते प्रचलन से 25000 पशुओं का नित्य वध किया जाता है, बुद्ध, महावीर एवं गांधी जी के इस पवित्र देश में 3600 बड़े-बड़े बूचड़खाने हैं तो फिर प्रकृति निरीह प्राणियों के वध की सजा मनुष्य को न देगी तो क्या उसको पुरस्कार देगी। वास्तव में देखा जाये तो आज के मानव ने अपने पेट को कब्रिस्तान बना दिया है। मनुष्य का प्रकृति के विपरीत आचरण ही सम्पूर्ण प्राकृतिक वातावरण को असंतुलित बना रहा है।

वस्तुत: सार रूप में मैं पाठकों का ध्यान आकर्षित करता हुआ यही निवेदन करना चाहूँगा कि वैदिक अवधारणाओं के अनुपालन से ही हम पर्यावरण को संतुलित रख सकते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे भवन्तु निरामयाः॥
सर्वे भद्राणी पश्यन्तु। माः कश्चिद् दुःख भाग भवेतः॥

उक्त प्रतिपादित मंत्र में इस बात के लिए प्रार्थना की गई है कि सभी प्राणी सुखी हों, सभी निडर बनें, किसी भी प्राणी को दु:ख न पहुंचे। यही भावना सम्पूर्ण विश्व में, प्राकृतिक संतुलन को बनाये रख सकती है, मनुष्य का इसके विपरीत आचरण तो उसको सर्वनाश की ओर ही ले जायेगा। □□□

डॉ० त्रिलोकीनाथ का निधन:-दुर्ग: बहुमुखी प्रतिभा के धनी, करीब 150 से भी अधिक अलग-अलग झुग्गी बस्तियों में बसनेवाले लाखों बच्चों एवं युवाओं के प्रिय "भापा" जी, 40 से भी अधिक प्रकाशित मौलिक पुस्ताकें एवं सैकड़ों विद्वत्तापूर्ण आलेखों के लेखक, प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति आन्दोलन के प्रणेता, उच्च कोटि के साधक, भिलाई स्टील प्लाण्ट से सेवानिवृत्त मुख्य अभियन्ता (प्रोजेक्ट एवं सुरक्षा) डॉ0 त्रिलोकीनाथ जी क्षत्रिय का देहावसान हो गया। आपकी इच्छानुसार आपका पार्थिव देह आयुर्वेद महाविद्यालय रायपुर को अध्ययनार्थ दान कर दी गया।

"वेद की आर्थिक मन्त्रणा और आधुनिक यन्त्रणा"

–देवनारायण भारद्वाज

वैदिक संस्कृति के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की परम प्रेरणाओं में मानव जीवन के चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास कीसंजीवनी विद्युत का प्रवाह गतिशील रहता है। आज के युग में यह शब्दावली आध्यात्मिक समझ कर उपेक्षित कर दी जाती है, जबकि यह नितान्त व्यावहारिक सन्देश को अपने में समेटे है। विद्यार्थी धर्म पूर्वक विद्या (ज्ञान-विज्ञान) का अध्ययन करें, और गृहाश्रम में आकर धर्मपूर्वक अर्थ का अर्जन करें। धर्म एवं अर्थ से समन्वित अपनी शुभ कामनाओं को सफलीभूत करते हुए परिवार से ऊपर उठें और असहायों की सहायता करते हुए स्वेच्छापूर्वक सभी कुछ परिवार-समाज-राष्ट्र को समर्पित करदें, और अपनी शारीरिक दशा के अनुसार जग एवं जगन्नाथ से संगतीकरण करें। वेद में इन पुरुषार्थो एवं आश्रमों का यत्र-तत्र विस्तार पूर्वक वर्णन हुआ है। पुरुषार्थ एवं आश्रम में विचित्र अर्थ साम्य दिखाई देता है–यथा सभी ओर से परिश्रम पूर्वक पुरुष होने का अर्थ। शास्त्रों का कथन है कि पशु-पादप-कीट-पतंग की लाखों योनियों का लक्ष्य होता है। मनुष्य की योनि को प्राप्त करना, अर्थात निपट भोगयोनि को पार करके भोग व कर्मयोनि मानवतन को लब्ध करना। मानवयोनि का लक्ष्य होता है मोक्षानन्द को सुलभ करना। इसी को नि:श्रयेस भी कहते हैं। नि:श्रेयस की सुलभता अभ्युदय पर निर्भर है। तात्पर्य यह किं धर्म-अर्थ-काम का उत्तम रीति से विकास करना। यही अभ्युदय है। इस अभ्युदय के बिना नि:श्रेयस सम्भव नहीं है। अर्थ-कामनाओं के अनर्थ से बचाये तथा धर्म-धारणाओं में समर्थ बनाये, यही वेद का दृष्टिकोण है। महामात्य चाणक्य ने जहाँ एक ओर अर्थ को धर्म का मूल बताया है, वहीं दूसरी ओर सभी सांसारिक कामनाओं की पूर्ति में अर्थ की वांछनीयता हर व्यक्ति हर दिन रात अनुभव करता है।

'वयं स्याम पतयो रयीणाम' (ऋ0 10/121/10) हम धनैश्वर्यों के स्वामी बने जैसी प्रार्थनाओं से वेद का मन्तव्य स्पष्ट होता है। वर्तमान में दृष्टिपात करते हैं, तो हमें धनवान तो बहुत मिलते हैं, किन्तु धनपति बहुत कम होते हैं। जो धनवान होते हैं, वे या तो धन के सेवक होते है या शत्रु। कोई तो उसे बैंक-व्यापार या शेयर बाजार में लगाता है, उसकी गणना देखभाल में लगा रहता हैं। अपने परिवार के साथ व्यतीत करने के लिए उसे समय ही नहीं मिलता। वही तो धन का सेवक है। दूसरा व्यक्ति धन कमाता-चुराता या लूट कर लाता है, और दुर्व्यसन भोग विलास में नष्ट करता है, स्वयं भी नष्ट हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को वेद अकमी दस्यु: (ऋ0 10/22/8) अकर्मण्य दस्यु या शत्रु कहता है। धन के सेवक शत्रु न बनकर स्वामी बनने के लिए वेद का प्रोत्साहन दृष्टव्य है। शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सकिर। कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह।।" (अथर्व0 3/24/5) अर्थात् मनुष्य सौ सौ सत्कार्यों से कमाये और हजार-हजार हाथों से बाँटे। इस प्रकार अपने किए हुए व किये जाने वाले कार्यों की फसल को उचित रूप से बढ़ाता रहे। दो हाथों वाला मनुष्य इतना विवेक वैभवशाली हो कि अपने साथ पचास-सौ व्यक्तियों को काम में लगाये और उत्तम उत्पादन से धन कमाये। उनको उनका उचित अंश प्रदान करे। तभी सौ हाथों की कमाई हजार हाथों से वितरित की जायेगी। 'हिरण्यहस्तो वसु नो रराण:' (अथर्व0 7/115/2) तेजस्वी चमकते हाथ से हमें रमणीय ऐश्वर्य प्राप्त हो। इसी मन्त्र में कहा है कि दुराचार से सनी हुई लक्ष्मी मुझसे प्रभु दूर हटा दें, क्योंकि वह कुलक्ष्मी वन्दना अमरबेल जैसे लिपट कर वृक्ष को सुखा देती है, वैसे ही वह मेरा पतन करने वली है।

ऐता एना व्याकरं खिले गा विष्ठिता इव।
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्या: पापीस्ता अनीनशम्।।
(अथर्व0 7/115/4)

अर्थात् अपने घर या जीवन में आयी हुई सैकड़ों प्रकार की लक्ष्मियों का मैं विवेक पूर्वक पृथक्करण करता हूँ, जैसा कि ब्रजभूमि में आई विविध प्रकार की गौओं का गोपाल किया करता है। तो पुण्य कमाई की लक्ष्मी है, वही मेरे यहाँ रमण करे-पाप से प्राप्त कुलक्ष्मी

को मैं नष्ट किये देता हूँ। यही हुई धनैश्वर्यों के स्वामी बनने की बात। धन की तीन गतियाँ शास्त्रों में बताई गयी हैं, किन्तु व्यवहार में एक गति आजकल अधिक प्रबल हो गई हैं, जिसे मिलाकर अब चार गतियाँ हो गई है, दान-भोग-निवेश-नाश। इन्हें हम उत्तम, मध्यम, अधम तथा निःकृष्ट गति का नाम दे सकते हैं। आधुनिक युग में निवेश पर बड़ा बल दिया जा रहा है। समाज के एक बड़े वर्ग की यही जीविका का साधन बन गया है। निवेश के ब्याज पर जीवन-यापन अधमकोटि का है, पर आज इसे प्रतिष्ठा मिली हुई है। समर्थ, अर्थ, अनर्थ और व्यर्थ। अपनी कमायी में से हमने जनकल्याण के सत्यकार्यों में दान कर दिया, वही हमें समर्थ बनाता है। जिसे अपने भोग में लगा लिया, वह अर्थ का अर्थ ही रहा, जितना भाग कहीं निवेश कर दिया वह 'अनर्थ' (अन+अर्थ) वह हमारे लिये काम का है भी और नहीं भी। जहाँ जमा किया वहाँ गोलमाल हो जाये, स्रोत पर कर कट जाये-बन्धित अवधि में हम ही न रहें, उत्तराधिकारी दौड़ भाग कर प्राप्त कर प्राप्त करने के जंजाल में फंसें। चौथी प्रकार वही है जो 'व्यर्थ' या नाश को प्राप्त हो जाये। चोरी, ठगी, डकैती, आमस्मिक क्षति के अतिरिक्त व्यभिचार, दुर्व्यसन, दुराचार, अनावश्यक भोग-वासना में लुटाई गयी सम्पदा 'नाश' की कोटि में ही आती है। इन सभी गतियों की अपेक्षा वेदधन को गतिशील बनाये रखने की बात कहतो है:-

ये नदीनां संस्रवन्ती उत्सासः सदमक्षिताः। तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैः धन संस्रावयामसि॥ (अथर्व0 1/15/3)

ये जो सदा चलते रहने वाले कभी न बन्द होने वले नदियों के स्रोत निरन्तर बहते रहते हैं, उन्हीं अपने सब प्रवाहों के साथ मैं अपने धन को लगातार प्रवाहित करता जाता हूँ। ठहर जाने वाला जल दूषित हो जाता है और प्रवाहित जल सदैव तरोताजा एवं शुद्ध रहता है। इसी प्रकार प्रवहमान धन बढ़ता तो रहता है, लाभप्रद भी बना रहता है। अंग्रेजी में इसी करेंसी अर्थात् धारा की भाँति बहने वाली कहते हैं, और हिन्दी में मुद्रा कहते हैं, क्योंकि निर्धारित मूल्य इस पर अंकित अथवा मुद्रित रहता है, साथ ही मुद्रा या मुद्रिका के.....गोलाकार चक्रकी भाँति यह धनराशियाँ भ्रमणशील रहती हैं। धन की 'द्रव्य' संज्ञा इसी के अनुरूप है क्योंकि वह द्रव-तरल की भाँति बहता रहता है। इस मन्त्र में आदान-प्रदान का सुन्दर निदर्शन है। नदी भूमि का सिंचन व प्राणियों की प्यास बुझाते हुए अपना जल सागर को, सागर सूरज की किरणों को, किरणें-मेघों को मेघ वर्षा को भूमि व पर्वतों पर बरसाते हुए वर्फ जमा देते हैं। यही वर्फ नदियों में पिघल कर रस-पोषण का क्रमिक चक्र चलता रहता है। मुद्रा-करेंसी-धन का ऐसा ही पोषण कारी चक्रमण होना चाहिए। नदियों में आयी अमर्यादित बाढ़ जैसे उनके तटों को तोड़कर धारा को विस्थापित कर देती है, वैसें ही भ्रष्ट धन जितना बढ़ता है। भ्रष्टाचारी भी उतनी ही शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। देखिये 'वेद की ऊहा व अभिलाषा',।

असद् भूम्याः सम्भवत द् द्यामेतिः महद् व्यचः।
तद्वै ततौ विधूपायत प्रत्यक् कर्त्तरमृच्छतु॥
(अथर्व0 4/19/6)

पाप-अधर्म भूमि से उत्पन्न होता है और वह बड़े भारी रूप में ऊँचे आकाश में फैलकर द्योलोक तक चढ़ जाता है, किन्तु कर्ता को सन्ताप देता हुआ उल्टा लौटा कर उस कर्ता पर ही आ पड़ता है। आधुनिक काल में ऐसे अनेक व्यक्तियों को समाचारपत्र नित्य प्रकाशित करते रहते हैं, जो अति साधारण जन असाधारण रूप से नीति-अनीति के बल पर शासन के उच्चतर सिंहसान पर पहुँच जाते हैं। इस ऊँचाई को बनाये रखने के लिए न जाने कितने और अनाचार, पापाचार, अत्याचार करते हैं। एक दिन उक्त मन्त्र का श्राप अपना प्रभाव दिखाता है। राजा-प्रासाद में रहने वाले व्यक्ति को एक दिन सिंहासन से उतार कर सीधे कारावास में पहुँचा दिए जाते है। इनमें तथाकथित धर्मचेता, न्याय नियन्ता, शिक्षा-विक्रेता, प्रशासन-प्रवक्ता, व्यापारकर्ता व राजनेता कौन नहीं होता है। ऊँचे पद पर पहुँचने वाले व्यक्ति घोर घृणित धन्धों में लिप्त पाये जाते हैं। धन को प्राप्त करने हेतु वेद भी प्रोत्साहित करता है, किन्तु कहता है 'अग्ने नय सुपथा राये' (यजु0 40/16) धनैश्वर्य कुपथ से नहीं सुपथ से प्राप्त हो। धनाभिलाषा की पूर्ति में हमारा मार्ग दर्शन श्रेष्ठ पुरुष करें। यथा:-

येन धनेन प्रपणं चरामि, धनेन देवा ध नमिच्छमानः। तस्मिन म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः॥ (अथर्व0 3/15/6)

अर्थात् मैं धन लगाकर पवित्र व्यापार के द्वारा धन

को और बढ़ाना चाहता हूँ। इसमें मैं परमेश्वर के साथ-साथ समाज के सुयोग्य देव पुरुषों का मार्गदर्शन भी चाहता हूँ। जिन्हें हम इन्द्र, प्रजापति, सविता, सोम, अग्नि के नाम से जानते हैं, जो हमें क्रमशः विद्युत सा चमकदार ऐश्वर्य, राजा की भाँति सुरक्षा, सूर्य की भाँति प्रेरणा व सृजनशक्ति, चन्द्र की भाँति शान्ति प्रदायिनी गुणवत्ता तथा अग्नि की भाँति उग्रता व गतिशीलता प्रदान करते हैं। जब हम पुरुषार्थ व प्रार्थना पूर्वक धन का अर्जन करेंगे, तो वह धन काला नहीं उजला बनकर आयेगा। पीढ़ियाँ बढ़ते हुए इसे बढ़ाती रहेंगी। महोपदेशक सांसद आर्यनेता पण्डित शिवकुमार शास्त्री ने अपने ग्रन्थ 'श्रुति सौरभ' में वेद के आर्थिक दृष्टि कोण को स्पष्ट करते हुए एक मन्त्र उद्धृत किया है–

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्।
वर्षिष्ठभूतये भर।। ऋ० १/८/१

हे ऐश्वर्यों के भण्डार प्रभो! हमें अपनी रक्षा-गति प्रगति आदि के लिए बाँटकर उपभोग में आने वाले, विजेता बनाने वाले, सदा स्वावलम्बी व सहिष्णु बनानेवाले, बहुत वर्षों तक टिकने व बढ़ने वाले ऐश्वर्य को सब ओर से दीजिये। मन्त्रानुसार धन का उपयोग चार प्रकार की प्रतिबद्धताओं को ध्यान में रखकर करने से वह न केवल बढ़ता है, प्रत्युत रक्षित भी रहता है। धन को न्यायपूर्वक बाँट कर उपभोग करे, सतर्क विजेता बना रहे, निरालस सहनशील व स्वावलम्बी बना रहे, और धन बढ़ता व बढ़ाता रहे। धन का स्वामी पतन से बचकर उच्च से उच्चतर स्थान प्राप्त करता रहे। "द्रविणं ममन्यात् ऋतस्य यथा नमसा विवासेत" (ऋ0 10/31/2) ऋजुता एवं सच्चाई के मार्ग पर चल कर धन के परिश्रम व निराभिमानता से कमाये। इसी मन्त्र में आगे कहा गया है "श्रेयांस दक्षं मनसा जगृम्यात्" अर्थात् उत्तम कल्याणकारी व्यवसाय को ही मनोयोगपूर्वक करे। महाभारत कालीन राजनीतिक विद्रूपताओं में उलझे हुए नीतिकार महात्मा विदुर के अनुभव को जानिये:-

धर्मेण राज्यं विन्देत धर्मेण परिपालयेत्। धर्ममूलां श्रियं प्राप्य न जहाति न हीयते।। (विदुरनीति 2/31)

राजा को चाहिये कि वह धार्मिक उपायों से राज्य को प्राप्त करे और धार्मिक साधनों से ही उसकी पूर्ण रूपेण रक्षा भी करे, क्योंकि धर्ममूलक राज्यलक्ष्मी को पाकर न वह राजा उस ऐश्वर्य को छोड़ता है और न वह ऐश्वर्य उस राजा को छोड़ता है। विदुरजी के समान नीतिज्ञ प्रधानमन्त्री की बात को राजा धृतराष्ट्र नहीं अपना सके क्योंकि वे प्रज्ञाचक्षु नहीं चक्षुहीन होकर अपने पुत्र दुर्योधन के मोहपाश में जकड़े थे। धर्मराज युधिष्ठर की नैतिकता का आकलन कीजिये जो कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में भी अपने शास्त्रास्त्रों को एक ओर छोड़कर कौरवों के प्रथम सेनापति के रूप में युद्ध के लिये उद्यत पितामह भीष्म के समीप जाकर नतमस्तक होकर कहते हैं–"हम अपने कर्तव्य-पालन की दृष्टि से युद्ध के लिए प्रस्तुत हो रहे हैं। आप हमारे पूज्य हैं– मैं आपकीअनुमति व आशीर्वाद के लिए आपकी सेवामें उपस्थित हुआ हूँ।" धर्मराज के इस शिष्ट व विनीत व्यवहार से गदगद होकर भीष्म जी बोल पड़े–"मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ ईश्वर तुम्हें विजयी बनायें।" साथ ही उन्होंने अपनी दुर्बलता-विवशता के शब्दों में अर्थ की महत्ता भी प्रकट कर दी।

अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
इति सत्यं महाराज! बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः।।
(महा0 6/41/36)

हे युधिष्ठिर! मनुष्य अर्थ का दास है। अर्थ किसी का दास नहीं। इसीलिये तुम्हें ठीक समझते हुए भी मैं दुर्योधन का पक्ष लेकर लड़ रहा हूँ, क्योंकि मेरी सब आवश्यकतायें पूरी करके कौरवों ने मुझे अर्थ से बाँध लिया है। अतः इस शरीर पर दुयोधन का अधिकार है, किन्तु आत्मपक्ष तो न्याय की डोर है, इसलिये मैं तुम्हारी विजय की कामना करता हूँ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे सत्य व न्याय के आशीर्वाद पाण्डवों को फले और वे विजयी हुए। पितामह भीष्म की मात्र एक अर्थ की ही विवशता नहीं थी, किन्तु उनके शब्दों में आज के सामान्य जन की बाध्यता बोल रही थी यथा–"बुभुक्षितं किम्न करोति पापम्" भूखा कौन सा पाप करने पर उतारू नहीं हो जाता? आधुनिक काल में तो इस भूख के एक नहीं सहस्रों मुख बन गये हैं, जो रोटी-कपड़ा-मकान ही नहीं, अब कार, कुत्ता, कोठी को भी पीछे छोड़कर पद-मान-प्रतिष्ठा की लक्ष्मण रेखाओं को भी लांघ कर वोट-चोट की सत्ता तक पहुँच गये हैं। उर्दू शायर ने सही संकेत किया है। "तंगदस्ती भी बुरी माल की कसरत भी

बुरी। बस इन्हीं बातों से ईमान बदल जाता है।।'' हाथ की तंगी दरिद्रता, थन वैभव की अधिक़ता दोनों ही बुराई की जड़ हैं, जिनसे मनुष्य के चरित्र का पतन हो जाता है। हिन्दी कवि बिहारी जी ने भी यही कहा है। ''कनक-कनक से सौ गुनी मादकता अधिकाय। या खाये बौराय जग वा पाये बौराय।।'' धतूरा व स्वर्ग दोनों को ही कनक कहते हैं। धतूरा तो खाने पर ही मनुष्य को बेहोश करता है, जबकि स्वर्ण को पाते ही मनुष्य मदहोश हो जाता है। गेहूँ का नाम भी कनक है। जो मनुंष्य भूखे होने पर दर-दर भटकते हैं, किन्तु पेट भर जाने पर वही इतराने लगते हैं, अर्थात् उन्हें ''रोटी लग गई है'' की लोकोक्ति से पहचाना जाता है। भुक्त भोगी विरक्त सम्राट भर्तृहरि की अनुभूति सुनिये:-

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डिताः स श्रुतवान्गुणज्ञः। स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते।। (नीति शतक-41)

धन प्राप्त हो गया, तो मानो वह व्यक्ति कुलीन पण्डित, गुणज्ञ विद्वान, वक्ता और दर्शनीय हो गया, अर्थात् सभी गुण स्वर्ण में निवास करते हैं। राजर्षि भर्तृहरि की भले ही तत्कालीन जगत् के प्रति यह व्यंग्योक्ति हो किन्तु आज यह वास्तविकता है। पति-पत्नि व दो बच्चों के छोटे परिवार में जहाँ स्त्री-पुरुष दोनो अच्छे कमाऊ होते हैं, वहाँ उनकी भोग लिप्सा असीमित हो जाती है। अनेक शयनकक्षों का विशाल आवास, प्रत्येक सदस्य का पृथक वाहन, प्रचुर ए०सी०, टी०वी०, वी०सी०पी०, डी०पी०डी०, सी०डी०पी०, फ्रिज इन्वर्टर और जनरेटर न जाने क्या नहीं चाहिए उन्हें। कोई विद्यार्थी या बीमार कितना ही पीड़ित हो, उनका जनरेटर तो उनकी सम्पन्नता काड़ का पीटता ही रहेगा। इसीलिये वेद ने कहा है-''हिरण्मयेन पात्रेण सत्यापि हितं मुरलम्'' (यजु0 40/17) सत्य के पात्र का मुख चमकदार सोने द्वारा ढ़का होने से मनुष्य सोने से आगे बढ़ ही नहीं पाता है। 'हिरण्ययाणि' (ऋ0 1/22/5) बनकर मनुष्य स्वयं ही स्वर्ण के आवरण को हटाकर सत्य आनन्द के शाश्वत लक्ष्य को प्राप्त करे। आज सर्वत्र स्वर्ण के समान ज्योति व चमक दिखाई देती है। जहाँ देखो वहाँ इन्द्र ही इन्द्र अर्थात् विद्युत ही विद्युत का चमत्कार है। कौन सा यन्त्र-उपकरण है जो इस विद्युत से संचालित नहीं किया जाता है। जो काम कभी हाथ अथवा हाथ की अंगुलियाँ करती थीं, मानव-मस्तिष्क करता था, वही काम अब सुपर कम्प्यूटर संकेत मात्र से कर देता है। भारत जैसे विकासशील देश विद्युत के अभाव से ग्रसित रहते हैं, कितनाही जनरेटर चलाओ यन्त्र-संयन्त्र ठप्प हो ही जाते हैं, तभी मनुष्य इन यन्त्रों की यन्त्रणा-यातना में फँसा हैं।

आज राष्ट्र के विकास का अर्थ है ऊपरी चमक-दमक को बढ़ाना। विज्ञान बहुत उपयोगी व आवश्यक है, किन्तु उसी सीमा तक जहाँ हमारा मौलिक ज्ञान भी रक्षित रहे। कहीं ऐसा न हो कि शरीर तो मोटा होता रहे, किन्तु आत्मा दुर्बल रहे। असौम्यता कामुकता-हिंसा से भरे चलचित्र, विज्ञापन, तथा महिलाओं के नग्न-फैशन प्रदर्शन बालकों की मानसिकता को कुप्रभावित करते चले जाते हैं। घर-बाहर सर्वत्र चरित्र का पतन चरम परिणति पर पहुँच चुका है। किसी युग का वह नेवला जिसका आधा शरीर सोने का था, महाभारत कालीन युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ के बृहद भोज की जूठन में लोटता फिर रहा था। किसी ने उससे प्रश्न किया-अरे नेवले इधर-उधर जूठन में जहाँ अतिथियों के भोजनोपरान्त हाथ धोये जा रहे हैं-क्यों लोट लगाता फिर रहा है? उसने अपने पुराने युग की चर्चा करते हुए उत्तर दिया। तब एक निर्धन ब्राह्मण द्वारा अतिथि को खिलाये सत्तू की जूठन में मेरा आधा शरीर स्वर्ण का हो गया था। सोंचा था कि शेष आधा शरीर इस महाभोज की जूठन में सोने का हो जाता, किन्तु मैं निराश ही रह गया। हे नेवले तू आज नहीं हुआ, नहीं तो तेरे स्वर्णभाग को लेने के लिए लोग तेरी हत्या ही कर देते। जहाँ लोग दुर्घटना ग्रस्त असहाय रोते-बिलखते कराहते स्त्री-पुरुष के बच्चों के शरीर को नोच कर आभूषण खींच लेते हों, और हर अत्याचार कर अबोध बालकों का अपहरण करके प्रतिष्ठित होते हों, वहाँ कौन सी यन्त्रणा सम्भव नहीं हैं। इन यन्त्रणाओं से वैदिक मन्त्रणा ही हमं बचा सकती है। अन्यथा पापाचार से धन कमाने वाले यदि इतना ध्यान करलें ''स चेत्ता देवता पदम्'' (ऋ0 1/22/5) वही सर्वज्ञ सचेतक ईश्वर सभी का पूज्यतम देव है, हमारे सभी कार्यों को गुप्तरूप से देखने वाला हैं, उसके स्वर्णकर कृपाण कर बनने में भी समर्थ हैं। बात बढ़ती न जायें, इसलिये उप संहारस्वरूप वेदान्त के दो मन्त्रों का स्मरण मात्र कराते हुए वक्तव्य को

विराम देना समीचीन समझता हूँ:-

ईशा वास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

(यजु0 40/1-2)

अर्थात् जो व्यक्ति आस्तिक हैं। वे ईश्वर को सर्वत्र व्याप्त जान कर उससे डरते हैं और समझ ते हैं कि वह सर्वत्र उन्हें देख रहा है। जो कुछ भी उन्हें मिला है, वह सभी उसी का दिया हुआ है। वे अन्याय-अत्याचार से किसी का कुछ भी द्रव्य ग्रहण करना नहीं चाहते हैं। वे त्याग पूर्वक भोग द्वारा इस लोक में अभ्युदय एवं परलोक में निःश्रेयसरूप आनन्द के अधिकारी होते हैं। ऐसे व्यक्ति कर्तव्य कर्म करते हुए ही सौ या न्यूनाधिक वर्षों तक जीने की इच्छा करते हैं। इन व्यक्तियों को अधर्म युक्त अवैदिक कर्म भी लिपायमान नहीं करते हैं। विद्वान जन सम्पूर्ण गीता को इन्हीं दो मन्त्रों का मनोरम व्याख्या ग्रन्थ मानते है।

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा॥
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्म फले स्पृहा।
इति मां योऽभि जानाति कर्मभिर्न स बध्यते॥

(श्रीमदभगवतगीता 4/12-14)

योगिराज कृष्ण ने इन श्लोकों में सार रूप में यही उपदिष्ट किया है कि मनुष्यलोक में लोग देवताओं के प्रति पूजा की भावना से कर्मों की सिद्धि की कामना करते हैं, तो वह उन्हें शीघ्र प्राप्त हो जाती है, उन्हें कर्मों का लेप भी नहीं होता है, क्योंकि उन्हें कर्मफल में आसक्ति नहीं होने से वे कर्मों के बन्धन में नहीं पड़ते हैं। लेखक के एक सेवा निवृत वरिष्ठ अभियन्ता मित्र की अन्तिम श्वांस निकलते-निकलते योग्य युवा चिकित्सक ने बचा ली, और उन्हें नवजीवन दे दिया। घर पर जब लेखक उन्हें देखने गया, तब विश्राम शैया से फोन पर उनकी बात चल रही थी। वे सुन कम बोल अधिक रहे थे। बोले कुर्सी खींच कर बैठ जाइये। अच्छी पेंशन के अतिरिक्त भी उनकी भरपूर नियमित आय है। पुत्र-वधु एवं पुत्र की मासिक आयस्रोतों का बखान तो उन्हीं के मुख से अच्छा लगता है। इतने पर भी जमा किये गये शेयरों से सम्बन्धित वार्ता देर तक चलती रही, और मैं प्रतीक्षा करता रहा। जब यह बात प्रोफेसर ज्ञानेन्द्र वसिष्ठ को बताई गयी, तो उन्होंने एक हास्य प्रसंग ही सुना दिया। कि एक धनवान सज्जन को सरसाय रोग हो गया। बहुत तेज ज्वार 106 डिग्री फा0 तक पहुँच गया। डॉक्टर औषधि उपचार एवं बर्फ लगाकर उनकी चिकित्सा करने में लगे थे। वे मूर्छित थे। जब 106 से उतर कर उनका ज्वर 104 पर पहुँचा, तब सभी तीमारदार व डॉक्टर प्रसन्न हाकर बोल पड़े 104 हो गया है। इस बीच वे ध नवान सज्जन भी होश में आ गये, और इस 104 की संख्या को सुनकर सन्तुष्ट होकर उन्होंने चर्चा का स्पष्टीकरण किया। बोले अच्छा शेयर का मूल्य बढ़कर 100 से 104 हो गया है। डॉक्टर ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा-नहीं शेयर के मूल्य चढ़ने की बात नहीं है। आपका ज्वर 106 से 104 पर उतरने की बात है। यह सुनकर वे धनवान सज्जन फिर से बेहोश हो गये। यही तो अर्थ का अनर्थ है जिसे वेदानुसार समर्थ बनाया जा सकता है।

-वरेण्यम एम०आई०जी०, प्लाट 45,
फेज प्रथम, अवन्तिका कालोनी रामघाट रोड अलीगढ़

आवो गले मिलें

-नरेश हमिलपुरकर

नित निरंतर प्रीत के पथ पर हम चले
हर घर-आंगन में, प्रेम के दीप जलें
आवो असम्भव को आज, सम्भव बनायेंगे
सुख, समृद्धि रहे सदा, ऐसे काम करलें
कल की चिन्ता छोड़ कर आवो झूमे-गायें
शुभ ही शुभ होगा, सारी दुनिया देखले
भेद जाति, धर्म, भाषा, प्राँत को भूल कर
हर गली-गाँव में खुशियों के सजायें मेले
गैर यहाँ कोई नहीं, सारे भाई-बहन हैं
आवो सारे देश को, एक परिवार बनालें
द्वेष, घृणा दूर हो, अहंकार का अंत हो
अज्ञान, आतंक का आज ही सूरज ढले
एकता, अखंडता को बनाये रखेंगे हम
आज से दिखायेंगे हम, सारे जग से हैं भले

-चिटगुधा-५८५४२१ बीदर (कर्नाटक)

शत्रुओं पर विजय

—महात्मा प्रभुआश्रित महाराज

अथर्ववेद के एकादश कांड सूक्त 10 में शत्रु सेना पर विजय प्राप्त करने का आदेश है। इस सूक्त में युद्ध का वर्णन है। यह युद्ध तो सेनाओं के द्वारा किया जाता है अपने राज्य को बढ़ाने के लिए। यह युद्ध स्वार्थ के लिये होता है, उसमें सहस्रों लाखों का छल, कपट आदि से रक्तपात कर अथवा मूर्छित कर विजय प्राप्त कीजाती है। इससे हमें कोई प्रयोजन नहीं। यह युद्ध पृथ्वी पर होता है। एक संग्राम मन में हो रहा है। जो संग्राम मन में हो रहा है, हमें तो उसे ध्यान में रखना है। पृथिवी पर पराधीनता की लड़ाई है, यह आसुरी संग्राम है, इससे दूसरों को दुख होता है। तोपों की गरज होती है, शंख बजते हैं और सभी को भयभीत कर देते हैं।

एक देवी संग्राम है, जो परमेश्वर के आकाश में देवताओं के दरम्यान हो रहा है व हमारे कल्याण के लिए है। वह लड़ाई है इन्द्र की, वह हमारे कल्याण के लिए है। बिजली चमकती है, मेघ छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। वर्षा होती है और हमारे क्षेत्र हरे-भरे होकर हमें खाद्य पदार्थों से भरपूर कर देते हैं।

ठीक इसी प्रकार एक संग्राम हमारे मन में होता है जिसे देवासुर संग्राम का नाम भी दिया जाता है। हृदयावकाश में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी शत्रु विद्यमान हैं जिनसे मन प्राय: घिरा रहता है।

शत्रुओं के युद्ध के प्रकार :–

शत्रु तीन प्रकार के युद्ध करते हैं–

1. एक वह जो सम्मुख होकर आक्रमण करते हैं।
2. दूसरे वह जो छिपकर वार करते हैं।
3. तीसरे वह जो दूर से शस्त्र प्रक्षेपण द्वारा प्रहार करते हैं।

सामने के शत्रु हमारे विषय हैं। एक रूपवान स्त्री अथवा चमकता हुआ धन सामने आया, काम और लोभ रूपी शत्रुओं ने तत्काल आक्रमण कर दिया। मन को परास्त कर दिया और आत्मा को गिरा दिया। सुन्दर शब्द सुन, मन आत्मा को उधर ले गया। इसी प्रकार संसार के विषय सामने आते हैं और आक्रमण करते हैं, इनको जीनते के लिए 'त्रिसंधि' का दैवी हथियार है। बाहर के शत्रुओं को ज्ञान से जीतें। ज्ञान एक बड़ा शस्त्र है। जब ज्ञान हो जायेगा, तो मनुष्य सावधान हो जायेगा, यह विषय आक्रमण नहीं कर सकेंगे। यह ज्ञान सत्संग द्वारा गुरुओं से प्राप्त होगा।

दूसरे छिपकर वार करने वाली हमारी वासनाएं हैं, पता नहीं लगता, जब उठती हैं तत्काल ही भटका देती है। इनका शस्त्र ध्यान है। ध्यान वासानाओं को दग्ध कर देता है।

तीसरा शत्रु वह है जो दूर से हम पर प्रहार करता है, वह है अहंकार। इसका हथियार है नमस्कार। नमस्कार करें झुककर और निष्काम कर्म करें यही 'त्रिसंधि' है।

दिन में दो समय संधि हैं, जब प्रकाश और अन्ध कार मिलते हैं। वह समय है प्रात: काल और दूसरे सायंकाल। उषाकाल की संधि जगाती है और आलस्य से छुड़ाती है, सायंकाल की संधि थके हुए को विश्राम दिलाती है। हम शरीर के ऊपर कवच रक्षा के लिए ध ारण करें, ऐसा कवच जो बाहर के हथियार से रक्षा करे और अन्दर से बचाव करे। यह कवच है ब्रह्मवर्चस।

महात्मा बुद्ध जा रहे थे और सामने से दूर एक मनुष्य ने नमस्कार किया। भूमि पर मस्तक टेका। महात्मा जी ने उसे आशीर्वाद दी। उसने सिर उठाया। महात्मा जी ने पूछा कि तुमने दूर से क्यों नमस्कार की, समीप आकर क्यों नहीं की? मुझे भय था कि आप अशुद्ध न हो जावें? उसने कहा कि मैं हाथीवान हूँ। जंगलों में मेरे पूर्वज रहते थे और मैं भी वहीं रहता हूँ। कागज की हस्तिनी बनाकर गढ़ा खोदकर छलकपट से हाथियों को पकड़ते हैं फिर उन्हें भूखा रखते हैं, कमजोर बलहीन करते हैं और फिर बेचते हैं। यह नीच कर्म में करता हूँ।

महात्मा बुद्ध ने कहा कि मैं भी यही काम करता हूँ। उसने कहा कि आपके पास जंगल और हाथी कहाँ? महात्मा जी ने कहा कि वह समस्त संसार जंगल है। वह सामने हाथी जा रहे हैं। उसने कहा यह तो मनुष्य जा रहे हैं। महात्मा जी ने उत्तर दिया कि मनुष्य तो हाथी से भी बुरा है। हाथी-हाथी को कभी नहीं

मारता परन्तु मनुष्य तो मनुष्य को भी मार देता है। मनुष्य सबको सिंह, बाघ की तरह चीड-फाड़ देता है। संघ बनाकर दूसरों पर आक्रमण करता है, अभिमान में उन्मत्त है। मैं इन उन्मत हाथी रूपी मनुष्यों को बांधता हूँ। कैसे? स्वर्ग-नरक का भयानक रूप दिखाकर उनके पापों की चीर-फाड़ करते हैं। नाना प्रकार के व्रत कराकर संसार के विषयों से भूखा रखते हैं। उनके शरीरों और मनों को बलहीन करते हैं, तब वह बंध जाते हैं और फिर परमेश्वर के पास उन्हें बेच देते हैं। यह सुनकर वह फिर चरणों में गिर पड़ा। काक, बिच्छु, कुत्ते आदि नीच जाति के पशु के विषयों के भोग के लिये मनुष्य सिंह, बघियाड़, हाथी, सर्प, बिच्छू बन जाते है। ऐसे दूषित निंदित कार्य करने से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो मनुष्य का सुधार कैसे हो?

इसका कवच है ब्रह्मवर्चस। प्रश्न है कि यह ब्रह्मवर्चस कहां से मिलेगा जो मनुष्य को घटने न दे, गिरने न दे और संसार के विषयों से रक्षा भी करे। बाह्य विषयों तथा आन्तरिक वासनाओं से रक्षा करे। यह ब्रह्मवर्चस ही त्रिसंधि है, यही कवच है इसी से ज्ञान, ध्यान प्राप्त होता है।

ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति :-

जो संसार से ऊंचा उठना चाहते हैं वह ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति के लिये हवन करते हैं। यदि ब्रह्मवर्चस नहीं तो मुक्ति नहीं मिल सकती है और सब कुछ करते हुए पता नहीं लगेगा।

बुद्धि भ्रष्ट हो जाने पर वासनाओं का हम पर प्रहार होता है। भ्रष्टबुद्धि को सद्बुद्धि में परिवर्तित करने के लिए गायत्री महामन्त्र है। इसका काम है अहंकार और क्रोध से रहित कर देना। क्रोध इच्छा पूर्ति के अभाव में होता है और अहंकार कामनाओं के तृप्त हो जाने पर उद्भव होता है इसलिए परमेश्वर ने बताया कि गायत्री जाप करो। गायत्री सुबुद्धि, सिद्धि और वरों के देने वाली है। सिद्धि विशेष शक्ति और देने का नाम है। यह सिद्धि प्रेरणा देती है और ऐसी योग्यता जो प्रेरणाओं को समझ सके। गायत्री पावमानी पवित्र करने वाली है।

एक व्यक्ति पढ़ा हुआ नहीं परन्तु उसके हाथ में शफा है। अर्थात् जिसकी वह चिकित्सा करता है, वह स्वस्थ हो जाता है। लोग कहते हैं कि उसे वर मिला हुआ है। कइयों को अन्न का वर मिला हुआ है, उनके द्वार से कोई भूखा नहीं जाता।

वर से मनुष्य को विशेष शक्ति प्राप्त होती है जिससे वह सब कार्यों में सिद्धि प्राप्त करता है। जिस प्रकार प्रभु ने सूर्य के प्रकाश में आंख देखने को दे दी, इसी प्रकार गायत्री माता परमेश्वर की धाराओं और प्रेरणाओं को समझने की योग्यता दे देती है। जो बालक शब्द को नहीं समझता, माता उसे कभी आवाज देकर नहीं जगायेगी। स्वयं जाकर उसे जगायेगी, जो शब्द को समझता है उसे जाकर प्रेरणा देकर उठायेगी।

परमेश्वर हमको कैसे उठाये? जो अबोध हैं उनको नहीं उठाता। जो समझदार हैं उन्हें प्रेरणाओं से उठाता है। मन्त्र जाप से प्रेरणाओं के समझने की शक्ति और योग्यता पैदा हो जाती है। इसे कहते हैं 'प्रचोदयन्ताम्'।

गायत्री मन्त्र शब्दों में है, यह कैसे प्रेरणा देता है? मन्त्र तो जड़ हैं जिस प्रकार अमेरिका पाकिस्तान को अस्त्र-शस्त्र की सहायता दे रहा है, इससे पाकिस्तान का साहस बढ़ गया है। अमेरिका राज्य कर्मचारी दे रहे हैं, जो चेतन हैं। इस प्रकार मन्त्र तो जड़ है परन्तु इसका देवता 'सवितः देव' तो चेतन है। वही प्रेरणा देता है और नाम मन्त्र का होता है इससे भारत भूमि स्वर्गभूमि है क्योंकि इसमें देवता वास करते हैं, नाम भूमि का होता है।

गायत्री का देवता सवितः—है, जो लक्ष्य रखकर उस देवता की उपासना करते हैं, परमेश्वर उसकी वैसी बुद्धि अर्थात् आत्मबल देता है। □□□

वीरेश प्रातप चौधरी को 'दिल्ली रत्न' सम्मानः—नयी दिल्ली, नागरिक परिषद, दिल्ली के अध्यक्ष, आर्य अनाथालय संस्थाकुल के संचालक श्री वीरेश प्रताप चौधरी को यहां अखिल भारतीय बुद्धिजीवी सभा (आल इंडिया कान्फ्रेन्स आफ इन्टेलेक्चुअल्स) के 28 वें वार्षिक सम्मेलन में 'दिल्ली रत्न' सम्मान से अलंकृत किया गया। प्रशस्ति पत्र में कहा गया कि यह सम्मान पांच दशक से शिक्षा, समाजसेव, और दलित उपेक्षित तबकों की उन्नति में उनके योगदान के लिए दिया गाता है।

कहां से चले थे–कहां आ गए हम

–आचार्य योगेश शास्त्री

आजादी का तात्पर्य है अपने अधिकार, कर्त्तव्यों एवं सम्पत्ति की विधिवत् सुरक्षा, संरक्षा करते हुए, उस पर अपना पूर्णाधिकार होना। अब से 63 वर्ष पूर्व इस देश की आजादी के लिए अनेकों देवियों ने अपने सिन्दूर को, माताओं ने अपनी गोद को सूना, बहिनों ने अपनी राखी को, वीरों ने अपनी उठती जवानियों को राष्ट्रहित में इन भावनाओं के साथ बलिदान किया कि–

ओ मेरे बेटे तुम्हें कल सुबह फाँसी दी जायेगी, मैं इसलिए नहीं रो रही हूँ। किन्तु हे पुत्र! मैं इसलिए रो रही हूँ कि भगवान् ने मुझे एक ही पुत्र दिया है। किन्तु आगे जब भारत माता बलिदान मांगेगी तो मेरे पास भेंट चढ़ाने को और कुछ न होगा। (रामप्रसाद विस्मिल की माँ)

यह सोच कर कि सात करोड़ मुसलमान भारतवासियों में मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ, जो भारत मां की स्वतन्त्रता के लिए फांसी चढ़ रहा हूँ। मन ही मन स्वाभिमान का अनुभव कर रहा हूँ–**असफाक उल्ला खां।**

वीर सावरकर ने भारत की आजादी के लिए लगातार 50 वर्ष जेल की सजा भुगती, उसमें कोल्हू चलाने का भी काम उन्होंने किया।

जिस I.C.S. की उच्चतम पदवी, मोटी तनखाह व ऐश्वर्य के लिए भारत व इंग्लैण्ड के हजारों युवक लालायित थे, उसे त्यागकर वीर सुभाषचन्द्र बोस स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए विदेश जाकर लड़ते रहे।

क्रान्तिवीर मदनलाल ढींगरा ने इंग्लैण्ड में अपनी फाँसी के समय कहा था–मेरी इच्छा है कि मैं इसी भारत में पुनर्जन्म धारण करूँ।

भारत के प्रथम उपप्रधान मंत्री लौहपुरुष सरदार बल्लभाई पटेल की सूझबूझ युक्ति व दृढ़ निश्चय ने सैकड़ों स्वतन्त्र रियासतों को देश में विलयकर एक संगठित भारत हमें दिया। क्या इसलिये कि स्वतन्त्र भारत में भारतीय प्राचीन परम्पराओं को तार-तार कर इस देश की भावी पीढ़ी को उससे दूर करने की शिक्षा खुलेआम दी जायेगी? ये कैसी आजादी है जिसमें अपनों को अपनों से ही दूर किया जा रहा है? प्रस्तुत तथ्यों को देख प्रतीत होता है कि आज संस्कृति, इतिहास सहित बिरासत को ही ताक पर रख वैदिक संस्कृति एवं आर्यावर्त राष्ट्र को समूल नष्ट करने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है।

१. वैदिक काल में विशिष्ट अतिथियों केलिए गोमांस का परोसा जाना सम्मान सूचक माना जाता था। (कक्षा 6, प्राचीन भारत, पृष्ठ 35, लेखिका रोमिला थापर)

२. महमूद गजनवी ने मूर्तियों को तोड़ा और इससे वह धार्मिक नेता बन गया।

(कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान भाग-1, आधुनिक भारत, पृष्ठ 166, लेखक–अर्जुनदेव, इन्दिरा अर्जुनदेव)

३. महावीर १२ वर्षों तक जहाँ-तहाँ भटकते रहे। १२ वर्ष की लम्बी यात्रा के दौरान उन्होंने एक बार भी अपने वस्त्र नहीं बदले।

(कक्षा 11, प्राचीन भारत, पृष्ठ 101, लेखक–रामशरण शर्मा)

४. जाटों ने गरीब हो या धनी, जागीरदार हो या किसान, हिन्दू हो या मुसलमान–सबको लूटा।

(कक्षा 12, आधुनिक भारत, पृष्ठ 18-19, विपिन चन्द्र)

५. रणजीत सिंह ने अपने सिंहासन से उतरकर मुसलमान फकीरों के पैरों की धूल अपनी लम्बी सफेद दाड़ी से झाड़ी थी। (कक्षा 12, पृष्ठ 20, विपिन चन्द्र)

६. आर्य समाज ने हिन्दुओं, मुसलमानों, पारसियों, सिखों और ईसाइयों के बीच पनप रही राष्ट्रीय एकता को भंग करने का प्रयास किया।

(कक्षा 12, आधुनिक भारत, पृष्ठ 183, लेखक–विपिन चन्द्र)

७. तिलक, अरविन्द घोष, विपिनचन्द्र पाल और लाला लाजपतराय जैसा नेता उग्रवादी तथा आतंकवादी थे। (कक्षा 12, आधुनिक भारत, विपिन चन्द्र पृष्ठ 208)

८. ४०० वर्ष ईसा पूर्व अयोध्या का कोई अस्तित्व नहीं था। महाभारत और रामायण कल्पित महाकाव्य हैं। (कक्षा 11, पृष्ठ 107, मध्यकालीन इतिहास, आर. एस. शर्मा) –शेष पृष्ठ 35 पर

कहां है वे निष्पक्ष, निर्भीक विचारक?

–हरिकृष्ण निगम

सारी दुनियां में भारत शायद अकेला देश है जहां आज अंग्रेजी लेखन से जुड़े कुछ ऐसे विचारक है, जिनकी हीनता ग्रन्थि इतनी स्पष्ट और मुखर है कि वे किसी न किसी रूप में बराबर कहते हैं कि देश का अतीत उनके मन में गर्व या विस्मय नहीं, बल्कि वितृष्णा पैदा करता है। देश के भूतकाल के प्रति संशय या अविश्वास पश्चिम की अपसंस्कृति के प्रति आत्मसमर्पण की कायरता से और बढ़ गया है। इस व्याप्त अनास्था में उनका स्वार्थ या सुविधावादी दृष्टि भी मिली हुई है। ऐसी आत्मग्रस्त मानसिकता देश की जड़े कुतर रही है, क्योंकि वे दो नावों पर सवार हैं। यही वे लोग हैं, जो ईमानदारी नैतिकता, देश प्रेम जैसे अनेक सामाजिक मूल्यों को अब निम्न मध्यवर्ग के जीवन मूल्य कहकर तिरस्कृत करते हैं या उनका मखौल उड़ाते हैं। साथ ही ऐसे लोग हिन्दी या भारतीय भाषाओं के समस्त लेखन को सांस्कृतिक पिछड़ेपन या ठहरे हुए पानी जैसा रुग्ण क्षेत्र मानते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नोबेल पुरस्कार विजेता वी.एस.नयपाल आज अरसे से देश की इस त्रासदी पर खुलकर लिख रहे हैं। वे पहले मूल के लेखक हैं, जिन्होंने हमारे देश के राजनीतिज्ञों व बुद्धिजीवियों को सन् 1992 में बाबरी मस्जिद के विध्वंस पर अपराध भावना दिखाने के लिए खुलकर फटकारा। हमारे देश की राजनीति लीपापोती करने में माहिर है, ऐसा वे मानते हैं। अयोध्या विवाद को वे सदैव सभ्यताओं के द्वन्द्व के प्रतीक के रूप में देखते थे और उन्होंने इसे एक हजार साल से भारत की मानसिक दासता के स्वाभाविक प्रतिशोध के रूप में देखा। यह किसी भी हताहत सभ्यता के पुर्नजागरण के समय-चक्र का परिणाम था न कि भूमि विवाद या जमीन का एक मामूली टाइटिल सूट। यह भारत के सबसे बड़े सांस्कृतिक प्रतीक का प्रश्न था कि अयोध्या जो बहुसंख्यकों के अर्न्तमन में रचा बसा है, उसे इतिहास की पुरानी त्रुटि को ठीक करने के लिए, बिना छिछली राजनीतिक बहस का हिस्सा बनाए हुए, हिन्दुओं को सौंपा जाता। इस स्थल को स्वेच्छा व खुले दिल से वापस कर अतीत में हुए हजारों मन्दिरों के ध्वंस के कारण राष्ट्रीय अर्न्तमन पर लगे घाव को एक क्षण में भरा जा सकता था। यद्यपि पिछली पीढ़ियों के किसी रुख के लिए आज की पीढ़ी जिम्मेदार नहीं कही जा सकती है पर अल्पसंख्यकों की वर्तमान पीढ़ी शायद अगली सदियों तक अपार सद्भावना की स्वाभाविक हकदार बन सकती थी यदि आज वह ऐसी दरियादिली दिखाती। सन् 1992 के विध्वंस के बाद

सन् १९९२ के विध्वंस के बाद लगभग हर राजनीतिक अवसर पर लगभग हर दल अल्पसंख्यकों से माफी मांगता दीखता है। आज के आधुनिक इतिहास में किसी भी मुस्लिम संगठन ने अतीत में गिराये मन्दिरों के लिए दुख प्रकट किया है? यहाँ तक कि बाबरी के विध्वंस के बाद प्रतिक्रिया स्वरूप हजारों मन्दिरों के साथ बंगलादेश में ढाका का प्राचीनतम ढाकेश्वरी मन्दिर जला दिया गया था; उसके समाचार भी सिर्फ पश्चिमी मीडिया से होकर छपे थे। भारत की स्थिति यह है कि हम अपने देश की हर चीज को संशय ही नहीं उपेक्षा से तब तक देखते हैं जब तक उसे पश्चिम से अनुमोदन न मिले। यह बात नयपाल लगातार कहते आ रहे हैं और हाल में पिकाडर नामक प्रकाशन गृह द्वारा ५९७ पृष्ठों के उनके प्रकाशित निबन्ध संग्रह जिसका शीर्षक है 'लेखक और विश्व' में भी यही बात रेखांकित की गई हैं उन्होंने कहा है कि हर भारतीय जो अपनी प्राचीन, अविच्छिन्न और सदियों की उथल पुथल के बाद भी बची हुई सभ्यता पर गर्व करता है।

लगभग हर राजनीतिक अवसर पर लगभग हर दल अल्पसंख्यकों से माफी मांगता दीखता है। आज के आधुनिक इतिहास में क्या किसी भी मुस्लिम संगठन ने अतीत में गिराये मन्दिरों के लिए दुख प्रकट किया है? यहाँ तक कि बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद प्रतिक्रिया स्वरूप हजारों मन्दिरों के साथ बंगलादेश में ढाका का प्राचीनतम ढाकेश्वरी मन्दिर जला दिया गया था। उसके बारे में माफी तो दूर हमारे देश में उसके समाचार भी सिर्फ पश्चिमी मीडिया से होकर छपे थे। भारत की स्थिति यह है कि हम अपने देश की हर चीज को संशय ही नहीं उपेक्षा से तब तक देखते हैं जब तक उसे पश्चिम से अनुमोदन न मिले। यह बात नयपाल लगातार कहते आ रहे हैं और हाल में पिकाडर नामक प्रकाशन गृह द्वारा 597 पृष्ठों के उनके प्रकाशित निबन्ध संग्रह जिसका शीर्षक है 'लेखक और विश्व' में भी यही बात रेखांकित की गई है उन्होंने कहा है कि हर भारतीय जो अपनी प्राचीन, अविच्छिन्न और सदियों की उथल पुथल के बाद भी बची हुई सभ्यता पर गर्व करता है। आज खुद उसका स्वयं शिकार होता जा रहा है उनका तात्पर्य यह है कि जब तक उन्हें विदेशी प्रमाणपत्र न मिल जाए या कोई पश्चिमी बुद्धिजीवी सत्यापित न कर दे वे स्वयं अपने को अपूर्ण महसूस करते हैं। चाहे वह देश की वैकल्पिक चिकित्सापद्धति आयुर्वेद हो या योग, ध्यान, वैदिक गणित अथवा परम्परिक खान पान की चीजें हों या कोई पुरानी विरासत हम तभी जाते है जब पश्चिमी देश या अमेरिका में उन्हें स्वीकृति मिले। इस विषय में नयपाल का मत अत्यन्त स्पष्ट है और वे डंके की चोट से संशयग्रस्त भारतीय बुद्धिजीवियों की भर्त्सन करते हैं। यहाँ तक कि जब कुछ विचारकों ने उन पर 'हिन्दू तत्ववादियों' को खुश करने वाली बातें कहकर आरोप लगाया, वे उत्तेजित होकर कहते हैं कि उनका नैतिक दायित्व सिर्फ सत्य कहना है कि हमारे यहाँ के साधु सन्त और विचारक भी लगातार पहले भारत के बाहर अनुमोदन ढूंढ़ते हैं। यह उनके दृष्टिकोण या उनकी मान्यता पर निर्भरता देश के आत्मासम्मान के लिए घातक है। हमारे देश में स्थानय निर्णयों का कोई महत्व नहीं है। ''बिना विदेशी'' चिट के भारतीय अपने देश के यथार्थ को सत्यापित भी नहीं कर सकते है। नयपाल इस स्थिति को आत्मविश्वास की कमी के कारण मानते हैं। आज देश की हर दक्षता, कौशल और विचारभूमि जो आधुनिक भारत का घोषित आदर्श है वह यदि कहीं दूसरी जगह पर भी विद्यमान है, उसकी हममे नकल करने की ललक है ''नयपाल ने कहा। कुछ उदाहरण दिए है।'' सरकार और प्रशासन के क्षेत्र में भारत में वेस्टमिंस्टर माडेय में ही सारे हल ढूंढे जाते हैं। इसी तरह कुछ प्रगतिशील कहलाए जाने वाले विचारकर पश्चिम के 'न्यू स्टेट्समैन' की सिर्फ शैली की नकल नहीं, उस पत्रिका के टाइहनों की भी हूबहू नकल अपने प्रकाशनों में करते हैं। नयपाल ने जोर देकर कहा कि भारतीय समस्याओं को सुलझाने के लिए आयातित विचार पर्याप्त नहीं है। वे कहते हैं कि सारे अंग्रेजी शब्दकोशों या अंग्रेजी भाषी विश्व में 'सेकुलरिज्म' शब्द का अर्थ भिन्न है जबकि भारतीय राजनीति के सन्दर्भ में यह उल्टा ही है और विपक्षियों पर मात्र प्रयोग करने का भोंथरा अस्त्र है। पश्चिमी देशों में इसका मतलब लौकिक, ऐहिक या जो कुछ धार्मिक है उसका विपरीत है जबकि भारत में अधकचरे राजनीतिज्ञों ने इसे पूरी तरह विकृत कर डाला है क्योंकि यहां एक प्रतिद्वन्द्वियों पर अपशब्दकी तरह प्रयुक्त किया जाता है। नयपाल अपनी नई चिन्ताओं में, जहाँ चारों ओर दुनियाँ जल रही है, मानवीय संकट को लगातार रेखांकित कर रहे हैं। उनके विचार में राजनीति के मुहावरे और शब्दावली अपना अर्थ खो चुके हैं। वे पश्चिमीकरण से बचाव के स्थान पर हमारे देश द्वेष के लोगों को राष्ट्रीय अस्मिता के संरक्षण पर बल देने का अधिक महत्व देते हैं। यह स्थिति ही हमें दुनियाँ की धाराओं में समरस होना सिखा सकती है। –मुम्बई (महराष्ट्र) □□□

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें।

–सम्पादक

इतिहास पृष्ठ

कुरुराज धृतराष्ट्र

महाराज धृतराष्ट्र जन्मान्ध थे। वे भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य तथा विदुर की सलाह से राज्य का सञ्चालन करते थे। उन्हें कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान था, किन्तु पुत्र मोह के कारण बहुधा उनका विवेक अन्धा हो जाता था और वे बाध्य होकर दुर्योधन के अन्याय पूर्ण आचरण का समर्थन करने लगते थे। जब दुर्योधन के दुष्कर्म का कुफल सामने आता, तब वे तटस्थ होने का दिखावा करते थे। सत्यासत्य का विवेक छोड़कर पुत्र के ऊपर अन्धवात्सल्य रखनेवाले पिता की जो गति होती है, वही गति अन्त में धृतराष्ट्र की भी हुई। उन्होंने अपने सामने पुत्रों की अति दर्दनाक मृत्यु देखी।

धृतराष्ट्र परोक्षरूप से पाण्डवों से जलते थे। पाण्डवों के बढ़ते हुए ऐश्वर्य और बल को वे सह नहीं सकते थे। दुर्योधन ने पाण्डवों को छलपूर्वक नीचा दिखाने के उद्देश्य से उन्हें जुआ खेलने के लिये बुलाना चाहा और धृतराष्ट्र ने बिना सोचे-समझे इसके लिये अनुमति दे दी। जब विदुर ने जुआ खेलने के दोषों और परिणाम को बताकर इस दुष्कृत्य का विरोध किया, तब धृतराष्ट्र ने कहा–'विदुर! यहाँ मैं, भीष्म तथा सभी लोग हैं। देव ने ही द्युत का निर्माण किया है। इसलिये हम इसमें कुछ नहीं कर सकते। मैं दैव को ही बलवान् मानता हूँ और उसी के द्वारा ये सब कुछ हो रहा है।' द्यूत में जब द्रोपदी दाँव पर रखी गयी, तब भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य और विदुर के सहित सारी सभा स्तब्ध रह गयी, पर धृतराष्ट्र बहुत प्रसन्न हुए और बार-बार पूछने लगे–'कौन जीता, कौन जीता!' धृतराष्ट्र के लिये इससे बड़ी निन्दनीय बात और क्या हो सकती थी। यदि सर्वसंहारक महाभारत-युद्ध का मुख्य कारण धृतराष्ट्र को मानें तो इसमें कोई गलती नहीं है, क्योंकि यदि वे भीष्म, विदुर आदि की बात मानकर दुर्योधन को नियन्त्रित करते तो महाभारत के महायुद्ध को रोका जा सकता था।

महाभारत के कई स्थानों पर धृतराष्ट्र में मानवता के उत्कृष्ट रूप का भी दर्शन होता है। द्रौपदी के साथ पाण्डवों के विवाह की बात सुनकर धृतराष्ट्र ने अहोभाग्य! अहोभाग्य! कहकर आनन्द प्रदर्शित किया तथा विदुर को भेजकर पाण्डवों को बुलवाया। पाण्डवों से मिलकर उनमें आत्मीयता जाग्रत हुई। उन्होंने युधिष्ठिर से कहा–'मेरे दुरात्मा पुत्र दम्भ और अहंकार से भरे हैं। वे मेरा कहना नहीं मानते हैं। इसलिये तुम आधा राज्य लेकर खाण्डवप्रस्थ में निवास करो।' श्री कृष्ण ने भी धृतराष्ट्र के इस विचार को सर्वथा उत्तम तथा कौरवों की यश वृद्धि करने वाला बतलाया।

सभापर्व में महाराज धृतराष्ट्र ने द्रोपदी के सन्दर्भ में दुर्योधन को फटकारा और द्रोपदी को सान्त्वना देते हुए कहा–'बहू द्रोपदी! तुम मेरी पुत्र-बधुओं में सर्वश्रेष्ठ और धर्मपरायणसती हो। तुम्हारी जो इच्छा हो मुझ से वर माँग लो।' यह सुनकर द्रोपदी ने युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव को दासभाव से मुक्त करा लिया। महाराज धृतराष्ट्र श्री कृष्ण के अन्तरंग भक्त भी थे। वे केवल पुत्र मोह में पड़कर दुर्योधन के अन्यायों का निराकरण न करने के कारण ही दोष के भागी बने। युद्ध के अन्त में कुछ दिन हस्तिनापुर में रहने के बाद उन्होंने अपने जीवन का शेष समय अपनी पत्नी गान्धारी के साथ भगवान् की आराधना में व्यतीत किया। महाराज धृतराष्ट्र ने अन्त में दावाग्नि में भस्म होकर अपने अनित्य देह का त्याग किया।

□□□

–शेष पृष्ठ 32 का

९. वीर पृथ्वीराज चौहान मैदान छोड़कर भाग गया और गद्दार जयचन्द्र गोरी के खिलाफ युद्धभूमि में लड़ते हुए मारा गया। (कक्षा 11, मध्यकालीन, भारत, प्रो. सतीशचन्द्र)

१०. औरंगजेब जिन्दा पीर थे। (मध्यकालीन भारत, पृष्ठ 316, लेखक–प्रो.सतीश चन्द्र)

११. राम और कृष्ण का कोई अस्तित्व ही नहीं था। वे केवल काल्पनिक कहानियाँ हैं। (मध्यकालीन भारत, पृष्ठ 245, रोमिला थापर)

ऐसे दर्जनों आपत्तिजनक बिन्दु और भी हैं जो स्पष्ट प्रदर्शित करते हैं कि इस देश का नेतृत्व आज भी पूरी तरह से मानसिक गुलामीं में फंस कर देश को विदेशियों के हाथों गिरवी रख देना चाहता है।

हमें तो अपने ने लूटा है, गोरों में कहा दम था।
किस्ती वहाँ डूबी, जहां पानी कम था।।

(आर्य विद्यान कलकत्ता से साभार)

शाकाहार अधिक पौष्टिक व गुणकारी

आधुनिकता की होड़ में अपने, सम्यक् आचार-विचार को दकियानूसी कहने वाले इस झूठी धारणा के शिकार हो रहे हैं कि शाकाहारी भोजन से उचित् मात्रा में प्रोटीन अथवा शक्तिवर्धक उचित् आहार प्राप्त नहीं होता। यह मात्र भ्रान्ति है। आधुनिक शोध कर्ताओं व वैज्ञानिकों की खोज से यह स्पष्ट पता लगता है कि शाकाहारी भोजन से न केवल उच्चकोटि के प्रोटीन प्राप्त होते हैं, अपितु अन्य आवश्यक पोषक तत्व-विटामिन, खनिज, कैलोरी आदि भी अधिक प्राप्त होते हैं। सोयाबीन व मूँगफली में मांस व अण्डे से अधिक प्रोटीन होता है। सामान्य दालों में भी प्रोटीन की मात्रा कम नहीं होती। गेहूँ, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि के साथ उचित् मात्रा में दालें एवं हरी सब्जियों का सेवन किया जाये तो न केवल प्रोटीन की आवश्यकता पूर्ण होती है, अपितु अधिक सन्तुलित आहार प्राप्त होता है, जो शाकाहारी व्यक्ति को मांसाहारी की अपेक्षा अधिक स्वस्थ्य, सबल दीर्घायु प्रदान करता है। मांस का तो अपना कोई स्वाद नहीं होता, उनमें तो मसाले, चिकनाई आदि अन्य अनेकों पदार्थ मिलाए जाते हैं, उनका ही स्वाद होता है जबकि शाकाहारी पदार्थों फल, सब्जी, मेवे आदि में अपना अलग स्वाद होता है और बगैर किसी मसाले आदि के स्वाद से खाये जाते हैं।

यह कहना कि मांसाहार शाकाहार कीतुलना में शक्तिवर्धक है, एक गलत धारणा है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रीशन, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित "Nutritive Value of Indian Foods" में विभिन्न खाद्य पदार्थों की जो तालिका दी गई है, जिसमें से कुछ प्रमुख पदर्थों की तुलना नीचे दी जा रही है, जिससे पाठक्गण रुचि अनुसार मांसाहार से भी अधिक पौष्टिक शाकाहरी भोजन चुन सकते हैं:-

प्रतिशत (प्रति १०० ग्राम में)

पदार्थ का नाम	प्रोटीन	कार्बो०	फैट०	फाइबर०	मिनरल्स	कैरोरीज
गेहूँ	12.1	69.4	1.7	1.9	2.7	341
जौ	11.5	69.6	1.3	3.9	1.2	336
बाजरा	11.6	67.5	5.0	1.2	2.3	361
मक्का	11.1	66.2	3.6	2.7	1.5	342
चना	17.1	60.9	5.3	3.9	3.0	360
चावल	13.5	48.4	16.2	4.3	6.6	393
सोयाबीन	43.2	20.9	19.5	3.7	4.6	432
राजमा	22.9	60.6	1.3	4.8	3.2	346
उड़द	24.0	59.6	1.4	0.9	3.2	347
लोबिया	24.1	54.6	1.0	3.8	3.2	323
मूँग	24.0	56.7	1.3	4.1	3.5	334

शहद खाओ सेहत बनाओ

शहद या मधु इंसान को प्रकृति का अनमोल वरदान है। भारत में इसे सभी धार्मिक रीति-रिवाजों, सामाजिक कार्यक्रमों में भी जरूर इस्तेमाल किया जाता है। यह बेहद पौष्टिक भी होता है। इसमें विटामिन, कार्बोहाइड्रेट, अमीनो एसिड, प्रोटिन और खनिज पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं तथा ग्लूकोस और फ्रक्टोस पाया जाता है। इसमें पाये जाने वाले विटामिन और शुगर काफी सुपाच्य होते हैं। यह किसी गुणकारी औषधि से कम नहीं, जो न सिर्फ कई बीमारियों से बचाती है बल्कि इसका इस्तेमाल सौंदर्य प्रसाधन की तरह भी किया जाता है।

कैसे करें पहचान :-असली शहद खुशबूदार होता है। गर्मी में यह पिघलने लगता है और कम तापमान

में जम जाता है। शुद्ध शहद को यदि किसी बर्तन में गिराया जाये तो यह सांप की कुंडली की तरह गिरता है। जबकि अशुद्ध शहद बर्तन में फैल जाता है। शहद की खासियत होती है कि यह वर्षों तक खराब नहीं होता और न ही इसमें कीड़े पड़ते हैं।

फायदे :–

- ✦ बच्चों को अदरक के रस में शहद मिलाकर देने से खांसी में आराम मिलता है।
- ✦ उल्टी आ रही हो पुदीने के रस में शहद मिलाकर खाने से फौरन आराम मिलता है।
- ✦ सूखी खांसी में शहद और नीबूं का रस समान मात्रा में लेने पर फायदा होता है।
- ✦ शहद खाने से मांसपेशियां मजबूत होती हैं।
- ✦ कब्ज में टमाटर या संतरे के रस में एक चम्मच शहद मिलाकर खाने से लाभ होगा।
- ✦ सोने से पहले रात में एक गिलास दूध में शहद डालकर पीने से दुबलापन दूर होता है।
- ✦ अगर ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) बढ़ जाये तो शहद के साथ लहसुन का सेवन फायदा करेगा।
- ✦ शहद की मिठास इसमें पाई जाने वाली शर्करा (शुगर) की वजह से है। इस शर्करा में ग्लूकोज और फ्रक्टोस बराबर मात्रा में पाया जाता है। थकान के समय इसे खाया जाये तो यह तत्व सीधे रक्त में अवशोपित होकर ऊर्जा प्रदान करता है।
- ✦ शहद के सेवन से हीमोग्लोविन बढ़ता है। इसके नियमित सेवन से एनीमिया की बीमारी जाती रहती है।
- ✦ जुकाम में शहद, अदरक और तुलसी के पत्तों का रस बराबर मात्रा में मिलाकर चाटने से राहत मिलती है।
- ✦ हल्के गर्म पानी में शहद और नींबू मिलाकर पीने से वजन काबू में रहता है।
- ✦ शहद को गर्म पानी में पकाने से उसके औषधीय गुण खत्म हो जाते हैं।
- ✦ दो चम्मच शहद में दालचीनी का पाउडर मिलाकर जोड़ों में मसाज करने से आर्थराटिस मरीजों को लाभ मिलता है। □□□

बसन्तोत्सव और सीताष्टमी पर्व आयोजनः–

नई दिल्ली समाज सेविका श्रीमती शकुन्तला आर्या 'पूर्व महापौर दिल्ली' जो एक सिद्ध साहित्य सर्जिका भी है की अध्यक्षता में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला पारम्परिक आयोजन एक बार फिर पंडित हरिशरण सिद्धान्तालकार पार्क, ए–ब्लाक, लाजपत नगर–दो में सम्पन्न हुआ।

स्वामी आर्यवेश जी ने श्रीमती शकुन्तला आर्या के नेतृत्व में दक्षिण दिल्ली आर्य महिला विभाग के कार्यो को भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए माता सीता और वीर हकीकत राय को श्रद्धा सुमन समीर्पत किए। विशिष्ट अतिथि वैद्य इन्द्रदेव वरिष्ट पत्रकार अजय भल्ला तथा डॉ0 साधना आचार्या ने समारोह में भरी संख्या में उपस्थित नर–नारियों को सम्बोधित करते हुए बसन्त के सौन्दर्य, परम्परा और परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला।

सुशील मुनि आश्रम की आचार्या डॉ0 साधना ने कहा कि लेखक किसी भी राष्ट्र की सम्पत्ति माने जाते हैं, क्योंकि वे समाज को दिशा–दर्शन व मार्ग–दर्शन का कार्य करते हैं। श्रीमती शकुन्तला आर्या ने डेड़ दर्जन से अधिक पुस्तकें लिख कर नारी जाति को सम्मानित किया है। समारोह में अपनी पूरी टीम के साथ पधारी शहीद, माता श्रीमती सुभाष 'कण्व' के पावन सानिध्य से जन–जन, श्रद्धावनत हो उठा और जाफना के शहीद डॉ0 अश्विनी 'कण्व' के शौर्य, त्याग और बलिदान की सराहना की गई।

सभा का संचालन स्वयं शकुन्तला जी कर रही थी। आयोजन स्थल अपने आप में अशोक वाटिका का दृश्य साकर कर रहा था। यश से आरम्भ होकर अनेक तरह के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की छटा विखेरता हुआ यह आयोजन विभिन्न विद्यालयों, आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली तथा आशा भारती पब्लिक स्कूल की कला प्रवीण छात्राओं के प्रदर्शन से अलंकृत हुआ। श्रद्धांजलि सभा के उपरान्त निर्धनों को कम्बल बांटे गये। गरम–गरम हलवा तथा बिस्कुटों का प्रसाद वितरण किया गया। अन्त में शान्ति पाठ के साथ यह अभिनव आयोजन सम्पन्न हुआ तो जन समूह मानों स्वपन से जाग उठा, और संकल्प किया कि अगले वर्ष भी इस आयोजन में शामिल होकर स्वपन लोक की सैर करेंगे।

–शकुन्तला नांगिया, मन्त्रिणी
दक्षिण दिल्ली आर्य महिला विभाग

अपसंस्कृति का प्रसारक हैं क्रिकेट का खेल

—अशोक कौशिक

चिन्तक, लेखक, व्यंग्यकार, नाट्यकार और कवि ज्योर्ज बर्नाड शॉ की न केवल इंगलैंड में अपितु समस्त विश्व में ख्याति थी। 1960 के दशक में देश (दोनों भारत और इंगलैंड) की दुर्गति करता हुआ जब क्रिकेट गतिमान हो रहा था उस समय क्रिकेट पर अपनी टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा था–'बाइस लोगों द्वारा बाईस सौ (उस समय क्रिकेट देखने वालों की यही संख्या सर्वाधिक मानी जाती थी) लोगों को मूर्ख बनाये जाने वाला खेल है क्रिकेट।'

आठ दश वर्षों के अन्तराल में कुछ क्रिकेटर रिटायर होते रहते हैं तो उनके स्थान पर उतने ही या उससे अधिक नये क्रिकेटर आ जाते है। इस प्रकार खेलने वालों की टीम तो 22 की ही रहती है किन्तु क्रिकेटरों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होते रहने से सभी देशों में मुख्य टीम के अतिरिक्त, जैसे भारत में रणजी ट्रौफी आदि की तरह अनेकानेक टीमें और प्रायोजक संस्थान खड़े हो जाते हैं यहां तक कि मन्त्रालयों की भी अपनी-अपनी टीमें बनी हुई हैं। क्रिकेट पर धन लुटाने वालों की भी संख्या रिनंतर बढ़ती जाती है। क्रिकेटर किसी प्रकार का परिश्रम किये बिना, किसी प्रकार की पूंजी लगाये बिना, हानि होने की भी किसी आशंका के भय से सर्वथा मुक्त, नव-धनाढ्यों की संख्या में निरन्तर वृद्धि तो करते रहते हैं किन्तु उस धन से किसी भी देश और जाति को लाभान्वित होते नहीं देखा गया है।

अत्यन्त रोचक तथ्य यह है कि यह नव-धनाढ्य वर्ग अपने धन का विनिवेश भी किसी विधायक कार्य या उद्योगधन्धे में नहीं करता। भारत में तो, कम से कम हमने नहीं देखा कि किसी क्रिकेटर ने अपने धन का विनिवेश किसी विद्यालय, महाविद्यालय, चिकित्सालय, धर्मशाला, गोशाला आदि समाजोपयोगी अथवा धार्मिक कार्यों में किया हो या किसी सुनामी, भूचाल, अकाल, अवर्षा, अतिवर्षा आदि के विनाश से त्रस्त जनों की सेवा के कार्य में किया हो। इसके अपवाद हो सकते हैं किन्तु सामान्यता ऐसे किया गया हो, जग-जाहिर नहीं है। यहां तक कि किसी ने शायद ही कभी प्रधानमंत्री राहत कोश अथवा ऐसे किसी परोपकारी संस्थान में सहयोगी किया हो। क्रिकेट मैचों के आयोजक, प्रायोजक और प्रशंसकों की बुद्धि को क्या कहा जाय जो किसी खिलाड़ी के एक छक्के पर ही करोड़ रुपया तक न्योछावर कर देते हैं। उस रुपये का कुछ भी सदुपयोग नहीं होता, यह तो महज धन का दुरुपयोग है। भारत में जहां एक ओर जनसामान्य भूख, बेरोजगारी, कुपोषण, अपोषण, सूखा, अकाल, शीत और ताप आदि के कारण लाखों की संख्या में काल के गाल में समा रहे हैं वहाँ केवल अंगुलियों पर गिने जाने वाले लोग मनोरंजन के नाम पर एक प्रकार से दर्शकों की आंखों में धूल झोक कर नव-धनाढ्यों की संख्या में वृद्धि कर रहे हैं।

क्रिकेट कल्चर में सांस लेने वाले किसी भी व्यक्ति को किसी शुभकार्य में लिप्त होते, किसी शुभस्थान पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते भी किसी ने शायद ही देखा हो। न केवल इतना अपितु नागरिकों को अन्धा बना कर की गई अन्धी कमाई से ये नव-धनाढ्य कोई उद्योग-धन्धा भी करेंगे तो कैसा? पब खोलना, रेस्टोरेंट खोलना, सिनेमा खोलना जैसे धन का अपव्यय करने कराने वाले धन्धों में धन लगा कर।

क्रिकेटरों का रहन-सहन तो पाश्चात्यानुकरणशील ही होता है और खान-पान वैसा ही होता है। मांसाहार और मद्यपान के बिना तो कदाचित क्रिकेटर्स को खाया-पिया जैसा कुछ लगता ही नहीं होगा। इतना ही नहीं, वर्तमान में भारतीय टीम के विदेशी कोच तो कदाचित टीम के सदस्यों को परामर्श देते हैं कि खिलाड़ी अपनी वासना की तृप्ति कर खेल के मैदान में उतरेंगे तो इससे उनकी शक्ति, स्फूर्ति और साहस (स्टेमिना) बना रहेगा। तब वे अच्छा प्रदर्शन कर सकेंगे। वे भली भाँति जानते हैं कि टीम के वर्तमान कप्तान और अन्य अनेक खिलाड़ी अविवाहित हैं। तो क्या उन्हें अपनी वासना की तृप्ति के लिये वैश्यागामी अथवा परस्त्रीगामी बनना ही था? इस परामर्श का अभिप्राय है व्यभिचार को प्रोत्साहन देना। क्या भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने इस पर ध्यान दिया है?

टीम के वर्तमान कप्तान महेन्द्रसिंह धोनी जब टीम में सम्मिलित हुए थे और अपने चौकों तथा छक्कों के

कारण चर्चित होने लगे थे तो उन दिनों जब उनसे उनके खान-पान के विषय में पूछे जाने पर उन्होंने दूध को अपना मुख्य आहार बताया था। किन्तु क्या अब भी वे उसी पर स्थिर हैं? इस विषय पर न अब कोई चर्चा होती है और न किसी अन्य खिलाड़ी ने उनके अनुकरण पर स्वयं दुग्धाहार अपना कर करिश्मा कर दिखाने की ही घोषणा की है। प्रत्येक खिलाड़ी विज्ञापनों का माडल बनने के लिये लालायित रहता है बिना सोचे-समझे किसी भी उत्पाद के विज्ञापन का मॉडल बन जाता है। जबकि पूर्व में एक चर्चित बैटमिंटन खिलाड़ी, पुलैला रामचन्द्र, ने कोका-कोला का विज्ञापन करना अस्वीकार कर दिया था, क्योंकि वह जानते थे कि कोका-कोला मानव शरीर के लिये, हानिकारक है। क्या किसी क्रिकेट खिलाड़ी का भी ऐसा उज्ज्वल चरित्र सुना गया है? एक विदेशी क्रिकेट खिलाड़ी तो बहुपत्नीवादी बना और एक भारतीय सिने-तारिका युवती को अपने मोहपाश में आबद्ध कर उसे मदरमरियम की भाँति कुंवारी मां का पद प्रदान कर दिया। कहा जा सकता है कि हर कोई ऐसा नहीं होता, किन्तु कोई-कोई तो ऐसा होता ही है, भले ही उसका यह कुकृत्य जग-जाहिर नहीं हो पाता।

क्रिकेटर्स का जीवनोदेश्य तो कभी लोकोपकार रहा नहीं, न इसका उद्देश्य शुद्ध मनोरंजन ही रहा, क्रिकेट को व्यायाम भी नहीं कहा जा सकता है। केवल भारत में ही नहीं अपितु अपने उद्गमस्थल, युरोप में भी इसको इन रूपों में कभी नहीं देखा गया। यह सब कुछ खेल माना गया है। जिसे हम खेल शब्द के साथ भी खिलवाड़ ही मानते हैं।

क्रिकेट का असर सर्वाधिक विद्यार्थियों पर पड़ रहा है। प्रारम्भिक कक्षाओं से ले कर स्नातकोत्तर कक्षाओं तक के विद्यार्थी इससे प्रभावित होते हैं। न केवल विद्यार्थी ही अपितु सामान्य जन-जीवन को भी क्रिकेट प्रभावित करता है। नगरों में ही नहीं, कस्वों में ही नहीं, अपितु ग्रामों में भी अब इसका कुप्रभाव देखने को मिलने लगा है। नगर की कोई सड़क, कोई गली, कोई मैदान, कोई बाग-बगीचा ऐसा नहीं जहां बालक से लेकर युवक तक क्रिकेट खेलने में व्यस्त रह कर जन-जीवन को अस्त-व्यस्त ही नहीं अपितु त्रस्त न करते हों। यही स्थिति कस्बों और ग्रामों की भी है। कोई भी इस त्रासदी से अछूता नहीं रहा।

क्रिकेट का कोई मौसम विशेष भी नहीं है। हर मौसम में इसके मैच आयोजित किये जाते हैं। सामान्यतया मार्च में ही हर स्थान पर विद्यार्थियों की परीक्षायें ली जाती हैं। किन्तु विद्यार्थी अक्टुबर से फरवरी तक होने वाले क्रिकेट मैंचों पर अपना ध्यान केन्द्रित किये हुए हों, वे विद्यार्थी मार्च की परीक्षाओं में किस प्रकार सफलता प्राप्त कर सकते हैं? वे फिर चाहे एक दिन मैंच हों अथवा पांच दिनी, सब में विद्यार्थी का तो सारा दिन ही नष्ट हो जाया करता है। यही दशा कामकाजी जनों की भी होती है। चिकित्सालय, कार्यालय, विद्यालय, कारखाना, मिल यहां तक कि दुकान, सब स्थानों पर लोग एकत्रित तो काम अथवा विद्यार्थी पढ़ाई के लिये होते हैं किन्तु दिन बीतता है क्रिकेट की चर्चा में। उन दिनों में दुकानों पर ग्राहकों का आना-जाना भी बाधित सा ही रहता है।

क्रिकेटरों की सभ्यता कायह आलम है कि जीत का जश्न मनाने के लिये शैम्पेन कीदर्जनो बोलत खोली जाती हैं, केवल उनको अपने साथियों और समीपस्थ लोगों के ऊपर उड़ेलने के लिये। पीने के लिये तो न जाने कितनी खुलती होंगी। कपड़े उतार कर हुड़दंग मचाया जाता है। ''गांगुली मोशाय' तो कदाचित इसके लिये दण्डित भी किये जा चुके हैं। यह अपसंस्कृति नहीं है तो क्या है?

अमेरिका अभी इससे थोड़ा बचा हुआ है। बच्चों ने तो वहां भी आरम्भ कर दिया है किन्तु अभी अमेरिकन टीम नाम की किसी टीम का नाम नहीं सुनाई दे रहा है। यही स्थिति रही तो वह समय दूर नहीं जब वह भी इसके जाल में फंस जायेगा। अमेरिका भी इसकी लपेट में आ जाय, इससे पूर्व यह उचित होगा कि अपसंस्कृति प्रसारक इस खेल नामक हुड़दंग पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय। यह प्रतिबन्ध किसी एक देशव्यापी नहीं अपितु विश्व व्यापि होना चाहिये।

'पतन्जलि योगपीठ' और 'भारत स्वाभिमान' के ट्रस्टी, अध्येता और चिन्तक तथा अनुसन्धाता श्री राजीव दीक्षित ने योगपीठ की एक गोष्ठी में इस तथ्य का उद्घाटन किया कि 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' ने जब अपने शासनकाल में भारत के 565 देशी राज्यों से अंग्रेजी भाषा में लिखित, जिसे उस समय जानने पढ़ने वालों की संख्या भारत में 0.01 प्रतिशत से भी कम थी, 'मैत्री संधि' नामक दुरभिसंधियां कीं थीं, उसमें सौराष्ट्र के एक

राज्य के साथ की गई इस सन्धि में अन्तिम शर्त यह रखी गई थी कि यदि महाराज अथवा राज्य की टीम ईस्ट इंडिया कं0 की टीम से पराजित हो जाय तो राज्य पर ईस्ट इंडिया कं0 का अधिकार हो जायेगा। किन्तु उस दुरभिसन्धि में इसका कुछ भी उल्लेख नहीं था कि यदि राज्य की टीम की विजय हो जाये तो उसका परिणाम क्या होगा। परिणाम तो वही हुआ जिसके विषय में कम्पनी ने पहले ही सोचा हुआ था, अर्थात् राज्य की टीम की पराजय। इस प्रकार वह राज्य ईस्ट इंडिया कं0 के अधिकार में चला गया।

क्या इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि, कम से कम भारत में तो यह देश-घातक ही नहीं अपितु मानवता घातक भी सिद्ध हो रहा है। अत: भारतीयों को उचित है कि वे क्रिकेट को प्रतिबन्धित करने का प्रबल आन्दोलन चला कर कार्य की सिद्धि तक उस पर दृढ़ रहें और क्रिकेट खेलने पर प्रतिबन्ध लगवा कर ही अपने कर्तव्य के पालन का श्रेय अर्जित करें। ऐसे ही अवसरों के लिये किसी उर्दू शायर ने कभी लिखा था–

जिस खेत से इर्शा को मयस्सर न हो रोटी,
उस खेत के गोशाये गदम को जला दो।।

–पूर्व सम्पादक, आर्यजगत् (साप्ताहिक), नई दिल्ली.

गोघृत के उपयोग से रोग निवारण

–बलिराजसिंह

श्यामा गाय के घृत के प्रयोग से मैंने स्वयं अनेक दु:खी व्यक्तियों को रोग मुक्त होते देखा है। इससे गठिया, कुष्ठरोग, जले तथा कटे घाव के दाग, चेहरे की झाँई, नेत्र-विकार, जलन, मुंह का फटना आदि पर आश्चर्यजनक लाभ होता है।

इसी प्रकार की एक घटना है। कुछ वर्ष पूर्व एक व्यक्ति को गठिया रोग हो गया। रुग्ण व्यक्ति स्वयं सम्पन्न थे और उनके यहां सौभाग्य से एक श्यामा गाय थी। उस गाय को एक माह तक हरे चारे के अतिरिक्त ढाई-ढाई सौ ग्राम की मात्रा में गेहूं, गुड़, कच्ची गरी, कच्ची मूंगफली, आमा हल्दी, चना, सफेद दूध, बेल की पत्ती, महुआ, सेंधा नमक, सफेद नमक तथा अजवाइन और मैथी 50-50 ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से एक माह तक खिलाया गया। गर्मी का समय था, अत: गाय को अत्यन्त स्वच्छ वातावरण में रखकर दोनों समय नहलाया-धुलाया जाता था। प्रात: और सायं थोड़ा गुड़ खिलाकर तीसरे दिन से निकाले गये उक्त गाय के दूध से ग्रामीण पद्धति के अनुसार गोहरीकी आंच पर मिट्टी के पात्र में पकाये गये दूध से दही तैयार कर उसका घी निकाला गया और इसी घी की मालिश से हफ्ते भर में गठिया गायब हो गया। इस घटना से आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता हुई और उस घी का प्रयोग कई लोगों पर किया गया। जिसमें शत-प्रतिशत सफलता मिली। मेरे एक मित्र की ऑपरेशन के दौरान नाक में हफ्तों नली पड़ने के कारण आवाज चली गयी थी। प्रयास करने के बावजूद 15-20 दिन बाद भी वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे। मजबूर होकर वे अपनी बातें कागज पर लिख देते थे। तीन-चार दिन गले में उक्त घी की मालिश करते ही उनकी आवाज खुलने लगी और 8-10 दिन में वे पूर्ववत बोलने लगे।

दूसरी घटना एक युवक से सम्बन्धित है। प्रिन्टिग मशीन से दबकर उसके बायें हाथ की हथेली तथा कई अंगुलियां बुरी तरह फट गयीं। अंगूठा तो कटकर अलग हो गया। तत्परता से ऑपरेशन एवं दवा के बाद दो-ढाई माह में जब उसका हाथ ठीक हो गया तो चमड़ के तनाव और ऑपरेशन के दाग से उसकी अंगुलियां खुल नहीं पाती थीं और पूरी हथेली बदूसरत लग रही थी। इस घी की मालिश से महीने भर में ही शेष चारों अंगुलियां और हथेली पूर्ववत् हो गयीं और ऑपरेशन का दाग एक सामान्य रेखा के रूप में शेष रह गया।

इसी प्रकार की एक और घटना है। वाराणसी नगर के एक सम्भ्रान्त परिवार की सुशील एवं सुन्दर कन्या के गले में जगह-जगह सफेद दाग हो जाने से पूरा परिवार चिन्तित था। लड़की स्वयं हीन भावना के कारण उदास दिखायी देती थी। उनके आग्रह पर उस लड़की को श्यामा गाय का वही घृत लगाने के लिये दिया गया। महीना बीतते-बीतते सफेद दाग के स्थान पर लाली आने लगी। और दूसरे माह में उसकी त्वचा एक रंग की हो गयी। उसे देखकर कोई कह नहीं सकता कि गले में कभी कोई दाग था।

इसी प्रकार जोड़ों में दर्द, नेत्र-सम्बन्धी विकार, चोट, सूजन, फोड़े-फुंसी आदि अनेक विकारों से पीड़ित अनेक लोगों का उक्त घृत से उपचार किया गया, जिसमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई। ❑❑❑

करूँ मैं दुश्मनी किससे:

एक महात्मा थे, वर्ष में एक या दो मास के लिए किसी एकान्त स्थान में चला जाता था, अपने-आपको प्रभु के चरणों में अर्पण कर देने के लिए। अपने साथ आटा, कुछ दाल और घी, छोटा-सा बिस्तर, थोड़े से कपड़े लेकर किसी जंगल में जाकर पत्तों की कुटिया बना कर। उसमें रहने लगता था। दिन में एक बार दो रोटियाँ बनाकर खा लेता था। शेष समय अपने मन में अपने प्रभु के दर्शनों का प्रयत्न करता था।

एक बार घर से तैयारी करके जिला काँगड़ा के जंगल में जा पहुँचा। हवन किया। इसके पश्चात् मौन धारण करके अपने कार्य में रत हो गया। मन के रोगों को देखने लगा। इन्हें दूर करने का यत्न करने लगा। परन्तु एक दिन, दो दिन, तीन दिन बीत गए। चित्त को शान्ति नहीं मिली। मैंने दु:खी होकर भगवान् से कहा–"प्रभो! यह क्या बात है: तेरे द्वार पर आकर भी मेरे चित्त में शान्ति क्यों नहीं?" दु:खी बैठा रहा।

अगले दिन प्रात: पाँच बजे स्नान करके फिर से भजन करने के लिए बैठा तो विचित्र बात हुई। ऐसा विदित हुआ, जैसे भीतर से एक ध्वनि पुकार रही है। स्पष्ट सीधे शब्दों में उसने कहा–"व्यर्थ है तेरा भजन! व्यर्थ है तेरा आत्मचिन्तन! लाहौर में एक पुरुष है,उससे तू घृणा करता है। जब तक यह घृणा तेरे हृदय में रहेगी, तब तक मन को शान्ति नहीं मिलेगी। भजन में जी लगाना चाहता है तो जा, उससे पहले क्षमा माँग। इस घृणा को त्याग दे, जो तेरे मन में है।"

मैंने इस ध्वनि को सुना तो अशान्ति का कारण जैसे सजीव होकर मेरे सामने खड़ा हो गया। उसी समय उसने अपना बिस्तर लपेटा, घर में वापस आया तो फिर घर वाले विस्मय में थे कि यह इतना शीघ्र घर कैसे आ गया: किन्तु उसने किसी से बात नहीं की। सामान रखा और सीधे उस सज्जन के घर गया। उनके मकान पर जाकर पुकारा। वह पुकार सुनकर बाहर आये, आश्चर्य से बोले–"आप?"

उसने पगड़ी उतारकर उसके चरणों में रख दी, बोला–" मैं क्षमा माँगने आया हूँ। मुझे क्षमा करना होगा।"

वह आश्चर्य करने लगा कि इसे क्या हो गया, उसने कहा–"आश्चर्य में मत पड़ो। मैं जंगल में अज्ञातवास के लिए गया था। वहीं से अन्तरात्मा की अर्न्तध्वनि हुई। मैं आत्मा-चिन्तन छोड़कर सीधा यहाँ आ गया। आप क्षमा नहीं करेंगे, तो मेरे चित्त को शान्ति नहीं मिलेगी।"

यह सुनते हीउसकी आँखों में आँसू आ गये। अपने सीने से लगा लिया उन्होंने मुझको। वे भी रोये, मैं भी रोया, परन्तु इस रोने से घृणा की अग्नि शान्त हो गई। वह वापस जंगल में गया, वहाँ भजन में बैठा तो चित्त में अपार आनन्द हुआ। फिर चित्त नहीं लगे, ऐसी बात नहीं हुई। कई लोग उसके पास आते हैं, कहते हैं–हमारा भजन करने को जी नहीं चाहता। अरे भोले बच्चो! जी लगे किस प्रकार? तुमने स्वयं हीतो ईर्ष्या और घृणा की अग्नि दहका रखी है। बुझा दो इसे! जी अवश्य लग जायेगा।

करूँ मैं दुश्मनी किससे, अगर दुश्मन भी हो अपना।
मुहब्बत ने नहीं दिल में जगह छोड़ी अदावत की।।

गोरक्षा न हुई तो

–राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

दांतों तले तृण दबाकर, हैं दीन गायें कह रहीं।
हम हैं पशु तो तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही?
हमने तुम्हें माँ की तरह, है दूध पीने को दिया।
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया।।
हा! दूध पीकर भी हमारा, पुष्ट होते हो नहीं।
तुम खून पीना चाहते हो, तो यथेष्ठ है वही सही।
नर-योनि हो, तुम धन्य हो, तुम जो करो थोड़ा वही।।
क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं बलहीन हैं।
मारो कि पालो कुछ करो तुम, हम सदैव अधीन हैं।।
प्रभु के यहाँ से भी कदाचित्, आज हम असहाय हैं?
इससे अधिक अब क्या कहें, हा! हम तुम्हारी गाय हैं।।
बच्चे हमारे भूख से, रहते समक्ष अधीर हैं।
करके न उसका सोच कुछ, देती तुम्हें हम क्षीर हैं।।
चरकर विपिन से घास, फिर आती तुम्हारे पास हैं।
होकर बड़े वे वत्स भी, बनते तुम्हारे दास हैं।।
जारी रहा क्रम यदि यहाँ, यों ही हमारे नाश का।
तो अस्त समझो सूर्य, भारत-भाग्य के आकाश का।।
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ण-भारत-भूमि बस, मरघट महीं बन जायेगी।।

अद्वैतवाद पर स्वामी रामदेव का कथन : एक विश्लेषण

–आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

अभी कुछ दिनों पूर्व शंकराचार्य की प्रसिद्ध उक्ति ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'' का खण्डन स्वामी रामदेव जी ने अपने एक वक्तव्य में कर दिया फलस्वरूप पौराणिक जगत् के अनेक विद्वान् लामवन्द हो गए। एक चैनल ने तुरन्त ही दोनों पक्षों के बीच बहस का कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें विश्व हिन्दू परिषद के सुप्रसिद्ध नेता आचार्य धर्मेन्द्र जी (जयपुर) सहित कुछ अन्य पुराणमतावलम्बी साधुओं ने स्वामी जी को न केवल खेद व्यक्त करने को बाध्य ही किया अपितु शंकराचार्य की प्रतिमा पर उनसे माल्यार्पण भी करवा लिया।

स्वामी रामदेव जी क्योंकि महर्षि दयानन्द के अनुयायी हैं और आर्यजगत् के सर्वमान्य तपस्वी संत पूज्य आचार्य (स्वामी) बलदेव जी के शिष्य हैं अत: यह समस्त घटनाक्रम आर्यजनों के लिए विशेष महत्व रखता है।

आचार्य धर्मेन्द्र जी उस बहस कार्यक्रम में अत्यन्त आक्रामक ढंग से सामने आये अत: हम उनके प्रति पूरे सम्मान के भाव रखते हुए विनम्र निवेदन करना चाहते हैं कि उनके पूज्य पिता महात्मा रामचन्द्र वीर जी ने ''हिन्दू धर्म की महत्ता और उसकी रक्षा के 18 संकल्प सूत्र'' शीर्षक से गौवंश की रक्षा के लिए 1966-67 में दिल्ली की तिहाड जेल में 127 दिन के अनशन के उपरांत एक लेख लिखा था इसमें ''हिन्दुओं का धर्मयुद्ध'' उपशीर्षक के अन्तर्गत वे लिखते हैं–

भारत में उन दिनों अद्वैतवादी संन्यासी लाखों की संख्या में घूम घूम कर ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'' का प्रचार करके देश की रक्षा करने वाले ब्राह्मणों और क्षत्रियों को उत्साह से हीन, विरक्त और अकर्मण्य, कायर बना चुके थे। देश भक्ति अमिट थी किन्तु धर्म की रक्षा के भाव लुप्त हो चुके थे। अहं ब्रह्मास्मि और शिवोहं इन दो वाक्यों का मिथ्याभिमान ब्राह्मणों को पंडितों को अकर्मण्य, कायर बनाकर क्लीव बना चुका था। देश का नेतृत्व करने वाले ब्राह्मण शुष्क वेदान्त के सागर में गोते लगा रहे थे, फिर क्षत्रिय भी तो उनके ही शिष्य थे देश के क्षत्रिय राजा असंघटित एवं असावधान थे। कोई चाणक्य के समान तेजस्वी, त्यागी धर्मवीर नेता उन राजाओं को एकत्रित कर हिन्दुओं की रक्षा करने वाला था ही नहीं। समस्त देश का पंडित वर्ग ''ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या'' (ब्रह्म ही सत्य है यह समस्त संसार मिथ्या है) इस दंभ के कुचक्र में पड़कर चौपट हो चुका था। ऐसे अवसर का लाभ महमूद को मिल गया.....।

(आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी द्वारा प्रकाशित ''पावन परिवार'' पाक्षिक अक्टूबर (प्रथम) 2007 का पृष्ठ 27)

कृपया आचार्य जी बतावें क्या वे अपने पिताजी से मत भिन्नता रखते हैं अथवा इस कटु सत्य का समर्थन करते हैं? मान्यवर आपके पिताजी के साथ श्री मुकुंद जी (आपके नानाजी) जो गुजरात के सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी थे वे भी अपनी युवावस्था में शारदापीठ के तत्कालीन शंकराचार्य श्री माधवतीर्थ के शास्त्रार्थ हेतु ललकार चुके थे। क्या वे त्रैतवाद का समर्थन व अद्वैतवाद का विरोध आजीवन गलत ही करते रहे? इसी उपरोक्त लेख में अन्यत्र महात्मा रामचन्द्र वीर जी लिखते है ''आर्यसमाज हिन्दुओं का प्रबल प्रहरी और संरक्षक है आर्यसमाज की निन्दा करना हिन्दु समाज के साथ द्रोह करना है।''

गौतम बुद्ध के बाद सैकड़ों वर्षो में ऐसा प्रथम बार ही देखने में आ रहा है कि करोड़ों जन किसी एक व्यक्ति को निर्विवाद रूप से समर्थन दे रहे हों। स्वामी रामदेव की कार्यशैली से किसी को असहमति हो सकती है जो मेरी भी है, परन्तु भारत स्वाभिमान की जो अलख वे जगा रहे हैं योग क्रांति का अद्भुत दृश्य उन्होंने दिखाया है वे बधाई व स्तुति के पात्र हैं, निन्दा आलोचना के नहीं। आचार्य जी आप सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास का आद्योपान्त स्वाध्याय कर अगर उस दिन चैनल की बहस में हिस्सा लेते तो निश्चय ही स्वर की आक्रामकता व प्रतिकार में कमी आ गई होती। जहाँ तक ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या की बात है संकेत रूप में कुछ चर्चा करते हैं–

कारणगुणपूर्वः कार्यगुणो दृष्टः–इस दार्शनिक सार्वभौमिक नियम के अनुसार कार्य में वही गुण होते है, जो उसके कारण में है। अत: यदि 'ब्रह्म सत्यं' जगत् का कारण रूप ब्रह्म सत्य है तो उसका कार्य रूप संसार मिथ्या कैसे हो सकता है, क्योंकि कारण का कार्य से

अनन्यत्व भी अद्वैतवादी मान रहे हैं। यदि जगत् ही मिथ्या है, तो स्वयं ब्रह्म ही मिथ्या हो जायेगा। यदि मिट्टी सत्य है तो घड़ा झूठ कैसे हो सकता है।

गौडपादाचार्य की एक उक्ति प्रायः प्रस्तुत की जाती है "आदावन्ते च यन्नास्ति वर्त्तमानेऽपि तत्तथा" अर्थात् जो आदि और अन्त में नहीं होता वह वर्तमान में भी नहीं होता है। अतः संसार उत्पत्ति से पहले न होने व अन्त में न रहने से वर्तमान काल में भी मिथ्या ही है। ये बात सामान्य तर्क से ही खंडित हो जाती है। हम अपने जन्म से पूर्व नहीं थे और मृत्यु के बाद नहीं रहेंगे तो क्या अपने आप का अस्तित्व वर्तमान में भी नहीं माने....? संसार का सामाजिक व्यवहार ही कठिन हो जायेगा।

अद्वैतवाले एक तर्क और देते हैं:–"सर्व खल्विदं ब्रह्म–ब्रह्म ही एक मात्र सत्ता है, उससे भिन्न जो कुछ दिखता है, वह सब मिथ्या है, वास्तविक नहीं। इस भ्रांति का कारण अविद्या या अज्ञान है, जैसे अन्धेरे में रस्सी को सॉप देख लेते है और प्रकाश आने पर साँप को लोप हो जाता है, इसी प्रकार ज्ञान होने पर जगत् दिखना बन्द हो जाता है, केवल ब्रह्म रह जाता है।" कभी न कभी, कहीं न कहीं देखने वाले ने वास्तविक साँप को देखा होगा तभी उसे भ्रान्ति होती है। इसी प्रकार जब हम जगत् को मिथ्या कह रहे हैं, तो कही न कहीं सत्य जगत् की अपेक्षा से कह रहे हैं, जब ब्रह्म के अतिरिक्त कोई सत्य ही नहीं है तो क्या स्वयं ब्रह्म को अपने आप में जगत् की भ्रांति हो रही है। मान्यवर, भ्रम तो अल्पज्ञ जीव को हो सकता है, सर्वव्यापक सर्वज्ञ ब्रह्म को नहीं, ऐसा कहना परमेश्वर का अपमान ही है। विस्तार भय से इस विषय को हम छोड़ रहे हैं। रामदेव जी ने यही तो कहा था कि मैं ब्रह्म और जगत् दोनो को सत्य मानता हूँ, मिथ्या नहीं, इसमें गलत क्या कह दिया? अगर संसार मिथ्या है तो क्या ये सभी गुरूजन मिथ्या संसार के गुरू, मिथ्या गुरू नही हो जायेंगे?.....विचार कीजिये।

हे आचार्य प्रवर धर्मेन्द्र जी! आप के नाना गुजरात के नवसारी के ऐसे आर्य सैनिक थे कि हर वैदिक धर्मी का मस्तक गर्व से तन जाता है, जब उनके संघर्षशील व्यक्तित्व के बारे में पढ़ते हैं। उन्होंने अपने सामाजिक वहिष्कार की परवाह न करते हुए अपनी नानी जी का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से तो करवाया ही और मृतक श्राद्ध तथा प्रेत भोजन न होने दिया। एक बाल विधवा से विवाह कर आदर्श उपस्थित किया। अपने चिरंजीव की मृत्यु का समाचार सुनकर भी एक बालविधवा के पुनर्विवाह में गये जिससे समाज में फैली कुरीति व रूढ़ि कर प्रबल खंडन हो सके। आपके नाना जी ने अपनी चारों संतानों को गुरुकुलों में पढ़ाकर अपने सम्बन्धियों, मित्रों के सामने मार्ग दर्शक की भूमिका निभाई थी। आपकी पूज्य माता जी गुरुकुल देहरादून की स्नातिका रही हैं। क्या हम आर्यजन वेदों के अनुयायी एक महानायक की दिव्य सन्तान से इतनी आशा कर सकते हैं कि वह "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति में हमारा तन मन धन से साथ देगी। हन्त! साथ न दे कम से कम अनर्गल पूर्वनिर्णीत मुद्दो को उठाकर अप्रत्याशित विरोध तो न करें। अन्य सम्प्रदायी, मजहबी लोग पूरे विश्व में एक साथ एकजूट होकर भारत को अन्दर बाहर से जबकि नष्ट करने का यत्न कर रहे हों तब हर धर्माचार्य को सतर्क रहना होगा।

पहले ही चलना मुश्किल था अंधियारे में।
तुमने और घुमाव ला दिए गलियारे में।।

अद्वैतवाद के समर्थक मित्र अगर शंकराचार्य जी की मान्यताओं को लेकर शास्त्रार्थ करना चाहें तो आर्य समाज इसके लिए सदैव तैयार है।

सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा, यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥

(मुण्डकोपनिषद 3/1/6)

भावार्थ–सत्य ही जीतता है असत्य नहीं, सत्य से ही देवयान मार्ग विस्तृत होता है,

(सदाचारी विद्वानों का मार्ग प्राप्त होता है) जिससे कि पूर्ण अभिलाषा वाले ऋषि लोग उस पद को प्राप्त करते है जहाँ कि सत्य का परम भण्डार है।

–अ० वैदिक प्रवक्ता, हौशंगावाद (म०प्र०)

–: अनमोल वचन :–

कामना सागर की भाँति अतृप्त है, ज्यों-ज्यों हम उसकी आवश्यकता पूरी करते हैं त्यों-त्यों उसका कोलाहल बढ़ता है। **–स्वामी विवेकानन्द**

धन की प्यास कभी नहीं बुझती, उसकी ओर से मुँह मोड़ लेना ही परम सुख है। **–वेदव्यास**

समाचार दर्शन

आर्यसमाज, कटनी :–आर्यसमाज करनी एवं परिचालन विभाग रेल्वे साउथ के संयुक्त तत्वाधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मदिवस सम्पन्न हुआ। शहर के कई गणमान्य व्यक्ति एवं क्षेत्र के विधायक श्री गिरिराज किशोर जी पोद्दार ने सपत्नीक यज्ञ में सम्मिलित होकर सर्व कल्याण हेतु आहुतियां प्रदान कीं। वैदिक प्रवचन में महर्षि पाणिनी कन्यामहाविद्यालय वाराणसी से पधारी नन्दिता शास्त्री ने संस्कारों पर बल दिया कि मनुष्य संस्कारों से बनता है। उनके साथ आई वेदपाठी ब्रह्मचारिणी ने '' डूब गया संस्कृति का बेड़ा तो फिर भारत क्या होगा'' गीत प्रस्तुत कर श्रोताओं का मन मोह लिया। बिजनौर से पधारे भजनोपदेशक श्री योगेशदत्त जी ने भजनों के मध्यम से ईश्वर के विषय में बताया कि वेद उपनिषद एवं दर्शन सभी एकेश्वरवाद का समर्थन करते हैं।

आर्यसमाज मुम्बई (मुलुण्ड शाखा) :–जवाहर नेहरू रोड, आर्यसमाज चौक, मुलुण्ड (प0) मुम्बई के तत्वावधान में 12 फरवरी को महर्षि दयानंद बोधोत्सव समारोह सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता आर्यप्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह ने की। प्रमुख वक्ता आचार्य वागीश ने (गुरुकुल एटा से) प्रवचनों में महर्षि के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संयोजन देवदत्त शर्मा थे।

आर्यसमाज नवादा (बिहार):–वार्षिक चुनाव श्री हरि लाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

श्री कृष्ण दयाल, प्रजापति–प्रधान, सुरेश कुमार आर्य–उप प्रधान, राजेश कुमार आर्य–मंत्री, अनिल कुमार आर्य–उप मंत्री, अनुभा गुप्ता–कोषाध्यक्ष, मणि प्रसाद आर्य–अंकेक्षक, राजेश कुमार आर्य–पुस्तकालय अध्यक्ष

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव:–महर्षि दयानन्द सरस्वती योग संस्थान आर्यसमाज महरौली का द्वितीय वार्षिकोत्सव से मनाया गया। पं0 पुरुषोत्तम नारायण दुबे द्वारा वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। मुख्य यजमान डॉ0 रामकृपाल सिंह व उनकी धर्मपत्नि श्रीमती विद्यादेवी सिंह रहीं। श्रीदुबे आर्य ने कहा कि यज्ञ के द्वारा समस्त रोगों का एवं दूषित पर्यावरण का निदान किया जा सकता हैं। यज्ञोपरान्त भजनों के प्रश्चात बच्चों ने सूर्य नमस्कार, शीर्षासन, मसूरासन, वद्यपदमासन आदि का 'मनमोहक' कार्यक्रम प्रस्तुत किये और नन्हे मुन्हे बच्चों में अपना जौहर दिखाया।

गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ का वार्षिक उत्सव सम्पन्न :–भोलाझाल गुरुकुल नवप्रभाव वैदिक विद्यापीठ नआँपालि, कनसिंहा, जिला बरगढ़, उड़ीसा विगत सात वर्षों से पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद से पश्चिम उड़ीसा में वैदिक ज्ञान विज्ञान तथा संस्कृति सभयता के प्रसार में संलग्न हैं। पू० स्वामी मुनीश्वरानन्द जी के सहयोग से गुरुकुल में इस समय साठ ब्रह्मचारी नि:शुल्क भोजन वस्त्रादि सुविधा सहित अध्ययन कर रहे हैं। गुरुकुल का वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ हुआ। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आचार्य बृहस्पति जी एवं स्वामी अनन्त भारती जी के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ। योगशिविर श्री हरिभाई एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा तथा वेद सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलन में स्वामी अनन्त भाती सुरेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, डॉ0 सोमदेव शतांशु, आचार्य बृहस्पति, श्री भगवान, श्री दयानन्द शर्मा आदि विद्वानों ने अपने विचार रखे। नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों को उपनयन संस्कार तथा ब्रह्मचारियों के भाषण, गीत आदि आकर्षक कार्यक्रम रहा।

आर्यसमाज जालना

आर्यसमाज जालना की वार्षिक साधारण सभा में आगामी तीन वर्ष के लिए सन 2009–2012 तक निर्वाचन सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मती से प्रधानपद पर पारसनन्द यादव तथा मंत्रीपद पर बद्रीप्रसाद सोनी चुने गए। कार्यकारी प्रधान संतोष आर्य, संयुक्तमंत्री भैय्यालाल अहीर, उपमंत्री सुरेश गंगासागरे, पुरोहित धनसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष मनिष नंद, कार्यकारिणी के सदस्य सर्वश्री दिलीप रोहरा नरेंद्र वलेचा, सुनिल खरे, सत्याप्रकाश आर्य, अमर जांगडे की नियुक्त की गयी। इसी प्रकार इस सभा में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा के लिए आर्य समाज जालना से चार पदाधिकारी नियुक्त किये गये। सर्वश्री संतोष आर्य, बद्रीप्रसाद सोनी, धनसिंह आर्य एवम् भैय्यालाल अहीर होगे।

वेद-विरोधियों का उत्तर प्रयास

आदरणीय महोदय,

राज्याश्रय के बल पर सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पाठ्यक्रम निर्धारण इत्यादि को अपने हितों के अनुरूप ढालतें रहना, ईश्वरीय ज्ञान वेदों से जनता को नितान्त अनभिज्ञ रखना अथवा वेदों के सम्बन्ध में भ्रान्तियों का अम्बार खड़ा करके इनके प्रति जन सामान्य में वितृष्णा का प्रसार करना तथा भाड़े के लेखकों से वेदों पर प्रहार कराना व इन लेखकों को विद्वानों के रूप में महिमामण्डित करना यूं तो कोई नई बात नहीं परन्तु आर्य समाज की स्थापन के उपरान्त से हमारे विचारकों मनीषियों ने वेदों केपक्ष में एक प्रबल बौद्धिक संघर्ष छेड़ा हुआ है। सरकारी पाठ्यक्रम के दूषणों के परिष्कारार्थ अनगिनत छोटे बड़े ग्रन्थ लिखे गए। कुछ ग्रन्थ आज भी छप रहे हैं जबकि इनसे अधिक का प्रकाशन नहीं हो रहा है और वे कदाचित ही कहीं हों।

हमारे प्रात: स्मरणीय विद्वानों पर वह सुविधाएं नहीं थी जो आज हैं। अपना पक्ष प्रचारित-प्रसारित करने के लिए वैंदिक धर्मियों पर टेलीविजन, वेबसाइट-इण्टरनेट जैसी सुविधाएं नहीं थी–असत्य की पोल खोलने के लिए सूचना का अधिकार नहीं था और जनता को भ्रमित करने के विरूद्ध माननीय न्यायालयों के समक्ष जनहित याचिकाएं दायर करने के अवसर नहीं थे।

आज की परिस्थितियों का लाभ उठाने के दृष्टिकोण से मैंने लगभग त्रैमास पूर्व कक्षा 6 की इतिहास की पुस्तक के विषय में एन0सी0ई0आर0टी0 से कुछ सूचनाएं मांगी थी। इस पर अनुसरण कार्यवाही करने से पहले मुझे अपने गले के कैंसर कीचिकित्सा कराने में व्यस्त हो जाना पड़ा। इसी सप्ताह घर वापस आकर डाक में दो पत्र देखें हैं, जिनमें सूचना न दे पाने की विवशता और इसके लिए बहाने मात्र है। इससे पहले कि इस वैधानिक संघर्ष को मैं आगे बढाऊं मेरी सदिच्छा व विनम्र याचना है कि मेरे संलग्न पत्र को प्रकाशित कर देने की अनुकम्पा करें। (सुबोध सागर जौहरी)

मंत्री, आर्य उप प्रतिनिधि सभा, बदायूँ

E-mail : s.s.jogari @yahoo-in

हिन्दू युवा विचार करें:–

- शिक्षा के क्षेत्र में अनेक अल्पसंख्यक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय हैं जहां न्यूनतम शुल्क लिया जाता है।
- क्या आपके लिये ऐसी कोई व्यवस्था है?
- मुस्लिमों के लिये रोजगार के अवसर हिन्दू युवाओं से अधिक हैं।
- क्या आपके लिये शासकीय स्तर पर रोजगार की गारन्टी है?
- व्यवसाय शुरु करने के लिये मुस्लिम युवक को अनुदान सहित ऋण मिलता है।
- क्या आपके लिये कोई ऐसी व्यवस्था है?
- मुस्लिम आरक्षण से हिन्दू युवाओं की नौकरी सहभागिता कम हो जायेगी।
- क्या विकल्प के रूप में सरकार कुछ दे रही है।

सावधान! हिन्दू युवा

आपका शोषण हो रहा है

यह राष्ट्र आपका है, पर आप

द्वितीय श्रेणी के नागरिक हो गये हो।

बचाओ अपने देश को

हम हैं आपके साथ

अखिल भारत हिन्दू महासभा

नई दिल्ली-१

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। जो आजीवन आपकी होगी। इस समय व्यय लगभग चार लाख रुपए होगा। एक कुटिया १५ × १२ फुट की, पीछे शौचालय और स्नानागर ५ × ७ फुट, रसोई ७ × ७ फुट की, आगे बरामदा १२ × ७ फुट। प्रत्येक कुटिया अपने आप में पूर्ण इकाई है। वेदमंदिर में यज्ञशाला, सत्संग भवन, कार्यालय आदि के निर्माण हेतु अधिक से अधिक धनराशि १००/-, ५००/-, १०००/- रुपये अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वयं तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके धनराशि ''दयानन्द संस्थान'' के नाम भेजें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

२. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

३. परमात्मा की अमरवाणी ''चारों वेदों का हिन्दीभाष्य'' मूल्य २०००/-रु.। अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में वेदभाष्य पहुंचायें। डाक से मंगाने पर १८०/-रुपये अधिक लगेंगे।

४. बढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३६०० रु.। डाक से मंगाने पर २००/-रु. अधिक लगेंगे।

५. विगत चवालीस वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक ''जनज्ञान'' के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। वार्षिक शुल्क ११०/- रुपये है। पन्द्रह सौ रुपये में जीवन भर जनज्ञान भेजा जायेगा, साथ ही अभी दो सौ रुपये का वैदिक साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

६. प्रतिमास ''जनज्ञान'' की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ १००/- रुपये में मंगाकर बांटें तथा ''जनज्ञान'' मासिक में विज्ञापन देकर हमारे ''राष्ट्र जागृति अभियान'' में सहयोग प्रदान करें।

७. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिनकी सूची ''जनज्ञान मासिक'' में प्रकाशित होती रहती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

अध्यक्ष--दयानन्द संस्थान

ओ३म्

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह : एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग तीन लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग १५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था। इस गौशाला में उत्पादित गौ दुग्ध का वितरण आश्रमवासियों तथा समय-समय पर आने और ठहरने वाले अतिथि गण में किया जाता है।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा के अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। जो भी सहयोगी जन चारा-भूसा प्रदान करेंगे उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में ठोस योगदान सिद्ध होगा। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है। यदि आप राजधानी से दूरस्थ स्थान के निवासी हैं तो गौओं हेतु अपने योगदान की राशि "**दयानन्द संस्थान**" के नाम ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को '**जनज्ञान**' मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष-दयानन्द संस्थान

२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

चलभाष : ०९८१०२५७२५४

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	2000 रु.
2.	सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	100 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	100 रु.
5.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	15 रु.
6.	धरती का स्वर्ग	15 रु.
7.	सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र)	60 रु.
8.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	15 रु.
9.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	15 रु.
10.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	5 रु.
11.	वैदिक सम्पत्ति	200 रु.
12.	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	15 रु.
13.	योग और ब्रह्मचर्य	15 रु.
14.	गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह)	20 रु.
15.	Inside the Congress	60 रु.
16.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
17.	History of the assassins	60 रु.
18.	Concept of God	60 रु.
19.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	60 रु.
20.	Light of Truth	250 रु.
21.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	15 रु.
22.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	60 रु.
23.	संक्षिप्त महाभारत	80 रु.
24.	संक्षिप्त रामायण	20 रु.
25.	ऋग्वेद शतकम	10 रु.
26.	चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
27.	सत्संग पद्धति	10 रु.
28.	वैदिक सान्ध्य गीत	15 रु.
29.	A Short Life Story of Swami Dayanand	30 रु.
30.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	4 रु.
31.	बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार	300 रु.
32.	ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में)	150 रु.
33.	अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि	200 रु.
34.	अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि	100 रु.
35.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	10.00 रु.
36.	वीर सावरकर—संक्षिप्त जीवन परिचय	5.00 रु.
37.	भाई परमानन्द (जीवन परिचय)	30.00 रु.
38.	बाल सत्यार्थ प्रकाश	60.00 रु.
39.	मां गायत्री	2.00 रु.
40.	स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा	2.00 रु.
41.	विश्व को वेद का संदेश	3.00 रु.
42.	विश्व को आर्यसमाज का संदेश	3.00 रु.
43.	Great Gayatri	2.00 रु.

१०० रु. से अधिक धार्मिक साहित्य पर १५ प्रतिशत ३०० रु. से अधिक लेने पर २० प्रतिशत तथा ५०० रु. से अधिक लेने पर २५ प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	3.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	2.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? —वेदभिक्षु:	2.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं—सावरकर	2.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? —राकेश रानी	2.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ —जहीर नियाजी	2.00 रु.
7.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ	2.00 रु.
8.	इस्लाम—एक परिचय	2.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला — वेदभिक्षु:	2.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	2.00 रु.
11.	बाईबिल को चुनौती	2.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	2.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	2.00 रु.
14.	बाइबल कसौटी पर	4.00 रु.
15.	Bible in the Balence	3.00 रु.
16.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	2.00 रु.
17.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	2.00 रु.
18.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	2.00 रु.
19.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	2.00 रु.
20.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की १००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और ५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक—दयानन्द संस्थान

२२८६-आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-५

पूज्या माँ पंडिता राकेश रानी के अमृत महोत्सव (75वां जन्म दिवस) के उपलक्ष्य में तीन अनमोल रत्नों की भेंट

मूल्य- मात्र 50 रू.

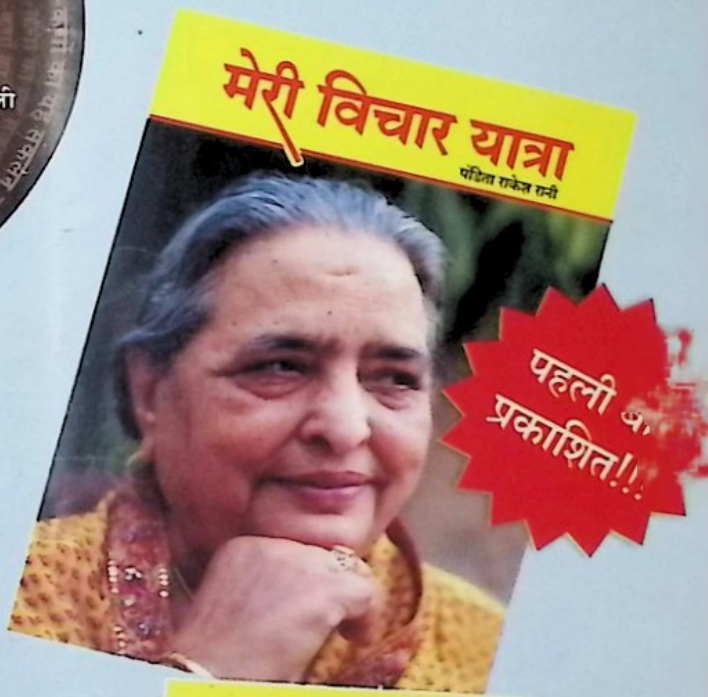

मूल्य- मात्र 40 रू.

मूल्य- मात्र 10 रू.

धर्म, अध्यात्म, राजनीति, समाज, संस्कृति, दर्शन, राष्ट्र रक्षा, हिन्दुत्व, आर्य समाज आदि विषयों पर सुप्रसिद्ध आर्यनेत्री, दयानंद संस्थान की अध्यक्षा, आर्यजगत की पहली पत्रकार व 'जन ज्ञान' की प्रकाशक संपादिका, वैदिक-आर्ष साहित्य की सबसे बडी प्रकाशक की अपनी लेखनी से...

जनज्ञान (मासिक)
२२८६, आर्यसमाज मार्ग
करौलबाग, नई दिल्ली-५

फाल्गुन-चैत्र
सम्वत्-२०६७
मार्च, सन्-२०१०

Delhi Postal No. DL (C)-01/1114/09-011
R.N. 10719/65
Posted at N.D. PSO on
Date 5&6 of March 2010

Serving SINCE 1921

फरन्टीयर ®

The ✓ Taste of Leadership

HANDMADE EGGLESS BISCUITS

बाँटिए खुशियाँ फरन्टीयर के संग

खुशियाँ आपकी, साथ फरन्टीयर का

काजू-पिस्ता बिस्कुट | अजवाइन कुकीज़ | चॉको-चिप कुकीज़ | मिक्स्ड बिस्कुट

फरन्टीयर के क्वालिटी प्रोडक्ट्स केवल फरन्टीयर शॉपिंग ज़ोन्स पर ही उपलब्ध है:-

पूर्वी दिल्ली : ◆कृष्णा नगर ◆लक्ष्मी नगर V3S Mall पश्चिमी दिल्ली ◆नजफगढ़ ◆नारायणा विहार ◆पश्चिम विहार (ज्वाला हेड़ी मार्किट) ◆पश्चिम विहार (A-6/1), ◆पंजाबी बाग एक्सटेंशन ◆राजौरी गार्डन ◆टैगोर गार्डन ◆विकास पुरी ◆वैस्ट पटेल नगर ◆द्वारका ◆रमेश नगर ◆ओल्ड राजेन्द्र नगर (शंकर रोड) उत्तरी दिल्ली ◆अशोक विहार ◆कमला नगर ◆किंग्ज़वे कैम्प ◆मॉडल टाउन-III ◆रोहिणी (Sector-7) ◆शालीमार बाग ◆रोहिणी: (Sector-6) ◆प्रशांत विहार ◆बजीरपुर दक्षिणी दिल्ली ◆मालवीय नगर ◆सरिता विहार ◆लाजपत नगर-II सेन्ट्रल दिल्ली ◆करोल बाग ◆पहाड़ गंज ◆सदर बाज़ार हरियाणा : ◆बहादुरगढ़ ◆करनाल ◆फरीदाबाद : पार्श्वनाथ सिटी मॉल (Sector-12)

www.frontierbiscuit.com • 'FRONTIER' is a Registered Trademark of FRONTIER BISCUIT FACTORY PVT. LTD.